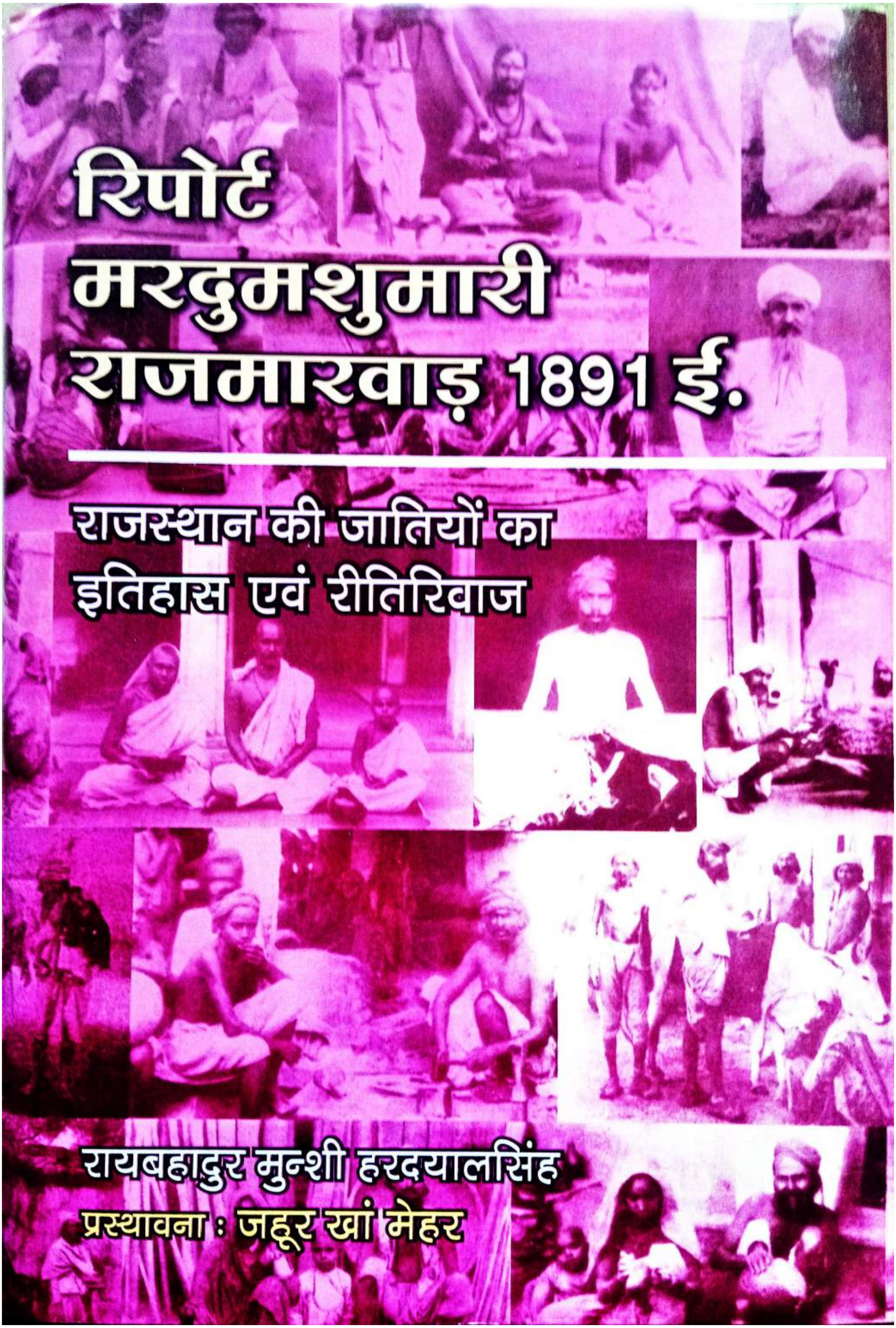


रिपोर्ट मरदुमशुमारी राजमारवाड़ 1891 ई.

राजस्थान की जातियों का इतिहास एवं रीतिरिवाज

रायबहादुर मुन्शी हरदयालसिंह

प्रस्थावना : जहूर खां मेहर

रिपोर्ट

मरदुमशुमारी राजमारवाड़

सन् १८९१

MARWAR CENSUS REPORT 1891

(राजस्थान की जातियों का इतिहास एवं रीति रिवाज)

राय बहादुर मुंशी हरदयाल सिंह

प्रस्तावना

प्रो. जहूरखां मेहर

पूर्व ऐसोसिएट प्रोफेसर

इतिहास विभाग

जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश शोध केन्द्र, जोधपुर

○ प्रकाशक :

महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश शोध केन्द्र

मेहरानगढ़ फोर्ट, जोधपुर 0291–2541447

○ प्रकाशक

राजस्थानी ग्रन्थागार

प्रकाशक एवं वितरक

प्रथम माला, गणेश मन्दिर के सामने
सोजती गेट, जोधपुर (राजस्थान)
0291–2657531, 2623933 (O)
E-mail : info@rgbooks.net
Website : www.rgbooks.net

○ ISBN : 978-81-86103-32-1

○ प्रथम संस्करण सन् : 1894
द्वितीय संस्करण सन् : 1997
तृतीय संस्करण सन् : 2010
चतुर्थ संस्करण सन् 2013
प्रस्तुत संस्करण सन् 2019

○ मूल्य : छः सौ रुपये मात्र (₹ 600.00)

राजस्थानी ग्रन्थागार के लिए टाइप सेटिंग इकरा आदिल कम्प्यूटर्स एवं मुद्रित भारत प्रिण्टर्स (प्रेस), जोधपुर

Mardumshumari Raj Marwar - 1891

Published by : **Maharaja Mansingh Pustak Prakash, Mehrangarh, Jodhpur**
Sole Distributor : **Rajasthani Granthagar, Sojati Gate,** Jodhpur
Edition : 2019 ❖ Price ₹ 600.00

उम्मेद भवन पैलेस
जोधपुर

संदेश

आज भी दस बरस पछै जनगणना रौ काम सरकार करवावे, पण उणमें केवल स्त्री-पुरुस नै टाबरां रा आँकड़ा हीज लीखीजै। आज री मरदुमशुमारी या सेंसस आँकड़ां री ईज है।

सन् 1891 में मारवाड़ री मरदुमशुमारी खाली मिनखां री गिणती ईज नीं ही बल्कि सब जातियों रो पूरो इतिहास हो। इणमें हर जाति या वंश री उत्पत्ति, जाति री खांपा, रोजगार पेशा, काम धंधा, रीति-रिवाज़, पैरांण इण सब बातां ने भेली कर हर जाति रा आँकड़ा भी दियोड़ा है। अेड़ौ काम सायद ही आजादी बाद कोई सरकार करवायौ व्हैला।

हर जाति रो अलग-अलग इतिहास लिखणो हरेक रे बस री बात नी है। पण मारवाड़ सरकार ओ काम घणी सावचेती अर मेहणत सूं करवायो जको आज हर आदमी रे वास्तै बौत मायनो राखै है। इण कारण इणरी माँग दिनो-दिन बढ़ती जावे।

पैलो संस्करण सन् 1894 में छपियो ने सन् 1997 में दूजौ संस्करण महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश ने जगदीशसिंह शोध संस्थान मिळ ने प्रकासित करायो। पण इण वगत भी इण इतिहास री सब पोथियाँ बिक चुकी या बट चुकी है अर पाठकां री माँग बराबर हो रैयी है, इण वास्ते महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश शोध केन्द्र तीजी वार फेर इणने प्रकाशित करायने पाठकां री इच्छा पूरी करे है।

मैं आसा करूँ के शोध जगत ने पाठकगण इण काम सूं घणा खुस होवेला।

महाराजा गजसिंह
मारवाड़-जोधपुर

महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश
शोध केन्द्र जोधपुर

निदेशकीय

सन् 1891 में मारवाड़ की तत्कालीन सरकार ने अपनी जनता की गणना करवाई जिसका विवरण 'रिपोर्ट मरदुमशुमारी राज मारवाड़' के शीर्षक से सन् 1894 में प्रकाशित हुआ। इसके शीर्षक के नीचे ही इस बात का उल्लेख है कि इसमें 'मारवाड़ की कौमों का इतिहास और रीति-रस्म का जरूरी-जरूरी हाल लिखा गया है।'' इससे स्पष्ट है कि यह केवल जनगणना अर्थात् स्त्री-पुरुष व बच्चों की संख्याओं का स्टेटमेंट नहीं जैसी कि आजादी के बाद हर दसवें वर्ष में हमारी आदर्श सरकारें करवाती रही है।

वस्तुत: यह रिपोर्ट मात्र रिपोर्ट न होकर एक इतिहास ग्रंथ है जो तत्कालीन समाज का हूबहू चित्र उपस्थित करता है। मारवाड़ के समाज में उस समय कितनी जातियें थीं? उनकी उत्पत्ति कैसे हुई? उनका रहन-सहन कैसा है? उनका खान-पान कैसा है? उनका व्यवसाय क्या है? उनकी कितनी शाखायें (खाँपें-गौत्र) है। उनकी संस्कृति एवं रीति-रिवाज़ क्या-क्या है? इत्यादि सभी बातों का उल्लेख इसमें है तो इस ग्रंथ के जरिये वह अपने उद्गम व अपनी जाति के मौलिक स्वरूप को देख सकता है। इसलिये इस ग्रंथ का महत्त्व आद्योपान्त बना हुआ है।

इसमें केवल जाति समुदाय का ही विवरण नहीं है वरन् तत्कालीन साधु-समुदाय व सम्प्रदायों का विवरण भी संकलित है।

आजकल तो जाति एवं जातिवाद जैसे शब्दों को समाज के लिये अहितकर मानते हुए इनका प्रयोग करना भी हमारी आदर्श राजनीति में निषिद्ध माना जाता है जबकि चुनावों के समय वोटों के समस्त समीकरण जातिगत वोटों को ध्यान में रखकर ही किये जाते हैं।

अंग्रेजों ने इस देश को अपनी गिरफ्त से मुक्त करते समय इस देश के कई खण्ड किये। आजादी के बाद हमारे समाज को दो प्रमुख खण्डों में विभक्त कर दिया गया (1) बहु संख्यक (2) अल्प संख्यक। उसके बाद आरक्षण नीति के तहत इस तथाकथित बहुसंख्यक समाज के अनेक खण्ड कर दिये गये जो पूर्णतया जातियों के आधार पर ही

हैं। फिर भी हम आज जातिगत भावना से ऊपर उठकर जाति विहीन समग्र समाज की परिकल्पना को साकार करना चाहते हैं। यह सोच पाश्चात्य संस्कृति की देन है।

लेकिन 1891 की तत्कालीन मारवाड़ सरकार ने (यद्यपि उस समय अंग्रेजों का प्रभुत्व था) अपने समाज के मौलिक जीवन शैली की अनदेखी करने की कतई कोशिश नहीं की तथा समाज के स्वरूप का सही-सही चित्रण कर हर जाति के हर व्यक्ति को अपनी जड़ तक पहुँचने का एक आधार दिया।

इसके विवरण में जो बातें हैं, उनका विरोध कभी नहीं हुआ इसलिये इस ग्रंथ की उपादेयता निरन्तर बनी रही है तथा एक के बाद एक इसके संस्करण प्रकाशित हो रहे हैं जिसका आधार पाठकों की बढ़ती माँग है।

प्रथम संस्करण का प्रकाशन सन् 1894 में तत्कालीन मारवाड़ सरकार ने करवाया। तत्पश्चात् दूसरे संस्करण का प्रकाशन सन् 1997 में महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश तथा जगदीशसिंह शोध संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। इस ग्रंथ की माँग आज भी बनी हुई है। अतः महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश शोध केन्द्र व मेहरानगढ़ म्यूजियम ट्रस्ट द्वारा इसके तीसरे संस्करण के प्रकाशन का निर्णय महाराजा श्री गजसिंहजी साहब (द्वितीय) के हुकम से लिया है। इसमें शोधार्थी एवं पाठकों की भावना को ही प्राथमिकता दी गई है।

महेन्द्र सिंह

(डॉ. कुं. महेन्द्रसिंह नगर)
निदेशक

प्रस्तावना

प्राचीन काल से ही भारतीय समाज में वर्ण व्यवस्था रही है। वैदिक आर्य रंग के आधार पर आर्य और दास दो श्रेणियों में विभक्त थे। कुछ समय पश्चात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र चारों वर्णों का प्रादुर्भाव हो गया। वैदिक समाज का यह वर्गीकरण कोई नई बात नहीं थी। ईरान, रोम और जापान आदि में भी पुरोहित, योद्धा, कृषक तथा कारीगर चार वर्ग थे। यूनान के विश्व प्रसिद्ध दार्शनिक प्लेटो ने अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ रिपब्लिक (Republic) में प्रवृत्तियों तथा व्यवसायों के आधार पर समाज को चार भागों में बांटा है। ये चार वर्ग हैं–1. मुखिया या संरक्षक (Guardians), 2. दार्शनिक (Philosophers), 3. सैनिक (Soldiers) और 4. श्रमिक कारीगर (Artisans)।

प्लेटो का कहना है कि सामाजिक संगठन के लिए प्रवृत्ति पर आधारित वर्ग विभाजन अथवा श्रम-विभाजन अत्यन्त आवश्यक है। प्लेटो के समान इंग्लैण्ड के प्रसिद्ध विचारक एच.जी. वैल्स (H.G. Wells) ने Modern Utopia नामक ग्रंथ में मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों के आधार पर मानव समाज को चार भागों में बांटा है–1. कवित्वमय (The Poetic), 2. क्रियाशील (The Kinetic), 3. सुस्त (The Dull), 4. निम्न (The Base)।

वैल्स का कहना है कि समाज के इस विभाजन से समाज की शक्ति अधिक से अधिक बढ़ेगी और उसका उत्तम विकास होगा। किंग्सले डेविस तथा मूर का मत है कि सामाजिक वर्ग विभिन्न प्रकार के सामाजिक कार्यों को सुचारु रूप से चलाने के लिए उत्पन्न होते हैं। वार्ड का कहना है कि कोई बड़ा समाज ऐसा नहीं है जो सर्वथा वर्गहीन हो। मैकाइवर तथा कूले ने विभिन्न समाजों का सूक्ष्म अध्ययन करके यह परिणाम निकाला है कि सभी प्राचीन तथा अर्वाचीन समाजों में सामाजिक वर्ग मिलते हैं।

इसी प्रकार भारतीय विचारकों ने समाज को चार वर्णों में विभाजित किया यथा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। वर्ण व्यवस्था को समझने से पूर्व वर्ण का अर्थ समझ

लेना आवश्यक है।

ऋग्वेद में कुछ स्थलों पर (1।73।7, 2।3।5, 9।97।15) वर्ण का प्रयोग 'रंग' के लिए भी किया गया है। श्री पाण्डुरंग वामन काणे के अनुसार आरम्भ में वर्ण शब्द का प्रयोग गौर वर्ण आर्यों तथा कृष्ण वर्ण दासों या दस्युओं के लिए होता है। बाद में वर्ण शब्द का प्रयोग ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदि चार सामाजिक वर्गों के लिए किया जाने लगा। फ्रेंच विद्वान सेनार्ट ने भी इसी मत का प्रतिपादन किया है। निरुक्त में श्री यास्काचार्य ने वर्ण शब्द की उत्पत्ति 'वरण' अथवा चुनाव करने का अर्थ देने वाली 'वृ' (वृत्त-वरणे) धातु से मानी है। इस प्रकार वर्ण वह है जिसको व्यक्ति अपने कर्म और स्वभाव के अनुसार चुनता है।

प्लेटो तथा वैल्स आदि के वर्ग विभाजन के समान ही भारत की चतुर्वर्ण व्यवस्था का मूल उद्देश्य भी श्रम-विभाजन (Division of Labour) था। भारतीय वर्ण व्यवस्था में श्रम-विभाजन को डॉ. भगवादनदास ने इस प्रकार बांटा है–1. विद्योपजीवी वर्ग, 2. शासक वर्ग, 3. व्यापारोपजीवी वर्ग, 4. शारीरिक श्रमोपजीवी वर्ग।

ये क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र हैं। इस प्रकार ब्राह्मणो का कार्य विद्या-अध्ययन और अध्यापन, यजन, याजन तथा अन्य धार्मिक कार्यों को सुचारु रूप से करना था। क्षत्रियों का कार्य राज्य शासन, रक्षा तथा संचालन था। वैश्य खेती करते, पशु पालते और व्यापार करते थे। शूद्रों का कार्य समाज की सेवा करना था। समाज का यह वर्ग विभाजन भारत की ही नहीं बल्कि संसार के सभी व्यवस्थित समाजों की विशेषता है। श्रम-विभाजन का सिद्धांत सामाजिक संगठन का एक मौलिक सिद्धान्त है। इसके अनुसार समाज में सब कामों के सुचारु रूप से चलने के लिए यह आवश्यक है कि वह स्वाभाविक प्रवृत्तियों के अनुसार कुछ विशेष भागों में बंटा हुआ हो।

वर्ण व्यवस्था के विषय में श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है–'चातुर्वर्ण्य मया सृष्टम् गुणकर्मविभागशः।' अर्थात् गुण कर्म के विभाग से चारों वर्ण की सृष्टि मैंने की है। इस प्रकार वर्ण व्यवस्था में कार्य का विभाजनगुणों और मानसिक प्रवृत्तियों के आधार पर किया गया है। भारतीयों ने साधारणतः मनुष्यों में चार प्रकार की प्रवृत्तियां मानी हैं–1. सात्विक, 2. सात्विक राजसिक, 3. राजसिक तामसिक, 4. तामसिक।

वर्ण व्यवस्था का विभाजन इन्हीं चार प्रवृत्तियों के आधार पर हुआ है। ब्राह्मण सात्विक, क्षत्रिय सात्विक-राजसिक, वैश्य राजसिक-तामसिक और शूद्र तामसिक स्वभाव वाले को कहते थे। अतः प्रारम्भ में वर्ण व्यवस्था में जन्म के स्थान पर गुण और कर्म को ही अधिक महत्व दिया जाता था। अथर्ववेद में कहा गया है–'न दासो

नार्यो महहत्वा व्रतं मियाय' अर्थात् मैं किसी को जन्म से दास या आर्य नहीं समझता, मैं उसका मूल्यांकन उसके गुणों से करता हूं। हिन्दू धर्मशास्त्रों में कहा गया है, 'जन्मना जायते शूद्र: संस्काराट् द्विज उच्यते' अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति जन्म से शूद्र होता है, उपनयनादि संस्कारों के बाद ही वह द्विज बनता है। गुण कर्म मूलक होने का अर्थ यह नहीं है कि वर्ण व्यवस्था के सिद्धांत में आनुवंशिकता (Heredity) का प्रभाव माना ही नहीं गया है। वास्तव में इस सिद्धान्त में आनुवंशिकता को परिवेश का ही एक भाग मान लिया गया है। साधारणतया सन्तान से अपने माता-पिता का ही वर्ण ग्रहण करने की आशा की जाती है। गुण कर्म का प्रश्न तो तभी उठता है जबकि आनुवंशिकता और प्रवृत्तियों में भेद दिखलाई पड़ता है।

भारत में वर्ण व्यवस्था की उत्पत्ति के सम्बन्ध में कई सिद्धान्त प्रचलित थे। जैसे—विराट पुरुष के अंगों से वर्णों की उत्पत्ति। ऋग्वेद के पुरुष सूक्त के अनुसार विराट पुरुष के मुख से ब्राह्मण, बाहुओं से क्षत्रिय, जांघों से वैश्य और चरणों से शूद्रों का जन्म हुआ। चारों वर्णों की उत्पत्ति विराट पुरुष के उन अगों से बताई गई है जो उनके कर्म और गुण के अनुरूप है। यह संभावना भी व्यक्त की जा सकती है कि ऐसा इसलिए किया गया है कि चारों वर्ण वास्तव में एक ही शरीर के अंग हैं उनमें कोई विभेद नहीं है। कुछ विद्वान कार्य विभाजन के आधार पर वर्ण की उत्पत्ति मानते हैं। ज्यों-ज्यों आर्यों का अनार्यों से संघर्ष हुआ, आर्यों को एक ऐसे वर्ग की आवश्यकता हुई जो युद्धों से दूर रहकर आर्य धर्म और संस्कृति की रक्षा कर सके और समाज के कल्याण के लिए देवताओं को प्रसन्न कर सके। इस आवश्यकता हेतु ब्राह्मण वर्ग तथा अन्यों से निरन्तर युद्ध करने के लिए युद्ध विद्या में निपुण अपने शस्त्रों से समाज की रक्षा करने वाले क्षत्रिय वर्ग का जन्म हुआ। इन दोनों के अतिरिक्त समाज की आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कृषि, पशुपालन, वाणिज्य आदि के लिए एक वर्ण वैश्य निर्धारित हुआ। इसी प्रकार सेवा कार्यों के लिए चौथा वर्ण निर्धारित हुआ। यहां यह कहना अनुचित नहीं होगा कि कालान्तर में कार्य के आधार पर बनने वाली जातियों और वर्ण में अन्तर है। इनके शब्दार्थों से ज्ञात होता है कि ये एक दूसरे से पूर्णतया भिन्न है। जाति शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के 'जन' धातु से हुई। जन का का अर्थ है जन्म लेना अत: जाति का अर्थ जन्म से है। जबकि इसके ठीक विपरीत वर्ण शब्द का अर्थ चुनाव करना है। इस प्रकार जाति जन्म से निर्धारित होती है और वर्ण को व्यक्ति अपने स्वभाव के अनुसार स्वयं वरण करता है। धर्मशास्त्र में श्री पांडुरंग वामन काणे ने लिखा है कि वर्ण का विचार मुख्य रूप से मनुष्य की नैतिक और

बौद्धिक योग्यताओं पर बल देता है। जाति प्रथा में जन्मजात अधिकारों को विशेष महत्व दिया जाता है। इस प्रकार जाति जन्ममूलक और वर्ण कर्ममूलक है। वर्ण व्यवस्था लचीली और परिर्वनशील व्यवस्था थी। वैदिक काल और उसके बाद वर्णान्तर विवाहों के अनेक उदाहरण मिलते हैं। वर्ण व्यवस्था के विपरीत जाति व्यवस्था अधिक कठोर व्यवस्था है। रिजले, केतकर, हट्न तथा घुरिये ने जाति में अनेक विशेषताएं बताई हैं जैसे–1. जाति जन्ममूलक है, 2. जाति से बाहर विवाह की स्वतंत्रता नहीं होती, 3. अधिकांश जातियों में व्यवसाय लगभग निश्चित है। प्राय: सभी जातियों के अपने विशिष्ट जातीय नियम होते थे जिनका उल्लंघन करने पर जाति से बहिष्कृत कर दिया जाता इससे जाति व्यवस्था की कठोरता स्पष्ट है। जातिऔर वर्ण की संख्या में बहुत अन्तर है। वर्ण चार है। दूसरी ओर विभिन्न जनगणना रिपोर्टों के आधार रोज ने वर्तमान काल में जातियों की संख्या लगभग 4000 बताई है।

स्वतंत्रता पूर्व के उन्नीस रजवाड़ों और दो स्वायत्तशासी ठिकानों को मिलाकर 1 सितम्बर 1956 को जिस राजस्थान का एकीकरण सम्पन्न हुआ उसकी सामाजिक संरचना अत्यन्त ही जटिल है। समूचे भारतीय समाज की भांति वर्ण व्यवस्था और जाति प्रथा तो राजस्थानी समाज का अंग है ही साथ ही उप जातियां, गोत्र, नख, स्थान विशेष के आधार पर नामकरण होने वाली जातियां, मेधावी पूर्वज के नाम से जानी जाने वाली खांपें आदि-आदि। राजस्थान में सत्रहवीं शताब्दी में मारवाड़ राज्य के महाराजा जसवन्तसिंह प्रथम के देश दीवान मुंहणोत नैणसी ने सर्वप्रथम जनगणना और सामाजिक रीति-रिवाजों का विवरण एकत्रित किया। नैणसी ने दो प्रमुख ग्रंथ रचे थे–1. नैणसी री ख्यात और 2. मारवाड़ रा परगनां री विगत। विगत में नैणसी ने मारवाड़ को सात परगनों में विभाजित किया यथा–जोधपुर, सोजत, जैतारण, फलौधी, मेड़ता, सिवाणा और पोहकरण। नैणसी ने अत्यन्त ही विस्तार से प्रत्येक परगने के अन्तर्गत गांवों का सर्वांगीण लेखा-जोखा प्रस्तुत किया। प्रत्येक गांव की कुल जनसंख्या के साथ ही उस गांव के विभिन्न पशुओं तक की गणना नैणसी की विगत में उपलब्ध है। वह देश दीवान था और उसके अधीन असीम साधन थे जिनके उपयोग से उसने अत्यन्त गहराई से प्रत्येक गांव की भौगोलिक दशा, फसलें, विभिन्न जातियों के लोगों की गणना, प्रत्येक जाति के रीति-रिवाज आदि का उल्लेख किया है। अत: नैणसी को जनगणना की दृष्टि से मारवाड़ ही क्या समूचे राजस्थान का प्रथम ऐसा विद्वान माना जा सकता है जिसने समाज के नीचे से नीचे स्तर से लगाकर ठाकुर और राजा तक का विवरण अपनी विगत में समाहित किया। इसलिए यह कहा जा सकता है कि मुंहता

नैणसी ही 'मर्दुमशुमारी राजमारवाड़' 1891 का प्रेरणास्रोत रहा होगा। नैणसी के पश्चात् भी जनगणना के प्रयास निरन्तर होते रहे। कर्नल जेम्स टॉड ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'एनाल्स एण्ड एंटिक्वीटीज ऑफ राजस्थान' में यद्यपि राजस्थान की सामाजिक दशा का सांगोपांग वर्णन तो नहीं किया किन्तु उसने कुछ विशेष जातियों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति पर प्रकाश अवश्य ही डाला है। कर्नल टॉड द्वारा जिन जातियों का विस्तार से उल्लेख किया गया उनमें राजपूत, मेर और भील प्रमुख हैं। 1881 ई. में एम.ए. रोरिंग ने 'ट्राइब्स एण्ड कास्ट्स ऑफ राजस्थान' में भी राजस्थान की आदिवासी जातियों तथा अन्य जातियों का वर्णन प्रस्तुत किया। 1882 ई. में सी.टी. मैटकॉफ ने 'दी राजपूत ट्राइब्स' में पुन: राजस्थान की सामाजिक दशा का विवरण प्रस्तुत किया। 1986 ई. में डब्ल्यू. क्रुक्स ने 'दी ट्राइब्स एण्ड कास्ट्स ऑफ नॉर्थ-वेस्टर्न इंडिया' में पुन: राजस्थान की सामाजिक दशा का विवरण प्रस्तुत किया। इसके पश्चात् 1891 ई. में मर्दुमशुमारी राज मारवाड़ की रचना हुई। 1924 ई. में प्रकाशित -'बाम्बे रेजीडेन्सी सर्वे' में भी राजस्थानी समाज को समुचित स्थान मिला। 1924 ई. में ही एस.सी. राय और श्यामलदास ने मीणा और भीलों पर महत्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध करवाई। इस प्रकार स्वतंत्रता पूर्व राजस्थान की सामाजिक संरचना को समझने के अनेक प्रयास हुए, इनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण 'मर्दुमशुमारी राज मारवाड़' को माना जा सकता है जो अनेक दृष्टिकोणों से उससे पूर्व तथा उसके पश्चात् 1924 ई. तक इस दिशा में किये प्रयत्नों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रयास कहा जा सकता है।

मारवाड़ ही क्या समूचे राजस्थान के समाज की रचना अत्यन्त ही जटिल है तथा इस दिशा में अध्ययन करने वाले समाजशास्त्रियों के कौतुहल का विषय बनी हुई है। वास्तव में इस जटिलता के अनेक कारण हैं। जैसे किसी स्थान विशेष से जानी वाली जातियां, यथा सोनगरा, हाड़ा, उज्ज्वल तथा ऐसी ही अनेक अन्य जातियां। दूसरी समस्या है किसी मेधावी पुरखे के नाम से प्रचलित जातियां जैसे चांपावत, कूंपावत इत्यादि। सबसे विकट समस्या जो अब तक राजस्थान के समाज का अध्ययन करने वाले सभी विद्वानों के लिए विकट पहेली बनी हुई है, वह है ब्राह्मणों को छोड़कर शेष तीनों वर्णों में लगभग एक समान जातियों का अस्तित्व। सभी राजपूत जातियों का अस्तित्व हमें प्रत्येक कामगर जाति में तो मिलता ही है साथ ही समाज के ठेठ नीचे की जातियों में कमोबेश वे ही जातियां विद्यमान हैं। उदाहरण के लिए भाटी, परिहार अथवा ऐसी ही अन्य शासक वर्ग की राजपूत जातियां समाज के कामगर हिस्से-लोहार, घांची, माली, कुम्हार जैसी जातियों में तो है ही, समाज के ठेठ नीचे के हिस्से

में भी यही जातियां विद्यमान हैं। मुस्लिम समाज भी इससे अछूता नहीं है और मुस्लिम समाज के विभिन्न वर्गों में भी राजपूतों की अनेक जातियां मौजूद हैं। सामान्यतया यह कहा जाता रहा है कि देश पर मुस्लिम प्रभुत्व के समय यह जाति परिवर्तन हुआ था। किन्तु इस दिशा में कुछ प्रश्न समस्या उत्पन्न करते हैं जैसे–

1. यदि मुस्लिम आधिपत्य के समय बलात् जाति परिवर्तन हुआ तब कतिपय मुस्लिम जातियों में केवल राजपूत जातियां ही क्यों हैं? यद्यपि यदा-कदा यह सुनाई पड़ता है कि मुस्लिम शासन के समय क्षत्रिय उनके प्रबल विरोधी थे इसलिए केवल उन्हीं पर परिवर्तन हेतु दबाव डाला गया अथवा भारत में मुसलमानों की संख्या सीमित थी जो निरन्तर युद्धों से क्षीण होती जा रही थी अत: सैनिक बल बढ़ाने की दृष्टि से केवल सामरिक वृत्ति के लोगों पर ही परिवर्तन हेतु दबाव डाला गया।
2. मुस्लिम समाज के किसी भी अंग में व्यास, जोशी अथवा ब्राह्मणों की अन्य किसी खांप का उल्लेख क्यों नहीं है? जबकि धार्मिक दृष्टि से ब्राह्मण सर्वाधिक प्रबल विरोधी माने जाने चाहिये थे।
3. सामान्यतया यह माना जाता है कि वाणिज्य-व्यवसाय में संलग्न वर्ण अपेक्षाकृत शांतिप्रिय होता है तब मध्य काल में उसने परिवर्तन के दबाव को किस प्रकार झेला होगा। क्योंकि ब्राह्मणों की भांति अधिकांश वैश्य शाखाएं-उपशाखाएं भी मुसलमानों में विद्यमान नहीं है।
4. वर्तमान में अन्य पिछड़ा वर्ग के रूप में पहचानी जाने वाली कामगर जातियां कभी शासक वर्ग नहीं थी। उनमें भी राजपूतों की विभिन्न जातियों की मौजूदगी यह प्रश्न उत्पन्न करती है कि इनमें भी मुसलमानों की भांति ब्राह्मणों और वैश्यों की जातियां नहीं है और केवल राजपूत जातियां ही क्यों हैं।
5. स्वतंत्रता पूर्व समाज के चौथे वर्ण में मानी जाने वाली जातियों में भी मुसलमानों और कामगर जातियों की भांति केवल राजपूत जातियां ही हैं।

यह तथ्य तो समझ में आता है कि नीचे के वर्ण का कोई व्यक्ति ऊपर के वर्ण की ओर आकर्षित हो किन्तु अपने आप को समाज के श्रेष्ठ वर्ण में मानने वाले क्षत्रिय वर्ण के लोग नीचे के वर्णों में किस प्रकार सम्मिलित हुए? विशेष कारणों से अथवा विशेष परिस्थितियों में कोई एक व्यक्ति जाति में परिवर्तन के लिए सहमत हो गया हो यह तो सम्भव है किन्तु राजपूतों की सभी जातियों का नीचे के सभी वर्गों में मौजूद होना समझ

से परे है। यह संभावना व्यक्त की जा सकती है, जो आवश्यक नहीं कि सत्य हो, कि राजपूत काल में राजा के लिए काम करने वाले लोगों को सामाजिक दृष्टि से विशेष सुविधा प्रदान की गई हो, जैसे–किसी राजपूत राजा के लोहार, सुथार, घांची अथवा सिलावट को अपनी जाति में विशेष रुतबा प्रदान करने के उद्देश्य से यह छूट दी गई हो कि वह अमुक वंश के राजा का कामगर है अर्थात् उसे उस राजा की जाति धारण करने की छूट मिली हो जिससे उसके समाज में अपने अन्य जाति बंधु की तुलना में उसकी धाक इस आधार पर जमी रहे कि वह राजा का सिलावट या कुम्हार है। क्योंकि यह प्रथा सभी राजपूत राज्यों में प्रचलित रही होगी इसलिए नीचे की लगभग सभी जातियों में राजपूतों की सभी जातियां विद्यमान हैं। सोच की विस्तृत से विस्तृत सीमा भी अन्य कोई स्पष्टीकरण प्रस्तुत करने में असमर्थ है इसलिए यह संभावना सत्य के निकट दिखलाई पड़ती है। यहां यह उल्लेख भी किया जा सकता है कि ब्राह्मण क्योंकि स्वयं को पृथ्वी पर ईश्वर का विशेष दूत मानते थे इसलिए स्वयं को श्रेष्ठ मान कर राजा के पुरोहित अथवा व्यास ने उस राजा की जाति धारण नहीं की। शासक द्वारा अपने कामगरों को उसकी जाति का उपयोग करने की छूट से राजस्थान के समाज में सभी राजपूत जातियों की मौजूदगी स्पष्ट होने की संभावना बनती है।

उपरोक्त विश्लेषण का आशय यह कदापि नहीं है कि समाज में कभी परिवर्तन नहीं हुआ। फिरोज तुगलक के समय कायमखानियों तथा मेवों का परिवर्तन सर्वविदित है। वैश्य जाति में भंडारी, मेहता, लोढ़ा आदि का राजपूतों से उत्पनन होना अनेक साधनों से प्रमाणित है तथा चारणों की अनेक शाखाओं का भी राजपूतों से सम्बन्ध रहा, इसी प्रकार अन्य परिवर्तन भी हुए होंगे। किन्तु इन उदाहरणों से राजस्थान के अन्य पिछड़ा वर्ग की जातियों तथा नीचे की जातियों में राजपूतों की लगभग सभी जातियों का होना प्रमाणित नहीं होता। क्योंकि अन्य पिछड़ा वर्ग की जातियों तथा चौथे वर्ण की जातियों का न तो शासन रहा, न उन्होंने बलपूर्वक परिवर्तन करवाया। शक्ति अथवा लालच के बल पर आर्थिक दृष्टिकोण से पीड़ितों को आकर्षित करने की संभावना तो रहती है किन्तु इससे शासक वर्ग जिनके पास शक्ति और साधनों के भंडार थे, का कामगर जातियों अथवा पिछड़ी जातियों की ओर आकर्षित होना संभव नहीं है।

राजस्थान की जाति व्यवस्था में इसी प्रकार की अनेक जटिलताएं मौजूद हैं। जैसे–शाकाहारियों का राजस्थान में प्रतिशत 25.88 है जबकि समूचे देश में यह 15.54 के लगभग है। यह समस्या इसलिए है कि राजस्थान का शासक वर्ग स्वयं मांसाहारी था

और देश की तुलना में मुसलमानों का प्रतिशत भी राजस्थान में अपेक्षाकृत अधिक है। देश की आबादी में 12.60 प्रतिशत मुसलमान है जबकि राजस्थान में यह 19.30 के लगभग है। इस स्थिति में राजस्थान में देश की तुलना में लगभग 10 प्रतिशत शाकाहारी अधिक कैसे हो सकते हैं। राजस्थान के समाज का गंभीरता से अध्ययन करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि यहां जैन समाज देश के अन्य भागों की तुलना में कहीं अधिक बड़ा है। देश में जैन मतावलंबियों की संख्या 2.16 प्रतिशत है जबकि राजस्थान में यह 7.46 है। इसी प्रकार राजस्थान में आर्य समाज का प्रभाव दूसरे क्षेत्रों की तुलना में अधिक रहा और इस श्रेणी में सभी जातियों और वर्णों के लोग सम्मिलित हैं। यहां तक कि अनेक क्षत्रिय आर्य समाज के प्रभाव के कारण शुद्ध शाकाहारी बने हुए हैं। संसार भर में प्राणियों के प्रति अपने स्नेह के कारण प्रसिद्ध विश्नोई समाज भी अन्य क्षेत्रों की तुलना में राजस्थान में अधिक बड़ा है। वल्लभ सम्प्रदाय का प्रभाव जैसे अन्य कारण भी इस दिशा में सुझाये जा सकते हैं।

17वीं शताब्दी में मुंहता नैणसी की 'मारवाड़ रा परगनां री विगत' में स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व के जोधपुर राज्य की जनगणना और जातियों का जो विवरण प्रस्तुत किया गया था उसके समकक्ष 19वीं शताब्दी के अंतिम दशक में सेक्रेटरी मुसाहिब आला व सुपरेण्टेण्डेण्ट मरदुमशुमारी राजमारवाड़ राव बहादुर मुंशी हरदयालसिंह तथा उनके सहायक मुंशी देवीप्रसाद की देखरेख में तैयार की गई 'मरदुमशुमारी राजमारवाड़ सन् 1891' सर्वाधिक महत्वपूर्ण जनगणना का प्रयत्न है। यद्यपि यह कहा जाता है कि ब्रिटिश सरकार ने 1857 की क्रांति के पश्चात् नवीन सैनिक भर्ती के उद्देश्य से राजपूत जातियों की गणना तथा उनके चरित्र खरी पहचान के उद्देश्य से अंग्रेजी सरकार से संधिरत सभी राजपूत राज्यों को जनगणना के आदेश प्रसारित किये थे। अधिकांश राज्यों ने केवल कुछ प्रशासनिक आंकड़े प्रस्तुत कर दिये किन्तु मारवाड़ राज्य में इस उद्देश्य की परिपूर्ति हेतु एक नवीन विभाग स्थापित किया गया जिसने हरदयालसिंह और मुंशी देवीप्रसाद के प्रयत्नों से 1891 की मरदुमशुमारी रिपोर्ट तैयार की। हम इसे केवल ब्रिटिश सरकार की आज्ञा से की गई जनगणना नहीं मान सकते क्योंकि यदि राज्य सरकार की इच्छा न होती तो अन्य रजवाड़ों की भांति मारवाड़ राज्य से भी कुछ सूचनाएं औपचारिकता स्वरूप भेजी जा सकती थी किन्तु ऐसा नहीं हुआ और एक विस्तृत रिपोर्ट तैयार की गई। अतः यह केवल जोधपुर दरबार के सद्प्रयत्नों का परिणाम था कि इस हेतु एक पृथक विभाग स्थापित किया गया। अपने उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए स्वयं मुंशी हरदयाल ने लिखा है कि "जैसे कि 1 होशियार गवर्नमेण्ट का फ़र्ज़ है कि वह

अपनी प्रजा की संख्याओं को जाने और उसके घटने और बढ़ने का लेखा देखा करे वैसे ही उस के इतिहास धर्म आचार विचार और व्योहार से वाक़िफ़ रहना भी ज़रूर है कि जिसका राजप्रबंध और न्याय सम्बन्धी विषयों में बहुधा काम पड़ता रहता है और इसीलिये जब मारवाड़ की मरदुम शुमारी ख़तम हुई और उसका काम तैयार हो चुका कि जो इस किताब के पहिले और दूसरे खण्ड में छपवा दिया गया है तो श्रीदरबार ने मंजूर फ़रमाया कि जो 25 लाख आदमी मारवाड़ के गिने गये हैं उनकी उत्पत्ति रीत भांति और चाल चलगत के हालात भी दरियाफ्त करके लिखे जावें कि जिससे राज को भी वाक़िफ़ी रहे और आम लोगों को भी फ़ायदा पहुंचे क्योंकि हरेक बात का जानना नहीं जानने से अच्छा है और यह तो जानने लायक ही बात थी इस वास्ते इसको अवश्य समझकर ज़रूरी सामग्री एकत्र करने के लिए कई गम्भीर सवाल बनाये गये जिनके जवाब सदर में भी हरेक क़ौम के पंचों और भाटों वग़ैरा से लिये गये और परगनों से हाकिमों और मरदुमशुमारी की ओहदेदारों के मारफ़त मंगवाये गये सिवाय इसके जिन हिन्दी फ़ारसी और अंगरेज़ी किताबों से इस काम में मदद मिल सकती थी वे भी संग्रह की गई जब इस तरह से सब ज़रूरी सामान इकट्ठा हो गया तो किताब का मसौदा तैयार हुआ जिसकी जांच असल काग़ज़ात से की गई जो फ़रक निकला उसको नज़रसानी में दुरुस्त किया गया बाद इस सफ़ाई के अंगरेज़ी तरजुमा शरू हुआ जब वह ख़तम होकर छप चुका तो अब यह हिन्दी किताब शुरू की जाती है।''

कहने की आवश्यकता नहीं है कि मारवाड़ मरदुमशुमारी रिपोर्ट 1891 अंग्रेजी तथा हिन्दी दोनों भाषाओं में तैयार की गई थी। हिन्दी संस्करण मुंशी देवीप्रसाद की देखरेख में तैयार हुआ था। मुंशी हरदयालसिंह के उपरोक्त कथन में जनगणना के उद्देश्य, उनके कार्यप्रणाली, सहायक साधनों और प्रशासनिक स्तर पर किये प्रयत्नों का उल्लेख मौजूद है। मारवाड़ की सम्पूर्ण जातियों को छह वर्गों में विभाजित किया गया है जिन्हें ए क्लास, बी क्लास, सी क्लास, डी क्लास, ई क्लास तथा एफ क्लास नामकरण दिया गया है। ए क्लास में सैन्य वृत्ति और राज करने वाली कौमों को सम्मिलित किया गया है। इस श्रेणी में राजपूतों के साथ ही देशी मुसलमानों, कायमखानियों तथा सिन्धी सिपाहियों को रखना आश्चर्यजनक लगता है। यद्यपि संकलनकर्ताओं के सोच की दिशा यह हो सकती है कि ये सभी जातियां राजपूतों से निकली हुई है। इस सोच के दूरगामी परिणाम हुए। इन जातियों के राजपूतों से मधुर सम्बन्ध बने रहे तथा भाईचारे का वातावरण कायम रहा। संभवत: इस अपनत्व के कारण का ही यह परिणाम था कि 1947 में देश के विभाजन के समय भारत छोड़ कर जाने वाले लोगों में मारवाड़ के लोगों की संख्या

नगण्य थी। जो लोग गये उनमें भी मारवाड़ मरदुमशुमारी की ए श्रेणी में राजपूतों के समकक्ष रखी गयी मुस्लिम जातियों के लोग नहीं के बराबर थे। इस श्रेणी में खेती करने वाली जातियों को भी सम्मिलित किया गया है जैसे- माली, जाट, विश्नोई, सीरवी, पिटल, मेव, मीणा, भील, गरासिया जैसी अनेक जातियां सम्मिलित हैं। यहां मुंशी हरदयालसिंह तथा मुंशी देवीप्रसाद की सराहना में कहा जा सकता है कि उन्होंने सैनिक वृत्ति की जातियों को जो उच्च श्रेणी प्रदान की उसी श्रेणी में कृषि कर्म करने वाली जातियों को भी सम्मिलित कर उनके महत्व को स्वीकार किया। यद्यपि मेर, मीणा, भील, गरासिया जैसी जातियों को भी इसी में सम्मिलित किया गया जिन्हें वर्तमान में अनुसूचित जन जाति की संज्ञा दी गई है। क्योंकि यह सभी अनुसूचित जनजातियां किसी न किसी रूप से कृषि कार्य से जुड़ी हुई थी अत: बिना ऊंच-नीच का भेदभाव किये उन सभी जातियों को ए श्रेणी में रखा गया जो या तो सैनिक कर्म अथवा कृषि कार्य करती थी।

मरदुमशुमारी राजमारवाड़ 1891 की ए श्रेणी में वर्णित सभी जातियों का संक्षिप्त इतिहास उनकी विभिन्न शाखाओं-उपशाखाओं, खांपों, उनकी कुलदेवियों, आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति आदि का ब्यौरा दिया गया है। इस विवरण में मारवाड़ की लगभग सभी राजपूत जातियों को समाहित किया गया है। पंवार राजपूतों का मालवा में वर्चस्व रहा तथा सिन्ध के उमरकोट जैसे क्षेत्रों में भी उन्होंने शासन किया। प्राचीन काल में मारवाड़ के अनेक क्षेत्र उनके अधीन रहे किन्तु 1891 तक मारवाड़ से उनका वर्चस्व लगभग लुप्त हो चुका था फिर भी सम्पादकों ने मारवाड़ के ग्रामीण अंचलों में निवास करने वाली राजपूत जाति के रूप में उनका गहराई से सर्वेक्षणात्मक विवरण प्रस्तुत किया है–"पंवारों ने अग्निवंशी राजपूतों में ज्यादा नाम पाया है और राज भी इनका हिन्दुस्तान में ज्यादा रहा है और राजा-महाराजा भी इनमें बिक्रम और भोज जैसे बड़े-बड़े नामी और दातार हुए हैं और इसीलिये इनके बाबत यह कहावत चली आती है।

पृथ्वी बड़ा प्रमार पृथ्वी परमारां तणी
एक उजेणी धार दूजो आबू बैठणो

यानी पृथ्वी में पंवार बड़े हैं। पृथ्वी पंवारों की है। उनके बैठने की जगह एक तो उज्जैन और धार है और दूसरे आबू का पहाड़ है।

मारवाड़ में पंवार आबू से आये हैं। धरणी बाराह बहुत बड़ा पंवार राजा मारवाड़ का था। उसने अपने राज के 9 हिस्से करके अपने भाइयों को बांट दिये थे। नवकोट मारवाड़ का नाम जब ही निकला है। जिनकी तफसील यह है।

छप

मंडोवर सावंत हुओ अजमेर सिंधसू।
गढ़ पूगल गजमल्ल हुओ लुद्रवे भान भू।।
आलपाल अर्बुद्द भोज राजा जालंधर।
जोगराज धरधाट हुओ हंस् पारकर।।
नवकोट किराडू संजुगत थिर पंवारां थरपिया।
धरणी बराह धर भाइयां कोट बांट जुअ-जुअ किया।।

अर्थ-धरणी बराह ने पंवारों की जमीन में 9 कोट थापकर जब अपने भाइयों को अलग किया तो मंडोर सामंत को अजमेर सिंधु को पूंगल गजमल को लुद्रवा भान को आबू आलपाल को जालंधर याने जालोर भोजराज को पारकर हंसराज को इस तरह एक-एक कोट बांट दिय और कोट किराडू अपने पास रखा।

इस बंटवारे से पंवारों का राज टुकड़े-टुकड़े होकर कमज़ोर हो गया। भाटी, चौहान, पडिहार और राठौड़ों वगैरह ने एक-एक करके नवों कोट उनसे छीन लिये। अब पंवार मारवाड़ में रैयत की तौर पर रहते हैं और खेती-बाड़ी करके अपना गुजारा करते हैं और वे इतनी खांपों के हैं–

1. पंवार
2. भायल ये पहिले सिवाने में राज करते थे।
3. सोढ़ा जिनका ऊमरकोट और थरपारकर में राज था।
4. सांखला जो पहिले जांगल में राज करते थे।
5. ऊमट जिनका भीनमाल में राज था।
6. कालमा जिनका सांचोर में राज था।
7. काबा जिनका रामसींण में राज था।
8. गल ये पालणपुर की तरफ राज करते थे।
9. डोड

पंवारों की कौम में आम राजपूतों के रिवाज से कोई बात ज्यादा नहीं है। अलबत्ता जो बहुत गरीब हैं और जिनके पास जमीन भी थोड़ी है, उनमें बेवा औरतों का नाता गोडवाड़ जालोर सांचोर और मालानी की तरफ होता है।''

पंवारों के समान ही मारवाड़ में निवास करने वाले विभिन्न राजपूत वंशों–राठौड़, सीसोदिया, कछवाहा, तुंवर, भाटी, झाला, चौहान, सोलंकी, पड़िहार, चावड़ा,

पड़िहारिया, डाबी, जेठवा, दहिया, गौड़, नातरायत राजपूत का भी विस्तृत वर्णन समाहित किया गया है।

मरदुमशुमारी राजमारवाड़ 1891 में बी श्रेणी में अधिकांशतः ब्राह्मणों को रखा गया है। पुष्करणा, पालीवाल और राजपुरोहित जैसे ब्राह्मणों को भी सम्मिलित किया गया है जो सगाई, विवाह, मृत्यु आदि से जुड़े संस्कारों से सम्बन्धित नहीं थे बल्कि विभिन्न राजकीय पदों पर आसीन थे अथवा कृषि कार्य में संलग्न थे। इस श्रेणी में सभी प्रकार के धार्मिक कार्य करने वालों के साथ ही गाने-बजाने वाली जातियों को भी सम्मिलित कर दिया गया है। संभवतः उस समय प्रचलित धारणा के अनुसार यह याचक जातियां थीं इसलिए इन्हें इस श्रेणी में ब्राह्मणों के साथ ही स्थान दे दिया गया है जो वर्तमान दृष्टि से किसी मापदण्ड के अनुसार उचित नहीं कहा जा सकता।

सी और डी श्रेणियों में अधिकांशतः व्यापार करने वाली तथा कामगर जातियों को रखा गया है किन्तु आश्चर्य है कि डी श्रेणी में गुरड़ा, थोरी, सरगरा और कामड़िया को भी सम्मिलित कर दिया गया है। गुरड़ा कुछ जातियों में ब्राह्मण कर्म से सम्बन्धित रहे जबकि सरगरा जाति संगीत से जुड़ी हुई मानी जाती है। बांकिया और ढोल बजाना इनका प्रमुख कार्य माना जाता है इसलिए इन्हें बी श्रेणी की गाने-बजाने वाली अन्य जातियों के साथ रखना अधिक उचित होता। इसी प्रकार कामड़िया भी ब्राह्मण कर्म करते हैं तथा इनमें से कई रामदेवजी के मंदिर से सम्बन्धित होते हैं। रामदेवजी के रात्रि जागरण 'जम्मा' के समय यह रामदेवजी के भजन गाते हैं तथा इनकी स्त्रियां रामदेवजी के भजनों के साथ नृत्य करती हैं। कामड़ियां स्त्रियां 'तेरह ताली नृत्य' में प्रवीण होती है तथा जम्मा के समय इनका नृत्य देखने के लिए लोगों की भीड़ उमड़ पड़ती है। इन सभी को बी श्रेणी में रखा जाना चाहिए था। अधिकतर कामगर जातियां इसी श्रेणी में रखी गई हैं।

ई श्रेणी में अधिकांशतः समाज के निचले स्तर की जातियां हैं जबकि एफ श्रेणी में केवल विदेशी जातियों को रखा गया है। इनमें अफगान, मकरानी, हबशी, ईसाई और फारसी जातियां मुख्य हैं।

'मरदुमशुमारी राजमारवाड़ 1891' लगभग समस्त राजस्थान की जातियों का प्रतिनिधित्व करती है क्योंकि 1891 में मारवाड़ की पच्चीस लाख जनसंख्या में न्यूनाधिक संख्या में वे सभी सभी जातियां सम्मिलित हैं जो राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में निवास करती है इसलिए मोटे रूप में मरदुमशुमारी को 19वीं शताब्दी के अंतिम दशाब्द के समूचे राजस्थानी समाज का प्रतिबिम्ब माना जा सकता है। मरदुमशुमारी राजमारवाड़ 1891 में उपलब्ध विभिन्न श्रेणियों के वर्गीकरण में अनेक विरोधाभास है और इसे

किसी दृष्टिकोण से चारों वर्णों का प्रतिनिधि वर्गीकरण नहीं माना जा सकता किन्तु इससे इसके महत्व में किंचित् मात्र भी कमी नहीं आती। प्रस्तुत ग्रन्थ में मारवाड़ की जातियों की केवल गणना ही नहीं की गई है बल्कि प्रत्येक जाति का विस्तार से विवरण प्रस्तुत किया गया है। अनेक जातियों की उत्पत्ति को चमत्कार से जोड़ा गया है जो संभवत: उस काल में महत्वपूर्ण मानी जाती रही हो। प्रत्येक जाति की संख्या के साथ ही उसके सगाई, विवाह आदि से सम्बन्धित संस्कारों के विवेचन के साथ ही विभिन्न जातियों के अन्तिम संस्कार का विवरण भी प्रस्तुत किया गया है। इस विवरण में वे सब तथ्य समाहित है जो वर्तमान में समाजशास्त्रियों की दृष्टि में महत्वपूर्ण माने जाते हैं। जैसे कौनसी जातियों में विधवा विवाह का प्रचलन था। यद्यपि यहां यह उल्लेख वांछनीय है कि कुछ समय पूर्व किये गये एक सर्वेक्षण के अनुसार देश की तुलना में राजस्थान में विधवा विवाह का प्रतिशत कम है। देश में यह प्रतिशत 81.4 है जबकि राजस्थान में केवल 76.8 ही है। इसी प्रकार कौनसी जातियों में नाते होते थे, स्त्रियां प्रमुख रूप से क्या कार्य करती थीं जैसे तथ्य इस ग्रन्थ के विवरण में समाहित हैं। स्त्रियों के कार्य में परिवार की देखभाल, पानी और ईंधन की व्यवस्था करना, पशुओं की देखभाल करना, कृषि कार्य में पुरुषों का हाथ बंटाना और यदि कामगर परिवार हो तो कार्य में सहायता करना आदि। इस प्रकार स्त्रियां लगभग पुरुषों के समान ही कार्य करती थीं।

मारवाड़ में जनगणना का कार्य 1931 ई. के पश्चात् नहीं हुआ और देश की प्रथम जनगणना जो 1951 में हुई वह जातिगत आधार पर नहीं थी। यद्यपि उसमें अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों का उल्लेख अवश्य था।

वर्तमान युग एक दूसरे देश पर अन्तरनिर्भरता का युग समझा जाता है और आज हम वैश्वीकरण की ओर अग्रसर हैं इसलिए जाति व्यवस्था की स्थिति पहले से कुछ भिन्न अवश्य ही है। देश में बड़े शहरों में निवास करने वाले लोगों की संख्या लगभग 20 प्रतिशत है और इनमें से कुछ लोग अन्तर्जातीय विवाह आदि कर जाति बंधन तोड़ रहे हैं किन्तु ग्रामीण अंचलों में निवास करने वाली लगभग 80 प्रतिशत जनसंख्या आज भी जाति बंधनों से जकड़ी हुई है। देश में जाति व्यवस्था को जमाये रखने का प्रमुख कारण राजनीतिक है। स्वतंत्रता प्राप्ति के 62 वर्ष पश्चात् आज भी जाति व्यवस्था यदि जीवित है तो उसका सबसे बड़ा कारण चुनाव प्रणाली है। लगभग सभी राजनीतिक दल जाति के आधार पर अपने प्रतिनिधियों का चयन करते हैं और यह उम्मीदवार जाति को अपने पक्ष में संगठित करने के उद्देश्य से विरोधी उम्मीदवार की जाति द्वारा किये गये अत्याचारों का बढ़ा-चढ़ा कर मनगढ़ंत विवरण प्रस्तुत करने से नहीं चूकते। गांवों में यह कार्य

पंचायत के चुनावों के समय अपने उग्रतम रूप में देखा जा सकता है। इसलिए देश की राजनीति जाति व्यवस्था को जमाये रखने का प्रमुख कारण है। आधुनिक शिक्षा के प्रचार-प्रसार के साथ ही जाति व्यवस्था की जड़ें खोखली होने की संभावना है और आशा की जा सकती है कि हम परस्पर भाईचारे, सौहार्द और सामंजस्य पर आधारित वर्गविहीन, जातिविहीन समाज की ओर अग्रसर हो रहे हैं जहां केवल मनुष्य का उसके व्यक्तिगत गुणों के आधार पर आदर-सम्मान होगा।

मरदुमशुमारी राजमारवाड़ 1891 में उपलब्ध सामग्री का आधार विभिन्न क्षेत्रों में नियुक्त सरकारी कर्मचारियों द्वारा भेजे गये आंकड़े, जाति पंचों से साक्षात्कार, प्रचलित परम्पराएं तथा भाटों की बहियां रही। विभिन्न जातियों से सम्बन्धित तथ्यों में चमत्कारों आदि का समावेश स्वाभाविक ही था। समग्र रूप से प्रस्तुत ग्रंथ की सामग्री को बहुमूल्य माना जा सकता है। सामाजिक दृष्टि से प्रत्येक जाति की उत्पत्ति और उससे सम्बन्धित सभी संस्कारों के साथ ही उसके प्रमुख व्यवसाय आदि के गहराई से किये गये विवरण के कारण यह ग्रन्थ इतिहासकारों, समाजशास्त्रियों, संस्कृति प्रेमियों और अर्थशास्त्रियों के लिए समान रूप से उपयोगी है। प्रस्तुत ग्रन्थ को हिन्दी भाषा की दृष्टि से भी अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जा सकता है क्योंकि इसमें हिन्दी के प्रारम्भिक अवस्था के दर्शन होते हैं। 19वीं शताब्दी के अन्तिम छोर तक हिन्दी भाषा पूर्णतया परिवक्व नहीं हुई थी और उसमें डिंगल के साथ ही फारसी शब्दों की बहुतायतता थी। इसलिए समाजशास्त्रियों और अर्थशास्त्रियों के साथ प्रस्तुत ग्रन्थ भाषा विज्ञान के विशेषज्ञों के लिए भी महत्वपूर्ण कहा जा सकता है।

समग्र रूप से 'मरदुमशुमारी राजमारवाड़ 1891' को केवल मारवाड़ ही क्या समूचे राजस्थान के सम्बन्ध में जानकारी के इच्छुक समाजशास्त्रियों, अर्थशास्त्रियों और संस्कृतिसेवियों हेतु एक बहुमूल्य ज्ञानकोश की संज्ञा दी जा सकती है। इस ग्रन्थ को यदि 19वीं शताब्दी का दर्पण कहा जाये तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

–जहूरखां मेहर
इतिहासवेत्ता एवं वरिष्ठ साहित्यकार
सिवांची गेट के भीतर, जोधपुर

जैसे कि १ होशियार गवर्नमेण्ट का फ़र्ज़ है कि वह अपनी प्रजा की संख्याओं को जाने और उसके घटने और बढ़ने का लेखा देखा करे वैसे ही उस के इतिहास धर्म आचार बिचार और व्योहार से वाक़िफ़ रहना भी ज़रूर है कि जिसकाराजप्रबन्ध और न्यायसम्बन्धी विषयों में बहुधाकाम पड़ता रहता है और इसीलिये जब मारवाड़ की मरदुम शुमारी ख़तम हुई और उसका काम तैयार होचुका कि जो इस किताब के पहिले और दूसरे खण्ड में छपवा दिया गया है तो श्रीदरबार ने मंजूर फ़रमाया कि जो 25 लाख आदमी मारवाड़ के गिने गये हैं उनकी उत्पत्ति रीत भांति और चाल चलगत के हालातभी दरियाफ्तकरके लिखे जावें कि जिससे राजको भी वाक़िफ़ी रहे और आम लोगों को भी फ़ायदा पहुंचे क्योंकि हरेक बात का जानना नहीं जानने से अच्छा है और यह तो जानने लायकही बात थी इसवास्ते इसको अवश्य समझकर ज़रूरी सामग्री एकत्र करने के लिये कई गम्भीर सवाल बनाये गये जिनके जवाब सदर में भी हरेक क़ौम के पंचों और भाटों वग़ैरा से लिये गये और परगनों से हाकिमों और मरदुमशुमारीकी ओहदेदारों के मारफ़त मंगवाये गये सिवाय इसके जिन हिन्दी फ़ारसी और अंगरेज़ी किताबों से इस काम में मदद मिल सकी थी वे भी संग्रह की गई जब इसतरह से सब ज़रूरी सामान इकट्ठा होगया तो किताब का मसौदा तैयारहुआ जिसकी जांच असल कग़ज़ातसे की गई जो फ़रक़ निकला उसको नज़रसानी में दुरुस्त किया गया बाद इस सफ़ाई के अंगरेज़ी तरजुमा शुरू हुआ जब वह ख़तम होकर छपचुका तो अब यह हिन्दी किताब शुरू की जाती है।

इस मुशकिल काम में जो पहिले कभी नहीं हुआ था मुनशी देवीप्रशाद ने बड़ी मिहनत उठाई उसनेअपने ज़िम्मे के और दूसरे कामों के सिवाय जो उसको कोर्टमुनसफ़ी और सक्रेटरी आफ़िस में करने पड़ते हैं इस बड़े काम मरदुमशुमारी की डिपटीसुपरन्डेण्टी का बोझ भी खुशी से अपने ऊपर लिया और उस को मेरी मरज़ी और हिदायत के माफ़िक़ पूरा किया फिर इस भारी रपोर्ट के तीनों खण्डों का मसोदा भी तैयार करके मेरे सामने रखदिया उस के पास इस मुल्क के हालात का बड़ा भारी ख़ज़ाना है जिसको भी उस ने मेरे कहने पर इस किताब में लगाया।

इससे मैं उसका बहुत अहसानमंद हूं और उस की इन क़ीमती ख़िदमतों की सिफ़ारिश बहुत खुशी से श्रीदरबारमें करता हूं।

जोधपुर **रायबहादुरमुनशीहरदियालसिंघ**

1 अप्रेल सन 1894 सिक्रेटरी मुसाहिबआला व सुपरेण्टेण्डेटमुदुमशुमारीराज मारवाड़

सूचीपत्र

अपेनडिक्स यानी कस्का बतीसी से सूची

श्रीगणेशायनमः

रपोट

मरदुमशुमारीराजमारवाड़

तीसराहिस्सा

मारवाड़कीकौमोंकाहाल

इस हिस्से में उनकौमोंका हाल लिखा जाता है कि जो मारवाड़ में रहतीहैं और जिनकी गिन्ती मरदमशुमारी के कौमवार नक्शों में दरज हुईहै ॥

ये नकशे खानापूरी होनेके वास्ते गवर्नमेंट से आयेथे और इनमें जिसतौरपर हिन्दू मुसलमानोंकी जातोंके खाने पेशे के लिहाज से रक्खेथे उसीतरतीबसे हाल लिखनेका भी प्रबंध हुआथा जो हरेक जातिके पंचोंसे सदरमें और परगनों में अच्छी तरहसे दरयाफ्त कियागया ॥

यह हाल ६ क्लास में खतम हुआहै जिनकी तफसील यहहै ॥

१ (ए क्लास) इसमें जमीदार और खेती करने वाली कौमें रक्खी गईहैं ॥

२ (बी क्लास) इसमें खटदर्शन नौकरी पेशा और मांगने वालीजातें हैं ॥

३ (सी क्लास) इसमें वणिज व्योपार करनेवाली जातें लिखी हैं ॥

४ (डी क्लास) इसमें कारीगर कौमों का हालहै ॥

५ (ई क्लास) इसमें सब मजदूरी पेशा कौमोंकी भरती है ॥

६ (एफ् क्लास) इसमें हिंदुस्थान के बाहर रहनेवाली जातों का बयान है ॥

ए क्लास

पहिला गुरुव

सिपाही पेशा और राज करने वाली जातें

राजपूत

राजपूत १ मशहूर कौम है और हिन्दुस्थान में बहुत मुद्दत से उनका राज चला आता है मारवाड़ में भीराजपूतही राज करते हैं पहिले सूरज बंशियों का राज था फिर चंद्र वंशियों का हुआ उनके पीछे अग्निवंशी राजपूत यानी परमार चौहान सोलँखी और पड़िहार राज करते रहे और अब राठोड़ करते हैं.

मारवाड़ की अगली मरदुमशुमारी सन् १८८१ में कुल १६१६९२ राजपूत गिने गये थे और अब सन् १८९१ की गिन्ती में २४४५६३ हुए इनमें १०६२२१ औरतें थीं

बड़ी २ और मशहूर राजपूत खांपों की तफसील नीचे लिखी जाती है.

	नाम	मर्द	औरत	कुल
१	राठोड़	५६६३७	३०२०३	८६८४०
२	सीसोदिया	४८६४	८७५५	१३६१९
३	कछवाहा	५४८९	८४३९	१३९२८
४	तंवर	११६	८९०	२००६
५	भाटी	१५१७१	११९८३	२७१५४
६	पँवार	५८९९	५२१९	११११८
७	झाला	११८	८८	२०६
८	चौहान	१३८५६	११९३३	२५७८९
९	सोलंखी	३७९०	३२३३	७०२३
१०	पड़िहार	३३८६	३०१९	६४०५
११	फुटकर	२८०१६	२२४५९	५०४७५
कुलमीजान		१३८३४२	१०६२२१	२४४५६३

राठोड़ सीसोदिये और कछवाहा तीनों सूरजबंश की शाखें हैं

अजोध्या के मशहूर महाराजा श्रीरामचंद्रजी के २ बेटे लव और कुश थे लव की औलाद में राठोड़ सीसोदिये और कुशकी औलाद में कछवाहे हैं.

भाटि और तंवर दोनों चंद्रवंशी है प्रयाग के राजाधिराज ययाति के २ बेटे पुरु और यदू थे पुरु के बंश में पांडव हुए तंवर उनकी ओलाद हैं.

यदु के बंशवाले यादव कहलाये जिनको जादव भी कहते हैं भाटी जादवों की औलाद हैं

पँवार चोहान सोलंखी और पडिहार अग्निबंशी हैं और झाला पँवारकी शाखा हैं इन अग्नि कुळ राजपूतों के बाबत ऐसा कहाजाता है कि इनको बोद्ध मत वालों केमारने के लिये बसिष्ठ वगैरह ऋषियोंने आबू पहाड के ऊपर होम करके अग्नि कुंडमें से पैदा किया था ॥

यहां इन सब राजपूतों के रीति रिवाज एकसेही हैं और जो थोडा २ फरक किसी २ कौमकी रीति भांति में है वह उसके हालमें खोल दिया जावेगा यहां कुछ २ बयान हरएक खांप की उत्पत्ति और इस देश में आने वगैरह का नीचे लिखा जाता है ॥

राठोड

राठोड मुल्क के मालक हैं दूसरे राजपूत उनकी दीहुई रोटी खाते हैं ॥

राठोड माडवाड में कन्नौज से आये हैं और इसी सबब से इनकी खांप कन्नोजियाहै और कन्नोज में दक्खन से गये थे दक्खन में अयोध्या से जानेका समय मालूम नहीं ॥

कनोजिया राठोडों के पहिले भी कुछ राठोड मारवाड में रहतेथे उनका आना आबू की तरफ से पाया जाताहै क्योंकि १ समय उनका राज आबूके ऊपर था वहां शायद सीधे दक्खनसे आये हों इनमें से हथोंडिया राठोडअबभी थोडेसेकहीं २मिलते हैं उनके पास जमीन नहीं रहीहै और बेअपनी तवारीख भी भूल गये हैं गलती से अपने को कनोजिया राठोड़ों में से समझते हैं

कन्नोजिया राठोड मारवाडमें आनेके बाद बहुत बढेऔर उनकी पीढ़ीदरपीढ़ी नई २ खांपेंबाप दादों के नाम पर अलग २ फैलतीगई जिनकी गिन्ती अब १०० के ऊपर है सो दूसरे हिस्से के खांपवार नकशे में लिखी जा चुकी हैं ॥

क्या ईश्वर की मायाहै कि कन्नोज से राव सियाजी राठोड संबत १२६८ में अकेले आये थे आज ८६९४० आदमी उनकी औलाद से सिर्फ मारवाड में हैं और जो राजपूताने माळवे और गुजरात वगैरह मुल्कों में है वे अलग हैं ॥

हम यहां राव सियाजी से लेकर कुरसी नामभी लिखे देते हैं कि इस पुस्तक में जो आगे

नाम राठोड राजों महाराजों के आवेंगे उनका समय वगैरह देखने में पढ़ने वालों को सुभीता रहै ॥

१ रावसीयाजीराठोड ०	२ रावआस्थानजी ०	३ रावधुहडजी ०
४ राव्ररायपालजी ०	५ रावकन्नपालजी ०	६ रावजालणसीजी सं १३३९
७ रावछाडाजी सं १३४८	८ रावटीडाजी सं १३६०	९ रावकानडजी सं १३६४
१० राव त्रभवनसीजी	११ रावसलखाजी सं १३७६	१२ रावमलीनाथजी सं १४३१
१३ रावचूंडाजी सं १४५२	१४ रावकानाजी सं १४५४	१५ रावसताजी सं १४७०
१६ रावरिडमलजी सं १४७४	१७ रावजोधाजी सं १५१०	१८ रावसातलजी सं १५५४
१९ रावसूजाजी सं १५४८	२० रावगंगाजी सं १५७२	२१ रावमालदेवजी सं १५८८
२२ रावचंद्रसेनजीसं १६१९	२३रावआसकरनजीसं१६३७	२४ रावरायसिंहजी सं १६३९
२५ मोटाराजा उदयसिंह सं १६४०	२६राजासूरसिंहजी सं१६५१	२७ राजागजसिंहजी सं १६७६
२८ महाराजा जसवंतसिंहजीसं १६९२	२९ महाराजा अजीतसिंहजी सं १७३५	३० महाराजा अभयसिंहजी स १७८१
३१ महाराजा रामसिंहजी सं १८०५	३२ महाराजा वखतसिंहजी स १८०८	३३ महाराजा विजयसिंहजी सं १८०९
३४ महाराजा भीमसिंहजी सं १८४९	३५ महाराजा मांनसिंहजी सं १८६०	३६ महाराजा तखतसिंहजी स १९००
३७ महाराजाश्रीजसवंतसिंहजी बहादुर सं १९२९		

राठोडों की कुलदेवी नागनेचियांजी है पहिले नाम राठेश्वरी था और इसीके नामपर इनका नाम राठोड हुआ है मारवाड में पुराना मंदिर नागनेचियांजी का गांव नागाना परगने पचभद्रे में है जिसको रावधूहडजीने बनायाथा दूसरा मंदिर रावजोधाजी नें जोधपुर के किले पर बनाया जो अब जनानी ड्योढ़ी में है ॥

नांगनेचियांजी का थान राठोडों के गावों में अकसर नीम के नीचे होताहै राठोड नीमके पेड को नागनेचियों का रूख समझ कर पालतेहैं कांटते जलाते नहीं ॥

पच्छम मारवाड के राठोड विशेष करके शाक्तिकहैं और पूर्व मारवाड के वैष्णव धर्म को ज्यादा मानते हैं मेडतिये राठोड कुल चतरभुज जी का इष्टरखते हैं और उनके नाम का पवित्रा पगडी पर बांधते हैं जो १ रेशमी सर पेच वालावंदाके तौर पर होता हैं और उस में कइ फुंदने लगे होते हैं इसीतरह जोधा ऊदात चांपावत और कूंपावत राठोड भी वैष्णव हैं और वल्लभ कुल संप्रदाय के गुशाईयों की कंठी बांधते हैं कुछ राठोड शैवभी हैं हनुमानजी गोगाजी पाबूजी मामाजी रामदेवजी रावत्रयां खेत्रपाल कालागोरा भैरों और जूझारोंकी भी जो बहादुरी करके लडाइ में काम आते हैं राठोंडों में पूजा होती है मर्दऔरत उनकी मूर्ति चांदी और सोने की वनाकर गले में पहनते हैं उस को फूल कहते हैं पच्छम मारवाड में वहुतराठोड पाबूजी औररामदेवजोका भी इष्ट रखते हैं पाबूजी राठोड थे १ चारण की गायें छुडाने के वास्ते जींदरावखीची से लडकर संवत १३२३ में काम आये उनका असली थान गांव कोलूमढ़ परगने फलौधीमें है और रामदेवजी तुंवर राजपूत थे ये वडे सिद्ध हुए और १ राक्षस को मारकर पोकरण वसाई इनका मंदिर गांव रामदेरे में पोकरन के पास है वहां हरसाल भादों के महीने में वडा मेला होता है

पच्छम मारवाड के राठोडों से पूर्व मारवाड के राठोड बहुत स्याने और शऊर दार होते हैं सरदारी और सफेदपोशी भी उनमें जियादा है ऊदावत करड मरड में और मेडतियेकरडावन में मशहूर हैं" जानराऊदा ने मरणने दूदा" मारवाडी ओखाणो यानी कहावत है

राठोड राजपूतों में बहादुर क़ौम है इसने पिछले ज़माने में बादशाहोंकी फोजों का खूब २ मुकाविला किया है अकबर बादशाह को बहुतसा मुल्क राठोडों की तलवार से ही फतह हुआ है आईन अकवरी में ६०००० सवार और २००००० पैदल राठोड लिखे हैं टाड साहिब कहते हैं कि अकवर को राठोडों की १००००० तलवार का ज़ोरथा

किसी राजपूत का बिडद कुछ है और किसीका कुछ लेकिन राठोडोंका बिडद तो "रण बंका" है जिस के मांयने लडाई में बांके के हैं

॥ दोहा ॥

वलहट बंका देवडा करतब बंका गोड

हाडा बंका गाढ में रणबंका राठोड

यथा

गरुडखगां लंका गडां मेरु पहाडां मोड
रुखांमें चंदनभलो राजकुली राठोड

सीसोदिया

सीसोदिया गहलोत राजपूतों की १ खांप है उदयपुर के महाराणाजी सीसोदिया हैं यहभी श्रीरामचंद्रजी के बेटे लव की औलाद में हैं पहिले लाहोर में रहतेथे वहां से बल्लभीपुर इलाके गुजरात में गये और बहुत बरसों तक राज करते रहे आखीरी राजा सिलादित्य था वहां एक दुश्मन के मुकबिले में मारागया उसकी रानी भागकर आबूके पहाड में आछुपी वहां उसके गोहा नाम एक लडका पैदा हुआ उसने ईडर में राज किया उसकी औलाद गहलोत कहलाई कइ पीढियों के पीछे बापा रावल राज छूट जाने से मेवाड के गांव सीसोदे में जारहे जहां एकलिंग महादेवजी से उनको राजा होने का बरदान मिला और उन्हों ने मान राज मोरी को मारकर चीतोड का राज संवत् ७७१ में लेलिया बापा रावल की औलाद सीसोदे में रहने से सीसोदिया कहलाई और जबही से इनमें एक लिंग महादेवजी की मानता चली आती है और ये मेवाड का राज इन्हीं का दिया हुआ समझते हैं राणाजी अपने को एकलिंगजी का दीवान मानते हैं और दीवानही कहलाते हैं

मारवारड में सीसोदिये मेवाड से आये हैं ज़ियादा जागिरें उन की परगने गोडवाड में हैं और वेराणावत कहलतो हैं

कुछपुरानी खापें गहलौतोंकी जो हुल आसायच मांगीलया गोहिल पीपाड और गहलोत-कहलाती हैं राणावतों के पहिले से मारवाड मे वस्ती हैं और हल खडती हैं

राजपूताने में कुल ७६७५ सीसोदिये गिने गये हैं इनमें ४१४८४मर्द और ३५३५९ औरतें हैं

कछवाहा

कछवाहा श्रीरामचन्द्रजी के छोटे बेटे कुश की औलाद हैं इनका दूसरा नाम कूर्मभी है जैसा राठोडों का कमधज है और ये दोनों नाम इन दोनो कौमोंके ज़ियादातरभाट औरचारणों की बनाई हुई किताबों में आते हैं

कछवाहे अयोध्या से रुहतास में गये रुहतास से नरवर में और नरवर से ढूढार में आये सो

अबतक वहां राज कररहे हैं इनका राज जयपुर के नाम से भी मशहूरहै इन कछवाहों की बहुत खांपें ढूंढार में आनेकेबाद फटी हैं इनमें शेखावतों की खांप सबसे बडीहै और बहुतसा हिस्सा इस रयासत का उनके नीचे हैं जिसको शेखावाटी कहते है ॥

शेखावतों का मोरसी आला (मूलपुरुष) शेखाजी शेखबुरहान नाम १ मुसलमान फकीरकी दुआसे पैदाहुआ था उसका नामभी शेखा रक्खगया और कईमुसलमानी बातेंभी उसके वक्तसे शेखावतोंमें होती चली आती हैं जैसे कि ॥

१ शेखावत सूरका और झटकेका मांस नहीं खाते ॥

२ बच्चेको कई बरसतक नीले कपडे पहिनाते हैं ॥

३ बालक का झडुला शेखबुरहान की कबर पर जाकर उतारते हैं ॥

४ बच्चे के गले में शेखबुरहान के नामकी बध्धी बांधते हैं ॥

दूसरी खांप कछवाहोंकी नरूका है जिसमें अलवर के महाराज हैं ॥

तीसरी खांप राजावत है जो आमेर की गद्दी की हक़दार समझी जाती है हालके महाराजा साहिब श्रीमाधवसिंहजी इसी खांप में से खोले आये हैं ॥

चौथीखांप नाथावतोंकी है यह आमेर के पटेल समझे जाते हैं राजके कामों में इनका दखल ठेट से चला आताहै कछवाहोंकी कुलदेवी जमवायमाता है जिसका मंदिर मांची रामगढ़मेंहै जैसे राठोड मंडोर का राज चावंडा देवीका और सीसोदिये चीतोड का राज एक लिंग महादेव जी का दिया हुआ समझते हैं वैसेही कछवाहे भी अपना आमेरका राज जमवायमाता का दिया हुआ मानते हैं और बहुत करके अपने बच्चों का झडुला भी जमवायमाता के थानपर उतारते हैं धरम कछवाहों का पहिले तो अमूमन वैष्णव था मगर अब महाराजा रामसिंहजी के राज से शिवजी की उपासना भी बढ़गई है ॥

सीतारामजी औरसूरजदेवता को भी कछवाहे पूजते हैं लडाई में सीतारामजीका हाथी जयपूर की फ़ौजके आगे रहताहै इसके वास्ते वहां यह कहावत है कि" लडनेको सीतारामजी लाडुखाने को मदन मोहनजी ॥

सूरज सत्तमी का त्योहार खास करके जयपुर में ही माहसुद ७ को होताहै और उसदिन जयपुरके महाराज सवारी करके सूरजके रथके पीछे चलते हैं ॥

राजपूताने में कुल १०६७०५ कछवाहे गिनेगये हैं इनमें ६८६७७ मर्द ३८०२८ औरतें हैं

कछवाहे जयपुरकी गद्दी को रामचंद्रजी की गद्दी समझते हैं और आपस में जयरुघनाथजी की करते हैं ॥

कछवाहों में नातरायत राजपूत नहीं होते जैसा कि मारवाड़के बाज़े रजपूतों में हैं और औरतें हाथ और कानमें चांदी नहीं पहनतीं चाहे सोना मिले या न मिले

तँवर

तँवर अपनी वंशावली पांडवों से मिलाते हैं तंवरों का राज दिल्ली में बहुत मुद्दततकरहा है और इसीसबबसे यह कहावत चली आती है कि "जब तब दिल्ली तंवरों की" और दूसरी कहावत यहभी है कि "कीली तो ढीली हुई तंवर हुए मतहीन" इसका किस्सा इसतरह बयान करते हैं कि एक तंवर राजा से ज्योतषियों ने कहाथा कि १ ऐसी पुल आती हैं कि जिस में खूंटी गाडने से आपका राज नहीं जावेगा क्योंकि वह खूंटी शेष नाग के मस्तक मेंजागडेगी राजा ने १ वडी कीली अष्ठधात की वनवाई जब वह पुल आई तो पंडितों ने उसको ज़मीन में गाडकर राजा को मुबारक बाददी कि अब आपका राज अचल होगया मगर राजा को यकीन नहीं आया और कहा कि मुझ को उखाडकर बताओ और ज़िद करके कीली उखडवाई तो उस की नोक खून से भरीहुई थी पंडितों ने कहादेखलीजिये यह शेष नाग का खून है राजाने शर्मिंदा होकर उनसे फिर गाड़ने को कहा तो उन्हों ने जवाब दिया कि अब वह समय निकलगया कि कीली फिर शेष नाग के सिरपर जाकर गड़े॥ "कीली ढीली" होने की कहावत उसी दिन से चली है.

कोई कहते हैं कि यह कीली वासुकि नाग के सिर पर गाडी गई थी और उस के ऊखेड़ने से तँवर उखडगये चौहानों ने उनसे दिल्ली का राज लेलिया तँवर दूसरे मुल्कों में निकलगये कुछ जीलूपाटण में जाकरबसे जिससे उस इलाकेका नाम तँवरावाटी हुआ जो अब राज जयपुर के नीचे है वे यहां बहुत अरसे तक आपस में लड़ते रहे इस लड़ाई का सबब यह बतातेहैं कि उन की कुलदेवी ने कहदियाथा कि जितने कटोगे उतनेही बढोगे.

मारवड़ में तँवर तँवरावाटी से आये हैं यहां रामदेवजी तँवर बड़े करामाती हुए जो रामशाह पीर कहलाते हैं इनकी पूज मारवाड़, मेवाड़, और मालवे, में भी होती है हरसाल भादों के महीने में एक बड़ा मेला गांव रामदेरे इलाके पोकरण में जहां उनकी समाधि है हुआ करता है

उसमें इन मुल्कों के बहुत जात्री जाते हैं जात्रियों में जियादा नीच जातिके लोग होते हैं जिससे यह ओखाण मशहूर है कि "रामदेवजी को मिले सो ढेड ही ढेढ" तँवरों की खांपें जाटोडा और केलोड वगेरा हैं

मुसलमानी राजमें यह लोग कसरत से मुसलमान किये गये थे दिल्ली की तलहटी में देसी मुसलमान विशेषकर के तँवर हैं

तँवर मारवाड में नौकरी या खेती करते हैं जमीदारी इनकी यहां नहीं है और न कोई बडा जागीर दार है इनकी रीत रसम भाटियों से मिलती है.

राजपूताने में तंवर २१३५८ हैं इनमें १३१३२ मर्द और ८२२७ औरते हैं

भाटी

भाटी अपनी परमपरा चांद से उसी तरह मिलाते हैं जिसतरहसे कि राठोड़ सीसोदिये और कछवाहे सूरजसे

चंद्र वंशियों की पुरनी शाखायें कौरव पांडव और यादव थीं महाभारतकी मशहूर लडाई इसी खानदान में आपसकी ईर्षा से हुई थी जिसमें कौरव पांडव का खातमा क़रीब तमाम के होगया था

कौम यादव जिसके अधिष्ठाता श्री कृष्णजी थे महाभारतके पीछे आपस में लडकर कटमरी और थोडेसे आदमी जो जीते वचे वे द्वारिका से काबुल ग़ज़नी और बलख़ बुखारा की तरफ चलेगये वहां बहुत मुद्दतोंतक उनका राज रहा फिरतुर्कोंने जोर पकडकर उनको पंजाब की तरफ हटादिया यहांभी बहुत मुद्दत तकरहे बल्कि यह शाख भाटियों की पंजाब में ही भटनेर में रहने से पैदा हुई है भटनेर से तनोट तनोट से देरावर और देरावर से जेसलमेर आये जहां अब उनकी राजधानी है

पहिले कुछ हिस्सा मारवाड का भी इनके पास था वह राठोडों ने लेलिया और अब जो भाटी जागीर दार मारवाड में हैं उनको चाकरी और सगपन से जागीरें मीली हैं

इन जागीर दारों में जियादा नामी जेसा उरजनोत और रावलोत खांप के भाटी हैं

जेसा भाटियों में गोयंदास बहुत नामी हुआहै वह महाराजा सूर सिंघजी का परधान था उसने राजका नया इन्तजाम किया था जिसके बाबत यह कहावत मशहूर है

गोयंदास गरजयो सूराहंदे बारे

कइ थप्पे कइ ऊथपे मेत्रासामारे

रावलोत भाटी भाटियों में पाटवी खांप है और इसी सववसे ये लोग अपनी वेटियों के डोले राजों को लेजाकर देते हैं और उसके वदले में जागिरें लेते हैं इसीलिये उनके गनायत उनको बाई मंगा कहते हैं

ऊपर लिखी हुई ३ खांपों के सिवाय केलण जसोड़ वुद्ध और वरसिंह वगेरा खांप के भाटी भी मारवाड़ में हैं

भाटी सूरनहीं खाते हैं इनमें सगाई छोडने का अखतियार बेटे के बाप को है बेटी का बाप नहीं छुडा सका नाता इसकोम में नहीं होता औरत कानों में चांदीन हीं पहनती बाकी रीति रवाज दूसरे राजपूतों से मिलताहुआ है

राजपूताने में भाटी ५५३६६ हैं इन में ३१४९३ मर्द और २३८७३ औरतें हैं

पँवार

पँवारों ने अग्निवंशी राजपूतोंमें जियादह नाम पाया है और राज भी इनका हिन्दुस्थान में जियादह रहाहै और राजा महाराजा भी इनमें विक्रम और भोज जैसे वडे २ नामी और दातार हुए हैं और इसी लिये इनके बाबत यह कहावत चलीआती है ॥

पृथ्वी वडा प्रमार पृथ्वी परमारांतणी

एक उजेणी धार दूजो आबू बेठणो

यानी पृथ्वी में पँवार बड़े हैं पृथ्वी पँवारों की है उनकेबैठनेकी जगह एकतो उज्जेन और धार है और दूसरे आबू का पहाड है ॥

मारवाड में पँवार आबू से आये हैं धरणी वाराह वहुत वडा पँवार राजा मारवाड का था उसने अपने राज के ९ हिस्से करके अपने भाइयों को वांट दिये थे नवकोट मारावाड का नाम जवही से निकलाहै जिनकी तफ़सील यहहै ॥

छप

मंडोवर सावंत हुओ अजमेर सिंधसू ॥

गढ पूगल गजमल्ल हूओ लुद्रवे भान भू ॥

आलपाल अर्वुद् भोज राजा जालंधर ॥
जोगराज धरधाट हुओ हंसू पारकर ॥
नवकोट किराडू संजुगत थिर पँवारां थरपिया ॥
धरणी वराह धर भाइयां कोट बांट जुअ २ किया ॥

अर्थ

धरणीवराहने पँवारोंकी जमीन में ९ कोट थापकर जब अपने भाइयों को अलग किया तो मंडोर सामंत को अजमेर सिंधु को पूंगलगजमलको लुद्रवा भानको आबू आलपालको जालंधर याने जालोर भोजराज को पारकर हंसराजको इसतरह एक एक कोट बांट दिया और कोट किराडू अपने पास रक्खा ॥

इस वटवाडे से पंवारों का राज टुकडे २ होकर कमज़ोर हो गया भाटी चोहान पडिहार और राठोडों वगेरा ने एक एक करके नवोंकोट उनसे छीनलिये अब पंवार मारवाड में रैयत की तौरपर रहते हैं और खेतीवाडी कर के अपना गुजारा करते हैं और वे इतनी खांपोंके हैं

१ पंवार
२ भायल ये पहिले सिवानें में राज करते थे
३ सोढा जिनका ऊमरकोट और थर पारक में राज था
४ सांखला जो पहिले जांगलू में राज करते थे
५ ऊमट जिनका भीनमाल में राज था
६ कालमा जिनका सांचोर में राज था
७ कावा जिनका रामसींण में राज था
८ गल ये पालणपुर की तरफ राज करते थे
९ डोड

पँवारों की क़ौम में आम रजपूतों के रिवाज से कोई वात जियादा नहीं है अलबत्ता जो वहुत गरीव हैं और जिन के पास जमीन भी थोडी है उन में वेवा औरतों का नाता गोडवाड जालोर साचोंर और मालानी की तरफ होता है

झाला

झाला मकवाणा रजपूतोंकी साखाहै कोई २ लोग मकवाणों को पँवारोंकी साखा समझतेहैं ॥

झाला पहिले कच्छदेश में रहते थे करनतीगढ़ में इनकी राजधानी थी वहां के राजा केसरने सिंध के राजा हम्मीरसूमरासे छेड़ करके उसकी चढ़ाई अपने ऊपर कराई जिसमें वोहखुद मारागया और उसका बेटा हरपाल मकवाणा भागकर गुजरात में आया गुजरात के राजा करण सोलंखी ने जो हरपाल का मांसियात भाई था उसको १८०० गांव पाटनके पास जागीर में दिये वहां हरपाल ने गांव पाटड़ी में अपनी गद्दी थापी उसके ३ बेटे सोडा वगैरह हुए ये डोढ़ी के बाहर खेल रहेथे कि १ मस्त हाथी जंजीर तुडाकर इनकी तरफ दोड़ा उस वक्त इनकी मांने अंदर से हाथबढ़ाकर इनको पकड लिया और अपने पास खेंचकर हाथी की फेंट से बचा दिया पकडनेको गुजराती जबानमें झालना कहते हैं इसवास्ते उसदिन से लडकोंका नाम झाला हुआ और इनकी औलाद भी झाला कहलाई और जो इलाका हरपाल को राजा करणसे मिला था वह झालावाड कहलाने लागा जहां अब इनकी हालकी राजधानी हलवद है और उसीजगहसे ये लोग मारवाड मेवाड और हाडोती में आयेहैं ॥

राव माल देवजी के राज में झाला जेता एक वडा जागीरदार मारवाड का था और फिर वो नाराजहोकर मेवाडमें चला गया जहां अब उसकी औलाद से बडे २ जागीरदार हैं मगर मारवाडमें कोइ झाला सरदार नहींहै कुछ फुटकर झाला और मकवाणा रजपूत किसी किसी गांवों में रहते हैं मकवाणों में नाता भी होता है

राजपूताने में झालरापाटण के राजा साहब झालाहैं इनके पडदादा जालिम सिंह कोटे के कामदार थे जब अंगरेजी सरकार ने सन् १८१७ ई० में पिंडारों के ऊपर फोजें भेजी तो उन्हों ने राज कोटे की तरफसे बहुत कीमती मददकी जिससे सरकारने खुशहोकर कोटेके अहदनामेमें यह शरत लिखीदि कि कोटे की कामदारी पीढी दरपीढी जालम सिंह के खानदान में रहगी इसपर बहुत से लडाइ झगडे कोटे के महाराव किशोरसिंह से और राज राणा जालिम सिंह से हुए जिनेंम सरकार अंगरेजीनें हरदफे जालिमसिंहकी मदद की आखिर संबत्१८९५ मेंजबमहाराव रामसिंहजी ने जालिमसिंह के पोते मदनसिंहकोकामदारी से दूरकरना चाहा तो सरकार अंगरेजी ने तीसरा हिस्सा राज कोटे का मदन सिंह को दिलाकर अलहदा रईसबना दिया मदन सिंह ने झालरा पाटण में अपनी गद्दी कायम की

झाला और मकवाना मारवाड में खेती और नोकरी करते हैं

मकवाना अपना गोत्र मारीच बताते हैं धर्म वैष्णव और इष्ट शिवजीका है बामण माता वं पूजते हैं

चोहान

चोहान एक मशहूर और ताकतवर राजपूत कोम हिंन्दुस्थानमें थी यहांतक कितवरोंके पी दिल्लीकी बादशाही चोहानो में रही है और उन से तुरकोंनेली

मारवाड में भी बहुत जगह चोहानों का राज रहा है जिसकी तसदीक पुराणे सिक्कों तां पत्रों और पत्थर पर लिखीहूई प्रशस्तियों से होती है और अबभी मारवाड में चोहाण ज्यादा और बहुनसी ज़मीन उनके पास भोमीचारेकी है और कुछ नोकरी में दरबार से दी हुई है

चोहानों की इतनी बडी २ खांपें मारवाड में हैं

१ चोहान

२ नीमराणा ये अपने को चोहानों में पाटवी पृथ्वीराज कि औलाद से समझते

३ नाडोला जिसका राज पहिले नाडोलमें था

४ सोनगरा जिसका जालोर में राज था

५ देवडा जिसका राज अब सिरोहि में है

६ साचोर जिसका राज साचोर में था

७ मोयल जिसका राज लाडणू में था

८ बालिया जिसका राज रायपुरमें था

९ जोजा जिसका राज जोजावर में था

१० पावेचा जिसका राज पावे में था

११ मादरचा जिसका राज देसूरी में था

१२ बोडा

१३ हाडाजिसका राज अब कोटाबूंदी में है

१४ खीची जिसका राज जायल में था

१५ टाक जिसका राज नागोर में था

१६ निरवाण जिसका राज खंडेले में था

१७ पूरबिया

और बहुतसे चोहान बादशाही राजमें मुसलमान भी कियेगये थे जिनमें क्यामखानी और खान ज़ादे ज्यादा मशहूर हैं इसके सिवाय बहुतसी छोटी जातें हिन्दू मुसलमानों की अपने को चोहान बताती हैं ॥

चोहानों का वाशिष्ठ गोत्रहै कुल देवी आसापुरा और धर्म वैष्णव है बाज़े शिवजी को भी पूजते हैं ॥

गोगा चोहान चोहानों में देवता हुआ है जिसको सांप काटता है उसके गोगा के नामका डोरा बांधते हैं जिसको तांती कहते हैं गोगा का थान जिसमें सांपकी मूरति पत्थरमें खोदीहोती है अकसर गांवोंमें होताहै और इसी वास्ते यह मारवाडी ओखाना चला है कि गांवगांव गोगो ने गांव गांव खेजडी ॥

गोगाके थान अकसर खेजडी के नीचे होतेहैं और गांवमें जिसके घरसांप निकलताहै वह गोगो जीको याद करके दूधका छांटा डालता है और मेहबरसने पर जिसदिन हल चलाना शुरू करतेहैं गोगा जी के नामकी राखी जिसको गोगा राखडी कहते हैं ९ गांठें देकर हल और हाली के बांधते हैं और बार २ यह पढ़ते हैं "हली बालदी गोगो रखवालो"

गोगा चोहान को बाजे मुसलमान भी गोगा पीर के नामसे मानते हैं ॥

भादों सुद ९ को जो गोगा नम कहलाती है गोगाजी का पूजन होता है उस दिन कुम्हार मिट्टी की मूरत घोडे पर बनाकर करसों के घर लेजाते हैं उनको कुछ नाजऔरखाना मिलता है जाट भादों वद ९ कोही गोगा नम मानते हैं और उस दिन बडा उच्छव करते हैं ॥

साचोर वगैरह पच्छम मारवाड के चोहानों की नीचे लिखी हुई खांपों में नाता होता है ॥

बोडा, सोढल, खीची, साईंचरा, सेफटा, देवडा, निरबाण, रतपाल, वालिया, सुरताणचा, सेजपाल, ओजा, बीयोल भूपा, वगैरह मगर पूरब मारवाड के चोहान नाते को सखत ऐब गिनते हैं—पच्छम मारवाड के चोहानों में भाईबंटा भाईयों के हिसाब से भी होता है और लुगाईयों के हिसाब से भी—और ये लोग देसी मुसलमानो से ज्यादा छूत छात नहीं रखते हैं

चोहान राजपूताने में १०१८२० हैं ५८४१७ मर्द ४७७००३ ओरतें

सोलंखी

इनका दूसरानाम चालुक्यभी है इनका राज पहिले गंगाजी के किनारे शहर सोरों में था फिर टोंक टोडा गुजरात और दक्खन में हुआ गुजरात के सोलंखी राजों में सिद्धराजजयसिंह और दक्खन में विक्रमांक देव जियादा मशहूर हुए हैं

सोलंखियोंकी एक साखा बाघेला हैं उसका भी राज सौलंखियों के पीछे गुजरात में रहा है वहांका आखरी राजा करण वाघेला था उससे दिल्ली के बादशाह अलाउद्दीन खिलजी ने गुजरात लेली उसवक्त सोलंखी गुजरात छोंडकर राणक पहाड इलाके मारवाड में आरहे वहांसे भीनमाल और वाली में पहुंचकर राज करने लगे मगर अब सिर्फ उनकी भोम इन परगनों में रहगई है कुछ सोलंखी साचोर जसवंतपुरा वगेरा परगनोंमें भी हैं और इन में नाता भी होता है

सोलंखियों की खांप हलावत मोचाला और बाघेला वगेरा मारवाड में हैं

पूरब में रींवांके महाराज बघेला हैं

सोलंखी वैष्णव धर्म को मानते हैं और बहुत से दारुमास का पूरा परहेज रखते हैं बाकी रसम रिवाज इनके मारवाड के दूसरे राजपूतों से मिलते हुए हैं

राजपूताने में सोलंखी १३५५५ हैं इन में ७३४८ मर्द और ६२०७ औरतें हैं

पडिहार

पडिहार भी मशहूरतो अग्नि बंशीही हैं मगर जोधपुर के कोटमें से १ पुराना लेख राजा बाउक पडिहार का पत्थर पर खुदाहुआ १००० वरस पहिले का निकला है

उसमें पडिहारों को ब्राह्मण हरिश्चंद्रकी औलाद लिखा है

पडिहारों का राज पहिले मंडोर में था नाहरराव पडिहार मारवाड में बहुत मशहूर हुआ है उसने पुष्करजी का ताल खुदाया था और सूर खाना छोडा था सो अबतक पडिहार नहीं खाते हैं

संवत १३५० के करिब दिल्ली के बदशाह जलालुद्दीन खिलजीने मंडोर पडिहारों से लेलिया मंडोर के मुसलमान हाकिम राजपूतों पर बहुत जुल्म करते थे इससे ईदा राजपूतों ने जो पडिहारों की १ खांप है तुरकों को मारकर मंडोर लेलिया और राव चूंडाजी राठोड को बेटीके दायजे में देदिया इस की साख २ दोहा

चूंडा चंवरी चाढ दीवी मंडोदर डायजे
ईंदातणो उपगार कमधज कदेन बीसरे

मारवाड में ईंदे अब पडिहार से जियादा हैं दोंनों का धर्म वैष्णव है कुल देवी चामुंडा माताहै वे नाहर राव पड़िहार को भी पूजते हैं इनमें बेवा औरतों का नाता नहींहोता है इनकी रसम रिवाज राठोडों और भाटियों से ज्यादा मिलते है इनमें से कुछ लोग नीच जात में भी मिलगये हैं ढेढों में लखणया ढेढ लखाजी ईंदा की औलाद से हैं

ईंदों का १ अजब खयाल यहहै कि उनकै ऊपर बिजली नहीं गिरती इसको वे अपने दादा खाखूजी का वरदान मांनते हैं जो बडे करामाती थे दूसरा खयाल यहहै कि उनके गांवों में मरी नहीं पडती यह उनकी कुलदेवी चामुंडा माता का वरदान है।।

रापूताने में ११६६४ पडिहार हैं इनमें ५६२६ मर्द और ५७६८ औरतेंहैं।।

फुटकररजपूत

ऊपर लिखे राजपूतोंके सिवाय मारवाड में कुछ राजपूत और भीहैं जिनकी गिनती ५०४७५ है ये फुटकर खांप कहलाते हैं और खेती करते हैं तफसील इनकी यहहै।।

१ चावडा २ पडियारया ३ डावी ४ जेठवा ५ दईया ६ गोड

चावडा

ये गुजरात की तरफसे आये हैं कोई इनको पँवारों में से समझते हैं

पडियारया

ये पूरवकी तरफसे आये हैं कहते हैं कि भजन ऋषिका बेटा पडीयारिया धनथल में हुआ धनथल से राजा कपिल अयोध्या में आया का का बेटा पहलाद पहलाद का बलम और बलम का अनुर हुआ जिसके खानदान में से अनूराज अयोध्या छोड़कर कशमीर गया इसकी औलाद में से राजा जयंथ भीनमाल में आया उनका बेटा लखमीवर और लखमीवर का प्रयाग हुआ उसने सूंधा पहाड के ऊपर लोहागल में जाकर अपना राजस्थान सम्वत १३८७ में बांधा उसका बेटाचाउदे हुआ उसके चार बेटे हुए।।

१ देवल जिसकी औलाद में लोकणे और ऊछमत वगैरह के देवल हैं।।

२ कूकड जिसके वंश वाले कुकड कहलाते हैं।।

३ गूंदा जिसके खानदानमें गूंद राजपूत हैं ॥

४ भीमा जिसके भारडियाहुऐ ॥

इन चारों खांपों में से सिवाय देवल के और सब में बेवा औरत का नाता होता है इन का साम गोत्र है यह अपने को रघुवंशी भी कहते है और सूंधा माताको पूजते हैं ॥

डाबी

डाबी राजपूतों का ठीक हाल मालूम नहीं होता मगर यह बहुत अरसे से मारवाड में हैं जब खेड में गोयल राज करते थे जोएक शाखा गहलोतों की है तो डाबी उनके परधान थे राव आसथानजी ने इनकी मिलावट से गोहिलों को मारकर खेड का राज लियाथा इन्हों ने उनसे कहा था कि गोठ में हम गोहिलों के डाबी तरफ बैठेंगे सो तुम इसपते से गोहिलोंको पहिचानकर मार डालना रावजीने ऐसाही किया "डाबी डावा न गोहिल जीवणा" का ओखाना उस दिनसे चला है डाबियों के पास अब ज़मीन नहीं रही है और इनकी २खांपे डाबी और करड है ॥

जेठवा

ये बहुतथोडे हैं काठियावाड से आये हैं और डाबियों के माफिक हल खड़कर गुजारा करते हैं ॥

दईया

कोई २ लोग इनको राठोडोंकी १३॥ साखों में से आधी साखा समझते हैं इनका राज पहिले जालोर और परवतसर में था अब ये छडे बिछडे कहीं २ रह गये हैं जालोर का पुराना किला दईयों का बनाया हुआ है

गौड

ये चन्द्रवंशी हैं गौड देश में रहने से गौड कहलाये और वहीं से मारवाडमें आये और यहां इनका राज पहिले मारोठ में था और इसी सबबसे वह परगना गोडाटी कहलाता है गौड़ अब खेती करते हैं और मजदूरी भी ॥

राजपूतों की चालचलगत

मारवाड के राजपूत खूब सूरत लंबे ऊंचे पूरे ओर मजबूत होते हैं सब ढाढी रखते हैं अव्वल

दफे डाढी छंटाने की बडी खुशी करते हैं जो डाडी के ऊपर बीच से छांटी जाती है मारवाड में हरेक हिन्दू को डाढी छटांना पड़ता है जिसकी डाढी छटी हुइ नहीं होती उस को मुसलमान कहकर चिडाते हैं क्योंकि मुसलमान डाढी नहीं छटाते

डाढी रखने का मारवाड में आम रिवाज है मगर जो राजपूत फोज में भर्ती हैं उन को डाढी रखने का हुक्म नहीं है इससे वे नहीं रखते

मिजाज भी उनका सीधा होता है अशराफत मिलनसारी की बहुत बातें उन में पाई जाती हैं टरीपन बहुत कमहोता है जबतक कि कोई इनको नहीं छेडता यह भी किसी की छेड नहीं करते

पहिले बहुत राजपूत कमी आजीवका से चोरी धाडा भी करते थे मगर अब राजने उनका पूरा २ बंदोबस्त करदिया है जिस से सब खेती और नोकरी पर लग गये हैं

दरबार में अब देसी राजपूत ही फोज में भरती होते हैं सरदार रिसाले में खांप २ के इसकोडरन हैं जिनको श्री मुसाहिब आलाने पूरा सिपाही बनादिया है

राजपूतों में इज्जत

राजपूतों में इज्जत ३ बातों से समझी जाती है

१ जमींदारी

२ औरतों का परदा

३ अच्छे सगपन

जिस के पास जमीन नहीं होती और जिसकी औरतें कामकाज के वास्ते बाहर निकलती हैं और जिस के सगपन गिरेहुए होते हैं उसका कुछ दरजा नहीं होता जमीन की बात सबसे बडी है जिस के पास जितनी जियादा जमीन हो उतनी ही जियादा उसकी इज्जत है परदा और अच्छा सगपण भी जमीनसे ही होजाता है इसीलिये राजपूत जमीन की बड़ी कदर करते हैं हर बहाने से उसके लेने की हर रखते हैं और उसके वास्ते मरना और मारना अपना फरज समझते हैं वे कहतेहै कि "राजपूत की जातही जमीन है जो यह न होगी तो हम कुछ नहीं होंगे हम इसीसे ठिकाने बैठे ठाकुर बाजते हैं" जिसके घर जमीन है उसके पास सबकुछ है जिसको कल्पवृक्ष और कामधेनू कहते हैं व " यही जमीन है इसको बगेर मरे और मारे नहीं छोडते

॥ दोहा ॥

घरजातां धरम पलटतां तृया पडनतां ताव
तीन दिवस येमरण रा क्या रंक क्या राव

राज जाता रहता है तो राजपूत भोमिये होकर ही उस जमिन में रहते हैं मगर उसको न छोडते और यही सवव है कि हिन्दुस्तान में सव कौमों से जियादा राजपूतों के पास जमीन है औ राजा महाराजाभी जियादा राजपूतही है मुसलमान जमीदारों में भी राजपूतहि जियादा हैं

जमिन के वास्ते विखा

राजपूत जमीन लूटजाने के पीछे वारोठिये होकर लूटमार करने लगते हैं उसको विखा कह हैं मारवाड में राठोंडो ने जव कि ओरंग जेव ने मुलक खालसे करालियाथा वडा विखा किया १ ऐसेही मेवाड में रांणा प्रताव सिंहका विखा मशहूर हैं

पिछले वक्तों में विखे वहुत हुआकरते थे और उन से कुछ न कुछ गई हुई जमीन हा आजाती थी

सगपण

राजपूतों में सगपण २ तरह के होते हैं एक इकेवडा दूसरा दोवडा इकेवडा तो यह किसी राजपूत की वेटी लेतो लेते हैं मगर देतेनहीं और दोवडा वह कि लेतेभी हैं और देतेभी हैं य वरावर वालों के साथ होता है इकेवडे सगपण में वेटीवाले अकसर डोला लेजाकर भी व्याव क देते हैं और खांडे से भी फेरे होजाते हैं क्योंकि वींद उनके घर नहींजाता अपना खांडा भेजदेता जिसके साथ फेरे होकर वींदनी का डोला आजाता है

सगपण में राजपूत सिर्फ अपना गोत टालते हैं सास जमाई एक गोत के होजाते हैं गोत औ खांप एक ही समझी जाती है

आंटे सांटे की सगाई भी राजपूतों में होती है यानी जिस घर में वेटी देते हैं वदले में उसी घ की वेटी लेभी लेते हैं और वेर भी वेटी देने से दूर होजाता है पहिले जो लडाई झगड़े बहु हुआ करते थे ओर आपस में वैर पड जाते थे तो इसीतरह से मिटाये जाते थे कि जिसके जि ने आदमी वरावरी के हिसाव से जियादा मारे जाते थे उस को ओर उसके भाई वंदो को उ नोही लडकियां देकर दूसरी तरफ वाले हेत करलेते थे

राजपूतों के छोटे २ वैर तो आपस में एक दूसरे के हाथ से अफीम पीलेने और वडे २ वै

बेटी देने से दूर होजाते हैं

औरतों की इज्जत

. राजपूत औरतों की इज्जत करते हैं सुसराल में औरत का नाम नहीं लिया जाता उसकी जात का जो नाम होता है वही लेते हैं जैसे चोहानजी तंवरजी भट्याणीजी और राणावतजी वगेरा ॥

राज़पूत औरतें परदे और मरजाद की बहुत पाबंद होती हैं बडे २ खानदानों में तो बाजारी औरतें भी बहुत कम जनाने में जाने पाती हैं वहां बहुत नजदी की भाई बंदोंसे भी परदा कराया जाता है

पिछले दिनो में लडाई ओर सती होने के वास्ते औरतों का परदे से बाहर नीकल आना एब नहीं समझा जाता था

परदा

ठाकरों और सरदारों में तो कि जिनके यहां लोंडियां बांदियां काम केरने को होती हैं पूराही परदा होता है मगर गरीब और हल खड़ राजपूतों की औरतें पानी भी लाती हैं और अपने मर्दों को रोटी देने के वास्ते खेतों में भी जाती हैं जो वह ऐसा नकरें तो उनका काम नहीं चले नोकरी पेशा राजपूतों के यहां भी परदा होता है

पेशा

हिन्दुस्थान में राजपूत सबजगह सिपाही पेसा हैं और उनकी नामवरी भी इसी पेशे से है इलम पढने की रवाज उनमें बहुत हीकम है १०० में १० भी अपना नाम नहीं लिखजानते कागज लिख पढलें ऐसे राजपूत १०० में दोचारही होते हैं और पंडित तो १००० में एक भी न मिलेगा वे पढने लिखने सेयह समझते हैं कि राजपूती और बहादुरी जाती रहती है हां घोड़े की सवारी बंदुकलगाना और बरछेती वगेरा कुछ सीखते हैं मगर पहिले जमाने के बराबर नहीं क्योंकि पहिले तो काम पड़ाकरता था अब अमन चेन होजाने से जो लडाई भिडाई का जमाना नहीं रहाहै तो रजपूत भी अपनी पुरानी सिपेगरी भूल गये हैं उनकी वे तलवारें और बरछियां जो हमेशा मैदान जंग में चमका करती थीं काट में डटी पड़ी हैं

इनकी लडाई का ढंग जो तवारीख से मालूम होताहै यहथा कि जब दुशमन सामने आत

था तो पहिले उसके तोपखाने पर घोडे उठाते थे यातो तोपों को छीन कर आगे वढजाते थे या पीछे आकर अपनी फौज में हलचल डालदेते थे ॥

राठोड़ मैदानकी लड़ाई को हमेशा पसंद करते हैं और बादशाही फोज में तो हिरोळ यानी सब से आगे यही रहते थे और किलेकी लड़ाई भी हरजगह अच्छी लड़े हैं ॥

पूर्व मारवाड़ के रजपूत मैदान की लड़ाई में और पच्छिम के किले कि लडाई के वास्ते ठीक समझे जाते हैं

समझ बूझ रहन सहन

पूर्व मारवाड के रजपूत समझबूझ में पच्छिम मारवड़ के राजपूतों से अच्छे होते हैं उनकी चाल ढाल पोशाक और रहन सहन उजली और अमीराना होती है इधर सरदारों के ठिकाणोमें भी पच्छिम से जियादा रोनक और सरसबजी नज़र आती है मारवाड के बडे २ सरदार जियादा तर जोधपुर से पूर्व में ही हैं

पच्छिम और उत्तर के राजपूत जो थली में रहते हैं सीधे सादे होते हैं वे जियादा करड मरड और चुना चुनी नहीं जानते घर और ठिकाणे भी उनके वैसे रोनकदार नहीं होते वे उमदा मकानों की जगह घास फूंस के झोपडों में अपनी जिंदगी के दिन ओछे करते हैं थली में पानी कम होने से सफेद कपडे भी नहीं पहन सकते जिससे मेली पिछेवडी वाले कहलाते हैं यह मेली पिछेवडी पाली के परे वाली की सरहद से शुरू होकर शेरगढ फलोधी और जोधपुर के प्रगनों में होती हुई नागोर की सरहद तक चली गई है जहां आदमी मैले कपडे पहने रहते हैं

भाई बंटा

घर के धनी, खेती करने वाले, भोमिये ओर भोमीचारे वाले, राजपूतोंमें तो सब भाई बाप की जमीन जायदाद को बराबर २ बांट लेते हैं और कहीं २ औरतों के हिसाब से भी बंटहोते हैं जैसे १ राजपूत के ५ बेटे २ एक औरत से और ३ एक औरत से हैं और उसके खानदान में "लुगाईयों के लारे" बंट होने का दस्तूर है तो उसकी "थित बित" यानी जमीन और माल असबाब का आधा बंट तो २ भाईयों को मिलेगा और आधा ३ भाईयों को मगर जागीरदारों में बडा बेटा जागीर का मालिक होता है और छोटे को खेत बेरे गुजारे के वास्ते मिलते हैं

खोला

खोले का राजपूतों में आम रिवाज है जो औलाद नहो तो अपने नज़दीकी भाई भतीजों में से खोला लेते हैं और वाजी सूरतों में दूर का भाई भतीजा भी खोले आसक्ता है भाई वंदो को इकठा करके उनके रूवरू पगडि वंधादेने और पंचों को अमल पिलादेने से खोला सही होजाता है ज़ियादा मज़वूती करें तो लिखत लिखकर भाईयों की साखें डलवादेते हैं

खावंद के पीछे औरत भी खावंद के भाई वंदो में से खोला लेसकती है औरत न लेतो मौसर के दिनों में भाई वंद भी किसी नजदीकी रिश्तेदार को खोलाठेरा कर पगडी वंधा देते हैं

खोले आनेवाले का हक़ पेट के बेटे के वरावर होजाता है और जो खोला लेने के पीछे खोला लेनेवाले के औलाद होजाती है तोभी खोलायत का हक नहीं माराजाता उसको भी उस औलाद के वरावर वंट मिलता है

मारवाड में खोले के वहुत मुकद्दमे हुआ करते हैं और उनके फेसले करने का उमदा तरीक़ा पंचायत हैं कि पंचायत से ऐसे मुक़द्दमे अच्छीतरह निवड जाते हैं

राजपूतों के वोहरे और कामदार

राजपूत अकसर महाजनों के करजदार रहते हैं हिसाव किताव नहीं जानने से हमेशा करजे में डूवे रहते हैं क्योंकि महाजन लोग उनके ऊपर अपना करजा वाजवी और वेवाजवी वढाते रहते हैं

यह ही हाल जागीरदारोंका भी है कि वेभी वहुतही कम हिसाव किताव जानते हैं और अपने कामेतियों के मुहताज रहते हैं जो उन्हीं के सूते यानी महाजन होते हैं कई वरस पहिलेतक ये जागीरदार इनसे सिर्फ एक ही तरीका हिसाब समझने का जानते थे कि दूसरे तीसरे वरस इनका घर लूट लेते थे मगर आजकल राजके डरसे ऐसा नहीं कर सक्ते हैं

करजदार जागीरदारों को महकमे हैसयत से वडा फायदा पहुंचा है जिसमें उनक करजे की तहकीकात होकर सलीका वंधजाता है

अफीम और शराव

राजपूतों में अफीम वडी जरूरी चीज समझी जाती है कि जिसकी जरूरत हरेक मौके पर उनको

होती है औलाद पैदा होने सगाई व्याह लडाई और गमीमें अफीम बांटते हैं और गालवां करके लोगों को पिलाते हैं इन सबसे बढकर बात यहहै कि किसी आदमी से चाहे कितनी ही अदावत हो मगर जब उसके हाथ से अफीम लेलें तो बस उसी दम सफाइ होजावेगी

राजपूत अफीम के नशे को मरद नशा कहते हैं जो शराब के नशे से जियादा ठेरता है और उस के बहुत बखान करते हैं

दोहा

गज गाहण डाहण गढां हाथयां देण हमल्ल
मतवालां पौरष चढे आयो मित अमल्ल

अमल लेकर चमरपोश हुक्का पीते हैं जिसकी चिलम में बहुत सी आग तंत्राकू भरी हुइ होती है चमरपोश हुक्केकी भी वडी महिमा है

दोहा

अस चढना असउ चकना नित खाना खिर गे.श
जग मांही जीना जिते पीना चम्मर पौश

यथा

सिरपर बंधा न सेवरा रण चढ किया न रोस
लाहा जग में क्यालिया पिया न चम्मरपोस

अमल का चाला उत्तर पच्छिम मारवाड में और दारु का पूरब मे जियादा है

जियादा सरदार और जागीदार शराब से ही मरते हैं जिसका पीना वे बचपने से ही गोले गोलियें की खराब संगत में पडकर सीख जाते हैं फिर ढोली डाढी रंडी भडवे शराब की तारीफ के गीत गागा कर उन के नशे को दिन २ वढाते रहते हैं जैसे

दोहा

दारू पियो रंग करो राता राखो नेण
वेरी थारा जल मरे सुख पावेला सेण
दारू दिल्ली आगरो दारू बीकानेर
दारू पियो साहिबा कोई सौ रुपया रो फर

दारू तो भक २ करे सीसी करे पुकार

हाथ प्यालो धन खडी पीओ राज कुमार

बाजे सरदार ऐसे भी होते हैं कि शराब को नापतोल कर एक अंदाजे से पीते हैं और जियादा पीने के नुकसानों से बचकर उसके फायदों को गृहण करते हैं

शादी गमी की रसमें

सगाइ

सगाई बींद बींदनी के बाप आपस में मिलकर या किसी भाट चारण प्रोहित या और आदमी को बीच में डाल के ठेराते हैं जब ठहरजाती है तो बींदनी का बाप बींद के वास्ते अपने मकदूर के माफिक टीका भेजता है जिस में गहना कपडा और नारयल वगेरा चीजें होती हैं और बडा आदमी होतो घोडे और रुपये अशरफी भी भेजता है बींदके चाकरों और कमीनों के लिये अलग रोकड़ और कपड़ा आता है और जिसकी जियादा गुंजायश नहीं होती है तो वह सिर्फ १) और नारयल देकर ही सगाई की रीत करदेता है

बींद का बाप अपने घर अमल गलाकर भाई बंद सगे गनायतों और दोस्तों को बुलाता है और गुड़ बांटता है उस वक्त सबके सामने ब्राह्मण बींद के तिलक करके वह सब सामान टीके का उसको झिला देताहै

टीका लानेवाले को बींद के बापकी तरफ सेओठ दीजाती है और सीख देते वक्त भले आदमियों को सिरोपाव और नाई चाकरों को इनाम मिलता हैं और कोइ बींदनी का लागती वाला उनके साथ होतो उसके ऊपर रुपये नोछावर करके उसके चाकरों को देते हैं इसी तरह वह बींद और उसके बापके ऊपर नौछावर करताहै

टीके के साथ बींदनी के लागतीवालों के आने का दस्तूर तो नहीं है मगर जो आवे तो काका भाई या और रिशतेदार आसका है बाप नहीं आता

राजपूतों में सगाई एकदफे हुए पीछे फिर नहीं छूटती इसके वास्ते यह ओखाणा है "परणी छूटे मांगनहीं छूटे"

शादी के वास्ते उमर

सगाई के पीछे ब्याव होने के वास्ते कोई मयाद मुकर्र नहीं होती मगर छोटी उमर में ब्याह

कम करते हैं शादी के वक्त बींद बींदनी की उमर अकसर करके १६ से २० बरस तक हो
है और कभी कुछ कम जियादा भी होती है बचपन में ब्याह करने का रिवाज जैसा बनि
और ब्राह्मणों में है वैसा राजपूतों में नहीं है

सावाया साहा

शादी के वास्ते बींदनी का बाप बींद के बाप से लिखापढी या जबानी बातचीत कर ब्राह्मण से सावा निकलवाता है और उसको कागज़ में लिखकर एक नारयल के साथ जो घरों में चांदी सोने से मढा जाता है बींद के बाप के पास भेजता है इसको लगन कहते हैं

लगन भेजने के वास्ते भी यह शरत नहीं है कि ब्याह के इतने दिन पहिले ही भेजी ज
कोइ १० दिन कोइ ५ दिन और कोइ १५ दिन पहिले भी भेजते हैं कोइ नहीं भी भेजते रि
सावा निकलवाकर कहलादेते हैं कि फ़लाने दिन शादी करने के वास्ते आजाना

बिंदोले बैठाना

जब लगन पहुंचता है तो बींद का बाप अपने बेटे को बींद बनाता है इसको बिंदोले बैठा
कहते हैं इस की भी कोइ हद नहीं है शादी के १०या ५ दिन पहिले भी बैठा ते हैं और २
४ दिन पहिले भी

ये दिन बींद के बहुत लाड प्यार और बनाव सिंगार में बीतते हैं उस को रोज़ पीठी य
उबटना लगाकर हार फूल पहिनाते और पान मेवा खिलाते हैं भाई बंद साथी भा
उसको और उसके घरवालों को गाजे बाजे और नाच कूद के साथ अपने घर बुलाकर गे
दते हैं इसको बिंदोला खिलाना कहते हैं जो ग़रीब आदमी होंतो बींद कोही एकाध नाई अ
चाकर के साथ बुलाते हैं

कूंकुम पत्री

फिर बींद और बींदनी का बाप अपने भाइ सगों और मेल मिलाप वालों को १ रंगीन चांदी सोने के छींटे लगे हुए कागज पर चिठी जिस को कुंकुम पत्री कहते हैं लिखकर शादी जलसे में शामिल होने के वास्ते बुलाते हैं

तेल चढाना

फिर ब्याह से २-४ या ५-७ दिन पहिले बींदनी के घरका फासिला देखकर बींद के तेल चढाते हैं कोई २ बेटीवाला ज्योतशियों से पूछकर तेल चढाने की गिन्ती भी लिखदेता है कि इतने तेल चढाये जावें तेल ५ या ७ सुहागण औरतें मिलकर निहलाते वक्त बींद के बदन में मसलती हैं और उसवक्त के गीत यातो वे खुद या ढोलनें और नायनें गाती हैं और कुछ हंसी ठठा भी करती हैं

कांकण डोरा

तेल चढाने के पीछे कांकण डोरा बींद बींदनी के दाहने हाथ और पांव में बांधते हैं वह मौलीका वट कर बनाया जाता है उस में १ मेंदल जो छोटासा फल होता हैं छेदते हैं १ मरोड़ फली और एक दो छोटे २ छल्ले लाख के और लोहे के बांध ते हैं और ऐसाही एक जोडा कांकण डोरे का बनाकर बींदनी के वास्ते भी बरी के साथ लेजाते हैं

न्योता

कांकण डोरो बांधने के पीछे बींद को बाहर लाकर १ कुरसी या पाटिये के ऊपर बैठाते हैं उस-वक्त भाइ बंद सगे साथी अेलपी नोकर चाकर रैय्यत करसे वगेरा जो शादी में आकर शामिल होते हैं न्योता देते हैं यह रोकड रुपया १) से लेकर १००) तक जैसा जिसका व्योहार और मकदूर हो, देता है और यह न्योता आपस में व्याह शादी के मौके पर दिया लिया जाता है मगर इस में इतना फर्क है कि जो जागीरदार और बड़े आदमी होतेहैं वे अपने भाई सगों और मिमत्त वालों का न्योता तो जब उनके काम पडे पीछा देते हैं लेकिन महाजन जाट और किसान वगेरा लोगों को जब उनके घर व्याह हो पीछा देना जरूर नहीं समझते

गोठ

न्योते के दिन सब लोगों को बींदका बाप गोठ या खाना देता है

जान यानी बरात

फिर बरात चढती है बींद को घोडे ऊंट या तांगे पर बैठा कर लेजाते हैं और जो कोइ बडा ठिकाणा हो तो हाथी पर भी बैठा सके हैं नहींतो राजों के सिवाय और कोई हाथी पर नहीं बैठाता

सेवरा या मौड

जान चढतेवक्त वींद के सिरपर फूलों का सहरा और मौड जो कागज कपडे और झूटे या सचे मोतीयों का बना होता है बांधते हैं मगर मौड कुल देवी की मूरति के सामने जो घर में । लकडी की पेटी के अंदर जिसको माताजी का करंडिया कहते हैं रखी रहती है या दूसरे घरें मंगालीजाती है ब्राह्मण और जो ब्राह्मण नहो तो नाई बांधता है और जो करंडिया न मिलेतं भींत के ऊपर रंग से मूरती माताजी की वनालेते हैं

वींद के साथ दूसरी जातों में जो १ लडकी बैठाई जाती है उसका दस्तूर राजपूतों में नहीं है

वरी

वरात के साथ वींदनी के वास्ते जो कपडा वगेरा लेजाते हैं उसको वरी कहते हैं वरी । इतनी चीजें होती हैं

१ घाघरे कोर गोटा और लप्पा लगे हुए ४
२ साडी कसूमल या केसरया जिसमें कोर गोटा और लप्पा लगा होता है २
३ दुपट्टा जरीके कामका १
४ चूंदडी कोर गोटा लगी हुई १
५ कांचली गोटे और जरी की ४
६ चूड़ा हाथी दांत का १ जोडा
७ जूता कामदार १ जोडी
८ अतर की शीशी
९ कुंकुम मेंहदी रंग और छडीला वगेरे के ४ पुडे
१० नारयल ४
११ मेवा मिश्री
१२ मौड वींदनी के वास्ते १

जो जियादा वरी लेजाने की गुंजायश नहो तो २ जोडे और वाकी का सामान थोडा २ ह लेजाते हैं

गहना चढाने का दस्तूर नहीं है गहना बेटी का वाप देता है जो न देतो वींदनी को अपने घर लाकर पहना देते हैं

पडजान

जव जान बींदनी के घरसे १ कोस के करीव तक पहुंच जाती है तो उसके लेनेके वास्ते बींदनी के भाई या और रिशतेदार ऊंट घोडोंपर चढकर आते हैं उसको पडजान कहते हैं बींदका बाप उसके वास्ते रस्ते में ठेरजाता है और फिर सवसे मिलकर अमल और दारू की मनवार करता है जिसके पीछे सब मिलकर गांव को आते हैं

बाजी २ जगह यह दस्तूर भी है कि जान और पडजान वाले आपस में होड वांध कर घोडे और ऊंठ दोडाते हैं जो पडजान वाले आगे वढकर गांव में घुसजावें जव तो जानवालों को कुछ नहीं देते और जो जानवाले आगे बढजावें तो पडजान वालों को अपनी हैसियत के माफिक उन्हें ५) या कमती वढती देने पडते हैं

सामेला

गांव के वाहर या अंदर कुछ दूरतक वींदनी का वाप भी सामने आता हैं उस जगह दोनो तरफ से जाजम बिछजाती है और वींद वींदनी के वाप दोनों वरावर बैठकर अमल और दारू की मनवार करते हैं वींद घोडे पर चढा खड़ा रहता है वींदनी का प्रोहित १ थाल लेकर आता है और वींद के तिलक करता है वींद का वाप रुपया अशरफी अपनी श्रद्धा के माफिक उस थाल में डालता है वे वींदनी के बाप के लगते हैं लेना न लेना उसकी मरजी पर है इस वीच में वरी वींदनी के घर पहुंच जाती है

तोरण बांधना

वहां से वींद तोरन वांधने के वास्ते वीदनी के घर जाता है और घोडे पर चढा २ ही तोरण के बरछी मारता है जो खाती उसी वक्त लाकर बांधता है उसको वींद की तरफ से इनाम कम से कम १।) और जियादा जहांतक बने दिया जाता है

तोरण रंगील लकडियोंका वनाया जाता है उसकी शकल मुकट जैसी होती है और उस के ऊपर चडियें बनाई जाती हैं

पोलपात बारहट

तोरण मारते वक्त बींदनी के पोल पात बारहट को नेग दिया जाता है ज्यादा से ज्यादा घोड़ा और कम से कम ५) और १) भी, उसवक्त ये लोग अपने नेग के वास्ते बहुत अड़ते हैं और इसी वास्ते इनको बारहट की पदवी मिली है यानी बारणे के ऊपर हट करने वाले और पोलपात के मायने दरवाजे के ऊपर रहने वाले के हैं क्योंकि राजपूतों में चारणों को डेरा अकसर पोल में दिया जाता है

बारहट भी खांप खांप के अलग २ होते हैं जैसे किसी ने इस दोहे में कहा है

सोदा ने सीसोदिया रोहड़ ने राठोड़
दुरसावत ने देवड़ा ठावा ठावी ठोड़

यानी सीसोदियों के बारहट सोदा चारण, राठोड़ों के रोहड़या और देवड़ों के दुरसावत हैं

बींदका अंदरजाना और सास का दहीदेना

फिर बींद घोड़ी से उतरता है उस वक्त जो और कौमों में यह दस्तूर है कि सास उसको अंदर लेजाती है वह राजपूतों में नहीं है हां ब्राह्मण दहीका टीका लगाकर बींद को चँवरी में लाबैठाता है और जो सासही दही लगाना चाहे तो बड़ा जाबता किया जाता है सास और जमाई के बीच में कनात या परदा तानकर थोड़ीसी जगह फाड देते हैं जिसमें से हाथ निकाल कर वह जमाई के माथे पर हथेली से दही चिपका देती है

मारवाड में बींद के सिरपर दही लगाने का आम दस्तूर है और जो कोई जमाई नालायक निकल जाता है तो सास उस को यह ताना देती है कि "तूने भला मेरा दही लजाया" दही लजाना भी एक औखाणा है

राजपूतों में दही कनात की आड से इसलिये लगाया जाता है कि सास जमाई से परदा करती है और कभी उसके सामने नहीं होती और जो रात बिरात होती भी है तो अपने को जाहिर नहीं करती सालियों और सहेलियों में छुपकर आती और बैठती है इसके वास्ते "रातकाली ने सासू साली" का औखाणा है

जान का डेरा

जब बींद चंवरी में जाता है बराती जान के डेरे में चले जाते हैं जिसकी तजवीज बींदनी का बाप पहिले से कर रखता है

बींदनी के तेल चढाना

बींदनी के तेलचढाने का दस्तूर बींद के आजाने पर है क्योंकि तेल चढ़ी हुई लडकी बैठी नहीं रहती है जो तेल चढ़े पीछे साबे पर बींद नहीं आवे या कोई हरज मरज होजावे तो उस वक्त बड़ी मुशकिल पडती है और लाचारी के साथ उसका ब्याह किसी दूसरे आदमी स करना पडता है "त्रिया तेल हमीर हट चढ़ेन दूजीबार" की मसल मशहूरही है

इसी विचार से बींद को देखकर तेल चढ़ाते हैं बींदनी तो पहिले से बना देते हैं और बिंदोले भी खिलाते हैं मगर तेल नहीं चढाते

तोरण के बक्त बींदनी के हाथ से बींद के ऊपर उबटना नाज और धूली वगैरा फिकवाने कि रीत जो दूसरी कौमों में है वह राजपूतों में नहीं है

बींदनी का चंवरी में आना

तेल चढाने के पीछे न्हिला धुलाकर बींदनी को वह पोशाक पहिनाई जाती है जो बरी में सासरे से आती है फिर उसके कांकण डोरा और मौड ब्राह्मण या ब्राह्मणी कुल देवी के सामने बांधकर चंवरी में लाती है और बींद बींदनी के छेडा छेडी बांध ती है

दूसरी कौमों में जो कोरपाण यानी बिना धोये हुए कपडे पहिना कर फेरे करने का दस्तूर है वह राजपूतों में नहीं

होम और फेरे

फिर ब्राह्मण गणेश कुल देवी वगैरा देवताओं और सूर्यादि नव ग्रहों का पूजन करके होम करता है उसवक्त जो और कौमों में बींदनी का बाप हाजिर रहकर पूजन करता और बींद को कन्यादान देता है सो यह दस्तूर राजपूतों में नहीं है मर्द बाहर जुदे रहते हैं भीतर तो सिर्फ बींद बींदनी या औरतें होती हैं

होम के पीछे ब्राह्मण हतलेवा जोडकर बींद बींदनी को चार फेरे आग के चौफेर फिराकर खिलाता है ३ फेरों में तो बींदनी आगे होती है और चौथे फेरे में बींद आगे होजाता है उसवक्त

ब्राह्मण मंत्र पढ़ता है और लुगाइयां यह गीत गाती हैं

पहिले फेरे बाबा री बेटी   दूजे फेरे भुआरी भतीजी
तीजे फेरे मामारी भानजी   चौथे फेरे धी हुई पराई

यानी चौथे फेरे में बेटी पराई हो जाती है और इसी फेरेपर ब्याह का खातमा होजाता है उ वक्त बींदनी के बाप काका और मामा वगैरा को खबर करते हैं उनको जो देना होता है भेज देते हैं या देना करके कहला भेजते हैं यह सब माल बींदनी का होता है और बींद जो कुछ मांगना होता है तो वह भी उस वक्त मांगलेता है फिर हथलेवा छुड़ाया जाता है जोडा भी खोल देते हैं

बींदनी का जान में जाना

फिर बींद घोडे के ऊपर सवार होता है और उस के पीछे बींदनी को पीनस रथ या गाडी में बै कर वरात के डेरे में लाते हैं बींदनी वहां कुछ देर ठैर कर पीछी चली आती है उस वक्त कोई ? या रीत रसम नहीं होती जो डावडियां साथ आती हैं उनको मेवा और रुपया मकदूर के मापि दिया जाता है

कँवारा भात

फेरों से पहिले बींदनी के घर से जानियों के वास्ते गुड़ की लापसी जिसको कंवारा भ कहते हैं आती है मगर उसको कोई तो खाता है और कोई नहीं खाता

त्याग

दूसरे दिन बींद का बाप चारणों और भाटों को जो बहुत इकठे होजाते हैं त्याग देता है जै ब्राह्मणों की भरसी दक्षिणा ब्याह के पीछे लगती है वैसेही यह चारणों और भाटों की दक्षिणा जिसका नाम उन्हों ने त्याग रखलिया है

भूरसी में और त्याग में यह फर्क है कि भूरसी के वास्ते तो ब्राह्मण लोग जियादा तकार और हाका नहीं करते जो कुछ मिलजाता है उसी को थोडीसी तकरार करके लेलेते हैं मग त्याग के वास्ते चारण और भाट बहुतसी माथाफोड करते हैं गोया यह उनका एक कुदरती दं है कि जिसके दियेबिना किसी तरह पीछा नहीं छूटता

बृाह्मणों की भूरसी तो हरेक कौम के ऊपर लगती है और त्याग सिर्फ राजपूतों पर ही लग ता है चारण कहते हैं कि त्याग और खागके पात्र तो राजपूनही हैं

पहिले तो त्याग देने का कोई कायदा न था राजपूत लोग अपने नाम के वास्ते हद से जियादा भी देदेतेथे जिसका टोटा उमर भरमें भी नहीं निकलता था और जो कम देते या नहीं देते हैं तो चारण लोग धरना देकर उनको बहुत दिक करते थे जिससे तमाम २ दिन बगेर खाने पीने के गुजर जाता था क्योंकि जबतक चारण भाटों का राजी नामा नहीं होता था बींदनी का बाप बरात को खाना नहीं खिलाता था मगर अब राजपूताने में वालटर कृत राजपुत्र हितकारिणी सभा मुकर्रर होने से त्याग का कायदा बंध गया है जिससे जियादा नतो चारण और भाट मांग सके हैं और न राजपूत दे सके हैं

जब त्याग दिया जाता है ढोल बजता है और इधर उधर के बहुत से आदमी तमाशा देखने को जमा होजाते हैं उस वक्त चारण लोग बार २ यह दोहा पढते हैं

कंकण बंधण रण चढण पुत्र बधाई चाव
तीन दिवस ये त्यागरा क्या रंक क्या राव

भूरसी दक्षिणा

त्याग बटजाने के पीछे भुरसी दक्षिणा ब्राह्मणों को बींद का बाप अपनी श्रद्धा के माफिक देता है

जीमन

फिर बींदनी का बाप बरात को अपने घर बुलाकर जीमाता है और बरात का रखना भी उसी की मरजी और गुंजायश पर है कि कोई तो एक दो दिनन के बाद ही सीख देते हैं और और कोई जियादा दिन भी रखते हैं बरात को खाना दोनों वक्त या १ वक्त दिया जाता है या सरवरा तोऊ देते हैं और जो जिमाते हैं तो बींद बरात के साथ आकर बींदनी के घर जीमता है

बींद को सुबह के वक्त कलेवा कराने के वास्ते बुलाने का दस्तूर जो दूसरी कौमों है वह राज- पूतों में नहीं है और जो है तो कम है

मायरा

जो गहना कपडा या रोकड रुपया बींद बींदनी के मां बाप औ भाई देते हैं उसको मायरा

कहते हैं उसका यह दस्तूर है कि जब कुंकुम पत्री पहुंचती है तो बींद बींदनी के नाना मामा अपनी बहन बेटी भांनजी और उनके घरवालों के लिये कपड़ों के जोड़े और रोकड़ रुपये अपने मकदूर के माफिक लेकर आते हैं

बींद के यहां तो मायरा उसीदिन कि जब जान चढती है सब बरातियों को दिखलाकर बींद, उसके मा बाप और उसके नजदीकी लागतीवालों को पहिनाया जाता है और बींदनी के घर फेरे होने से पहिले दिन या उसी दिन सब मांडेतियों को दिखाकर देते हैं ब्याह में बींदनी के घरवालों और मिजमानों को मांडेती कहते हैं

मायरे के वक्त बींद बींदनी के मा बाप के गंठजोड़ा बांध कर कपड़े पहिनाने और तिलक कर के रोकड़ रुपया या नारयल देने की रसम जो और कौमों में है वह राजपूतों में नहीं और न वाद मायरा पहिन्ने के वींद या वींदनी की मा अपने बाप भाई को जो मरगया हो याद करके रोती है।

सीख या विदा

रुखसत के दिन वींद मौड़ बांध कर आता है ब्राह्मण उसको और वींदनी को छेड़ा छेड़ी बांध कर अंदर लेजाता है जहां वे कुलदेवी को धोक देते और नारयल चढ़ाते हैं

दायजा

फिर बींदनी का बाप दायजा देकर सीख देता है दायजे में इतनी चीजें होती हैं

गहना	गाय	पलंग बिछोना
कपड़ा	घोड़ा	चाकर
बरतन	भैंस	छोकरी

जो ज़ियादा देने की श्रद्धा नहीं तो थाली लोटा पलंग पीढ़ी और बिछोने तो जरूर देता है

जँवारी

बींद के बाप भाई काका मामा और बरातियों को भी सीख के वक्त जसे मक़दूर होतो सिरोपाव देने का दस्तूर है

साल कटारी

फेरे होने के पीछे बींदनी का भाई वींदका कान पकड़ता है और अपना नेग मांगता है

उस को वींदकी तरफ़ से कटारी वग़ैरा हथियार या रोकड़ रुपया देते हैं कोई २ तनी खुलाई के नेग में जो बींदका लगता है उसका जमा खर्च करदेते हैं

जब दायजा और जँवारी दी जाचुकती है तो बींदनी अपने मा बाप को हाथ जोड़कर वींद के साथ चली जाती है उस वक़ जियादा रोनेधोने का दस्तूर राजपूतों में नहीं है

बींदनी के पहुंचाने को भाई बंद और नौकर चाकर जानके डेरे तक साथ जाते हैं

बरात का लौटना

फिर बरात उसी दिन पीछी रवाने होजाती है जब घर पर पहुंचती है तो जो लोग घर में होते हैं वे बाजे गाजे और तायफ़े के साथ जैसाकि मक़दूर हो सामने आकर बरात को ले जाते हैं

वींद वींदनी एक ही रथ या पीनस में गंठजोडा बांधकर जैसे दूसरी कौमों में बैठे आते हैं ऐसा इन लोगों में दस्तूर नहीं है मगर अंदर जनाने में जाते वक्त छेडा छेडी ब्राह्मण बांधदेता है फिर वह दोनों भीतर जाकर कुलदेवी के सामने बैठते हैं जहां बरात जाने के पीछे भींत के ऊपर मौड की तसवीर भी बनादी जाती है माताजी को धोक देने के पीछे उन के छेडा छेडी मौड और कांकण डोरे खोलादिये जाते हैं फिर वींद तो बाहर चला जाता है और वींदनी अंदर रहजाती है वह एक मौहर या ५) या १) या नारयल ही अपनी सास के आगे रखकर उसके पांव छूती है और वह खुश होकर उस को कोई गहना या रोकड रुपया और आसीस देती है

वींद वींदनी को अंदर लेते वक्त जैसा कि बअ़ज़ी दूसरी क़ौमों में पगमंडा होता है वह राजपूतों में नहीं होता

जात

गांव में जो थान माताजी और खेत्रपाल के होते हैं वहां दूसरे दिन वींद वींदनी जाकर नारयल चढाते हैं इसको जातदेना कहते हैं

वींदनी की सीख

वींदनी को जब उसका बाप बुलावे सुसराल से सीख देदी जाती है इस के वास्ते भी कोई म्याद मुकर्रर नहीं है विदा करने के वास्ते उसका भाई या और कोई लागतीवाला आता है

आणा यानी मुकलावा

फिर जब वींदनी अपने बाप के घर से दुबारा सुसराल में आती है तो उसको आणा कहते

हैं उसवक्त भी बींद का जाना जरूर होता है और जो किसी सबब से न जासके तो अपने भाई या किसी भले आदमी को भेज देता है और बींद के जाने में खरचभी ज़ियादा पड़ता है इस लिये वह नहीं भी जाता है

बींदनी का बाप मुकलावे में भी उसके वास्ते गहना और कपड़ा अपनी हैसियत के माफिक् बनवाता है जो ब्याह से आधा होता है

औलाद पैदा होने का दस्तूर

अव्वल दफे के गर्भ को जब ७ महीने होजाते हैं तो आठवें महीने में बडा उच्छव करते हैं भाई बंदों को भेला कर के गुड बांटते हैं और गाना बजाना भी होता है मगर औरत के वास्ते गहना कपडा बनाने और उसको पाटे पर बैठाकर उसके हाथ से पूजन कराने का दस्तूर जो दूसरी कौमों में है वह राजपूतों में नहीं है और जो है तो कम

जब बच्चा पैदा होता है तो उसको जनम घूंटी किसी बडी बूढ़ी औरत के हाथ से दिलाई जाती है वाजे राजपूतों में जो यह दस्तूर है कि मरद जाकर घूंटी देते हैं वह राठोडों में नहीं है जनम होने पर ब्राह्मण से घडी पल दिखाकर नाम रखदेते हैं डेढ़ महीने पीछे खुशी करते हैं भाईबंदों और दोस्तों को बुलाकर कहीं तो शराब पीते हैं नाच कराते हैं और कहीं अमल गलाकर गांववालों को देते हैं और गुड बांटते हैं

झडूला

जब टाबर २-३ बरस का होता है तो उसके बाल उतारते हैं जिन के बोलवा होती है वे कुलदेवी के थानपर लेजाते हैं

नाता

पच्छिम मारवाड के वाजे राजपूतों में नाता भी होताहै वे नातरायत राजपूत कहलाते हैं इन का बयान अलग लिखा जावेगा आम राजपूत इनसे बहुत परहेज रखते हैं

गमी की रसमें

जब कोई मरता है तो उसको जमीन पर लेलेते हैं जो ज़ियादा खरच करने का मक़दूर होतो मरते २ को बैठा देते हैं और जब तक कि उसका बदन गरम रहता है पकडे रहते हैं

फिर भींत से लगाकर बैठादेते हैं

बैकूंटी

बैकूंटी लकडी की बनाते हैं जो डोल के माफ़िक होती है उसको ज़री बनात या लाल कपडे से मंढ़कर मुरदे को उस में बैठाते हैं और मसानों तक लेजाते हैं वहां चिता चुनकर बैठेहुए को जलाते हैं और लिटाकर सीढ़ी में लेजाते हैं तो उसको लेटा हुआ जलाते हैं आग बेटा या नजदीकी भाई भतीजा देता है जिसको लांपा कहते हैं और जो प्रोहित से दिलावें तो वह भी दे देता है राजों में अकसर प्रोहित ही आग देते हैं

भद्दर

जो घर में मौसर करने का सरतन होता है तो भद्दर होते हैं नहीं तो नहीं होते राजों और जागीरदारों में पाटवी बेटा कम भद्दर होता है बडे आदमियों के पीछे जो नौकर चाकर और कमीण कारू भद्दर होते हैं उनको मौसर के दिन पगडियां मिलती हैं

बैकूंटी का लवाजमा

बैकूंटी के आगे बाजा नगारा निशान होता है मशाल और आग भी होती है और सवारी के घोडे को जीन कर के आगे रखते हैं और दाग के पीछे नाथद्वारे या क झींतडे वगैरे में जहां जिसका गुरद्वारा होता हैं भेजदेते हैं

बखेर

बैकूंटी के ऊपर बखेर भी करते हैं चाहे रुपये पैसे की हो चाहे कोडियों की,बखेर का पैसा टोट कों में बहुत काम आता है उस को बच्चों के गले में डालते हैं

लोकाचार

मुरदों के दाग में जाने को लोकाचार, जानेवालों को लोकाचारया और उठानेवालों को कांधिया कहते हैं

सातर वाडा

दाग के होजा ने पर जब नहाकर पीछे आते हैं तो जाजम बिछाकर १२ दिन तक बैठते हैं उसको सातरवाडा कहते हैं जो बैठने को आता है उसको अमल देते हैं सातरवाडे में बैठने के वास्ते जाने को हुक्का भरने जाना भी कहते हैं

फूल चुगना

तीसरे दिन मसानों में जाकर मुरदे की कुछ हाड्डियां उठा लाते हैं उसको फूल चुगना कहते हैं यह हाड्डियां जो एक मृगछाला और रेशमी कपडे में लपेटकर मेट से खाम दी जाती है उसीवक्त या पीछे हरिद्वार को गंगाजी में प्रवेश करने के वास्ते भेजदीजाती हैं भसमी को जो मक़दूर होतातो पुष्कर जी को भेजते हैं नहीं तो वहीं पड़ी रहती है

तीया

तीसरे दिन मूंगचांवल पकाकर लोकाचारियों और दूसरे आदमियों को खिलाते हैं मूंग खाना औरतों की बोली में गाली है

कडवी रोटी

पहिले दिन खिचड़ी या रोटी भाई गनायत के घरसे आती है फिर अपने घर करते हैं

क्रिया कर्म

बाकी क्रिया कर्म आम रिवाज के माफ़िक ब्राह्मणों से कराते हैं

मौसर

बारहवें दिन मौसर कियाजाता है अपने मक़दूर माफ़िक जीमन करके भाई गनायत और गांव के आदमियों को खिलाते हैं

पगडी

मौसर के दिन जीमन के पीछे बड़े बेटे के पगड़ी बांधीजाती है पहिले पगड़ी खांपके मांजी की तरफ़ से बंधती है फिर और भाई गनायत बंधाते हैं

टीका या खांडवार

पगड़ी बंधजाने के पीछे भाई गनायत १) १) २) २) ५) ५) या जैसा मक़दूर हो रोकड़ रुपया देते हैं जिसको मालाणी वगैरा में खांडवार और दूसरे परगनों में टीका कहते हैं जो जागीरदार होतो महाजन और करसे भी उसको टीका देते हैं

पानीवाडा

जो कोई परदेश में मरजाता है और उसकी खबर आती है तो भाई गनायत मिलकर किसी तलाव या नाडीके ऊपर नहाने के वास्ते जाते हैं इस को पानीवाडा कहते हैं फिर १२ दिन तक इसीतरह बैठते हैं

नातरायत राजपूत

मारावाड में कुछ ऐसे राजपूत भी हैं कि जो औरत का नाता करतेहैं ये कहीं चौरासिया कहीं राजपूत और कहीं नातरायत कहलाते हैं इनके पास जमीन नहीं है मुकाता देकर दूसरे राजपूतों की जमीन खड़ते हैं इन में औरतों का परदा भी नहीं है और न सगपन गांवेती राजपूतों में होते है जो इन के पास जमीन नहीं होने और नाता करने से इनको अपने बराबर का नहीं समझते हैं न खाने में शामिल बैठाते हैं और न हुक्का और दारू की वाटकी देते हैं यह लोग गंवारों के माफिक समझे जाते हैं इनके रसम रिवाज भी गंवारों से मिलते हुए हैं

यह पच्छिम और ड़क्खन के परगनों यानि पाली , बाली , जालोर , जसवंतपुरा , सांचोर , सिवाना और मालाणी में ज़ियादा हैं और तफसील इनकी कौमवार यह है

नम्बर	नाम कौम	नाम परगना
१	दईया	जालोर, बाली, जसवंतपुरा, पाली, सिवाना, सांचौर मालानी
२	चौहान	मालानी, जालोर, बाली,जसवंतपुरा साचोर, सिवाना पाली
३	सेपटा	जालोर, जसवंतपुरा, पाली
४	परमार	जालोर, जसवंतपुरा, सांचोर सिवाना, मालाणी
५	सीसोदिया	बाली, पाली
६	गहलोत	वाली, जसवंतपुरा, सिवाना, पाली
७	देवड़ा	वाली, जसवुतपुरा, पाली
८	गोयल	वाली जसंवतपुरा, सिवाना, पाली
९	घोड़ा	बाली
१०	वामरेचा	बाली
११	वालीसा	बाली, जसवंतपुरा, पाली
१२	साँखला	बाली
१३	सोलंखी	वाली, जसवंतपुरा, सांचोर, सिवाना, पाली मालानी
१४	पड़ीयार	बाली जसवंतपुरा, सांचोर, सिवाना

नम्बर	नाम कौम	नाम परगना	नम्बर	नाम कौम	नाम परगना
१५	टवाणा	बाली, पाली	३७	कालम	जसवंतपुरा
१६	जोजा	बाली, साचोर	३८	कुंकण	जसवंतपुरा
१७	गोदा	वाली	३९	डावी	जसवंतपुरा
१८	पांचाल	बाली	४०	बूआ	जसवंतपुरा
१९	वेगडा	वाली	४१	राडवडा	जसवंतपुरा
२०	वालौत	वाली	४२	रतपाल	जसवंतपुरा
२१	मालण	वाली	४३	सेजपाल	जसवंतपुरा
२२	वेरया	वाली	४४	सुरताणचा	जसवंतपुरा
२३	राठोड़	जसवंतपुरा, साचोर, सिवाना, पाली मालाणी	४५	साईदरा	जसवंतपुरा
			४६	सोढेल	जसवंतपुरा
२४	कावा	जसवंतपुरा	४७	चुरचा	जसवंतपुरा
२५	पांचपाल	वाली	४८	जेठवा	जसवंतपुरा
२६	दूवड	जसवंतपुरा	४९	ऊमट	जसवंतपुरा
२७	हलावटा	जसवंतपुरा	५०	वाघेला	जसवंतपुरा
२८	भूया	जसवंतपुरा	५१	चांपावत	जसवंतपुरा
२९	पाणीवल	जसवंतपुरा	५२	वाला	जसवंतपुरा
३०	निरवाण	जसवंतपुरा	५३	ऊदावत	जसवंतपुरा
३१	माचोला	जसवंतपुरा	५४	धवेचा	जसवंतपुरा
३२	पराडिया	जसवंतपुरा	५५	मढला	जसवंतपुरा
३३	मकवाणा	जसवंतपुरा साचोर	५६	महेचा	जसवंतपुरा
३४	डोड	जसवंतपुरा साचोर	५७	जसोलिया	जसवंतपुरा
			५८	सींधल	जसवंतपुरा, पाली
३५	भराडिया	जसवंतपुरा			
३६	गुंद	जसवंतपुरा	५९	सीगाल	साचोर

नम्बर	नाम कौम	नाम परगना	नम्बर	नाम कौम	नाम परगना
६०	कोटेचा	पाली	७५	धांधू	पाली
६१	भाटी	पाली	७६	भायल	पाली
६२	मेहर	पाली	७७	गेलडा	पाली
६३	कावड़या	पाली	७८	गूगा	पाली
६४	भाटी	पाली	७९	पहे	पाली
६५	सेमाल	पाली	८०	सीलोरा	पाली
६६	राजग	पाली	८१	सोनगरा	पाली
६७	धांधल	पाली	८२	मूलेचा	पाली
६८	धूहडिया	पाली	८३	आभरा	पाली
६९	चाचग	पाली	८४	मोयल	पाली
७०	ऊहड	पाली	८५	स.चोरा	पाली
७१	हतूंडिया	पाली	८६	गोदा	पाली
७२	खोखर	पाली	८७	मांगलिया	पाली
७३	वेहड	पाली	८८	तवडकिया	पाली
७४	बरड	पाली	८९	धाधिया	पाली
			९०	जैतमाल	मालाणी

नाते होने की शुरुआत

इन राजपूतों में नाता कब और किस सबब से शुरू हुआ इसका कुछ ठीक पता नहीं मालूम हुआ

जालोरी के राजपूत तो कहते हैं कि आदूनातरायत दइया है और इसीने दूसरे राजपूतों को भी इस जाल में फंसाया है इस के पास किसी ज़माने में भी ज़मीन नहीं रही है हर जगह मारवाड में यह हल खडता है और इसीसे इसके बाबत यह ओखाणा ठेठ से चला आता है कि "दइयो देसोत कदेई नहीं" यानी दइया मुल्क का मालिक कभी भी नहींथा और जो दइया

पूर्व मारवाड के परवतसर वगेरा परगनों में राजा हुए हैं वे ओर थे और ये और हैं वे गोरे दइये कहलाते हैं और ये काले, वे इस तरफ नहीं है और न उनमें नाता होता है यह काले और गोरे का भेद भी नाता होने और जमीन के न होने से हुआ है ऊपर लिखे हुए ७ परगनों में जो दइया राजपूत हैं वे तो कुल नातरायतही हैं दूसरे राजपूतों में तो थोड़े नातरायत हैं और बहुत नहीं मगर दइयों में तो १ घर भी बिना नाते के नहीं पायाजाता और इसी से ये आदू नातरायत मानेगये हैं

जसवंतपुरे के नातरायत राजपूतोंने भी लिखाया है कि पहिले नाता दइयों से शुरू हुआ है राणवा खांप का १ दइया राजपूत पूर्व का मुल्क छोडकर मारवाड में आया था उसने जालोर के १ सोनिगरा राजा की बेटी से नाता किया और राजा ने उसको ४८ गांव दिये जो अब जालोर में दइया पटी के नाम से मशहूर हैं और जिन में उसकी औलाद अबतक आबाद है उसमें नाते का आम दस्तूर चला आता है

गोडवाड के राजपूत नाता शुरू होने की एक कथा कहते हैं वह नीचे लिखीजाती है मगर मालूम नहीं कि यह कहांतक सही है

"जालोर के चौहानराजा सौनिगरा खांप के राव कानडदेव की १ बेटी जो जेसलमेर के रावलजी को ब्याही थी बाल्यावस्था में विधवा होगई थी वह जब तीज के त्योहार को देखती थी कि दूसरी लडकियां अच्छे कपडे और गहना पहिन कर सुसराल को जाती हैं तो वहभी नादानी से अपनी मा से कहती थी और हठ करती थी कि मैं भी इसी तरह कसूमल केसरिया कपड़े पहिन औढ़कर सासरे जाऊंगी उसकी मा को इनवातों के सुनने से बहुत रंज होता था आखिर १ दिन उसने यह हाल राव कानडदेव से कहा राव और कंवर बीरमदेव ने उस के पुनर्विवाह करदेने की सलाह करके चीतौड के राणाजी को दूसरी कंवारी लडकी की शादी का नारयल भेजकर बुलाया जब वे बरात लेकर आये और जालोर के दरवाजे पर तोरण नहीं देखा तो रावजी से पूछा कि यह कैसा ब्याह है कि तोरण भी नहीं बांधागया रावजी ने कहा कि हमारे यहां बाहर दरवाजे पर तोरण बांधनेका दस्तूर नहीं है भीतर चंवरी में बंधता हैं फिर कँवरवीरमदेव आकर राणाजी को किले में लेगया और कटारी निकाल कर कहा कि या तो मेरी विधवा वहन से ब्याह करलो नहीं तो तुमको मारडालूंगा और मैं भी मरजाऊंगा राणाजी नें

कहा कि जो मैं ऐसा करूंगा तो मुझको और तुम्हारी वहन को क़िले में कौन जानेदेगा वीरम-देवने कहाकि मैं गौड़वाड़ का परगना देकर रहने के वास्ते दूसरा किळा वनादूंगा राणाजी ने क़वूल किया और उस लड़की से ब्याह कर लिया फिर ३ दिन तक वहीं रहे और वाहर न आये चौथे दिन उनके आदमियों ने कानडदेव को दवाया कि राणाजी को वाहर लाओ नहीं तो हम तुमको मारडालेंगे राणाजी ने यह सुनकर अपने आदमियों को महल के नीचे बुलाया और झरोके से मुंह निकाल कर उनको दर्शन दिये उसदिन से यह ब्याह की झांकी राणाजी के खानदान में मुकर्रर हुई है

वीरमदेव ने राणाजी को गोडवाड़ का परगना देकर अपना इकरार पूरा किया और वहां १ शहर वसाकर उसमें १ किलाभी वनादिया जिसका नाम अपनी वहन के नाम पर वाली रक्खा राणाजी उसमें अपनी नई रानी को रख गये कभी २ उस के पास आजाया करते थे

यह शादी मुल्क में नाता समझी गई और जिन २ राजपूतों का ब्याह नादारी या जियादा उमर होजाने से अच्छे ठिकानों में नहीं हो सका था उन्हों ने इसी नज़ीर पर विधवा औरतों से नाते करलिये इससे उनके घर तो वसगये लेकिन भाई गनायतों ने उनको छोड़ दिया तव उन्हों ने अपनी न्यात अलग मुकर्रर करली फिर जिस राजपूतने इन में सगपन या नाता किया वह भी इन में मिल गया

नाता वेवा औरत की मरज़ी से होता है जिसकी मरज़ी नाता करने की नहीं होती है वह अपने ख़ांवद के नाम पर वैठी रहती है कोई उसका ज़बरदस्ती नाता नहीं करा सक्ता और जो नाता करना चाहती है वह सुसराल से अपने मा वाप के पास चली जाती है और वे उसका नाता किसी रंडवे राजपूतके साथ जो उनकी और सुसरालवालों की खांपका नहो व्यौहार के रुपये लेकर कर देते हैं नाता कंवारे के साथ नहीं होता और जो कंवारा ही वड़ी उमर का होजाने से ब्याह नहीं होने या और किसी सबव से नाता करे तो पहिले उसको अपना कंवारपना उतारना पड़ता है और उसका यह दस्तूर है किसी ६ महीने की लड़की से ३०) ३२) उसके वाप को देकर फेरे खावे और फिर उसके वाप से यह कहदे कि "अब तुझे अपनी वैटी का अखतियार है चाहे जिसे देदेना मुझे कोई दावा नहीं है मैंने तो सिर्फ कंवारपना उतार को इसके साथ फेरे खाये हैं" मगर जव वह लड़की वड़ी होती है तो उसका भी ब्याह नहीं होता

नाताही होता है क्योंकि वह भी वेवा समझी जाती है

नाते में न चँवरी होती है और न तोरण बांधा जाता है नाता करनेवाला मंगलया शनैश्चर की रातको जब कि सब लोग घरके और गांव के सोजाते हैं औरत को जोड़ा और चूड़ा पहिना कर चुपचाप अपने घर लेजाता है और घर भी रात को पहुंचता है क्योंकि लोगों में यह डर फैला हुआ है कि जो कोई नाता जाती हुई औरत का मुँह देखलेता हैं या उसके साम ने आजाता है तो वह ६ महीने में मरजाता है इस सबब से नाते की सारी काररवाई रात को चुप चाप की जाती है और घर पहुंचकर भी कई टोटके किये जाते हैं जैसे कहीं औरत के हाथ से पहिले चक्की फिरवाई जाती है और कहीं धान छड़ाते हैं कि जिससे नाता करने का बोझ भार हो सो इन पत्थरों पर पड़ जावे

नाता बाप की ओर सुसराल की खांप में नहीं होता और सुसरालवाले फिर न उस औरत से जो नाते चली जावे और न उसके मा बाप से कोई वास्ता रखते

नाते के व्यौहार का रुपया जो औरत के मा बाप लेते हैं उसकी भी तैदाद मुकर्रर नहीं है नातेलेजाने वाले की हैसियत और जरूरत देखी जाती है गोडवाड़ में ५०) से १४०) तक लेते देते हैं यही बात दूसरे परगनों में भी है यह रुपया नाता करनेवाले से पहिले लेलिया जाता है और फिर औरत उस के साथ कीजाती है दायजा वगैरा कुछ नहीं दिया जाता सिर्फ अमल और रोटी एक दो रोज़ देते हैं

औरत के पास जो कोई गहना या लड़का वाला अगले खांवद का होता है तो उस के घर भेज दिया जाता है

इन नातरायतोंमें भी इकेवड़ा और दोवडा सगपन होता है इकेवडे गनयात जिस घरकी बेटी लेते हैं उस में अपनी बेटी नाते नहीं देते और न उनके साथ खाते पीते हैं मगर परगने पाली में अब १६ गांव के नातरायत राजपूतों ने यह लिखत किया है कि जो बेटी नहीं दे उससे सगपण नहीं करें और जो लेवे और देवे उससे करें और इन्हीं ने यहलिखत भी करालिया है कि व्यौहार ४०) से जियादा कोई नहीं ले और लेतो उसको सजा दी जावे

कोई अच्छा राजपूत कि जो ठाकुर या सिरदार कहलाता है और जिसके पास ज़मीन और जागीर है नातरायत राजपूतों की बेटी से व्याह नहीं करता है और करे तो जात बाहर होजावे

लेकिन नातरायत की दोहैती तो उन अच्छे राजपूतों में जा पहुंचती है और इसी वास्ते यह औखाणा चला आता है कि "नातरायत की तीजी पीढी गढ चढे" लोग इसका यह रस्ता बताते हैं कि भायल, ईदा, और मांगलिया राजपूत नाता तो नहीं करते हैं लेकिन नातरायत रातपूतों की बेटियां व्याह लेते हैं और उनकी बेटियां चौहानों और भाटियों को ब्याही जाती हैं इस तरह चलते चलते शायद कोई दोहैती नातरायतों की किसी गढपति तक पहुंच जाती होगी कि जिससे यह औखाणा बना है

नाते की औरत और व्याहता लुगाई की औलाद का हक़ नातरायत राजपूतों में बराबर होता है और नाते आई औरत भी व्याहता लुगाई के बराकर समझी जाती है कुछफर्क नहीं है कहींकहीं तो अव नाता भी दिन धोले व्याह की तरह से होने लगा है और नातरायतों के साथ कुछ दूसरे राजपूत भी हुक्का पानी पीने लग गये हैं

गूजर

गूजर आज तो मवेशी चराने का पेशा करने से कम दरजा खयाल कियेजाते हैं लेकिन अगले ज़माने में १ दफे थे भी हिन्दुस्तान के राज करनेवाली कौमों में शुमार होते थे इनका राज गुजरात वगैरा मुलकों में था और अव भी बुंदेलखंड में समथर के राजा गूजर हैं संस्कृत में गूजर को गुर्जर लिखते हैं वाज़े अंगरेज़ गूजर की असल गुर्जी से लेते हैं जो १ कौम रूस और तुर्किस्तान की सरहद पर रहती है और जिससे उस इलाके का नाम गुर्जिस्तान है और कहते हैं कि गूजर वहां से पंजाब में आये गुजरात गूजरांवाला और गूजरखां जो पंजाव के शहर हैं वे इन्हीं के नामसे वसे हैं फिर ये पंजाव से दिल्ली और अजमेर होकर सौराष्ट्र देश में गये और वहां वल्लभी के राज को गारत करके कुल मुल्क उधर का दवा बैठे जिससे उसका नाम गुजरात और गुर्जर-खंड होगया

भाट लोग कहते हैं कि गूजरों की कौम राजपूतों से निकली है और उस में अकसर गोत भी राजपूतों के पाये जाते हैं जैसे तुंवर चंदेल और चौहान वगैरा मगर एक अजब वात और भी है कि वाज़ी दूसरी कौमों के गोत गूजर के नाम पर भी हैं जैसे ब्राह्मणों में गूजरगोड़ राजपूतों में वडगूजर और मुसलमानों में गूजर पठाण

मारवाड में गूजर अजमेर की तरफ से आये हैं और ज़ियादा वस्ती उनकी पूरब के परगनों में ही है पश्चिम की तरफ भी उन के हमले का पता ईंदा राजपूतों की तवारख से मिलता है

वाले मायरा पहिनायेंगे उसीवक्त हम भी जो हमसे हो सकेगा फूल की जगह पंखड़ी लेकर हाजिर होजावें गे

औरत ने कहा भाईयो में तुम रस्ते चलते हुऐ मुसाफिरों को इस झगड़े में नहीं फसाना चाहती तुम अपना मारगलगो मेरी तकदीर में जैसालिखाहोगा होरहेगा मगर उन जवांमर्द जाटोंने नहीं माना मायरे के वक्त वे वहां गये और उन्होनें वह सारा रुपया वहां खरच करादिया इस से उन की बडी नेकनामी हुई और वह बादशाह भी ऐसाथा कि उसने जव उन की इस सच्ची हिम्मत और हमदरदी का हाल सुना तो वह सारा हासिल माफ करदीया रूवरू बुलाकर सिरो पाव दिया और खातीर की उस दिन से ये दोनों जाट गीतों में गाये जाते हैं और मायरा पहन्नेके वक्त अकसर कौमों मेंऔरतें अपने भाईयों को इनकी दातारगी की याद दिलाती हैं!

—(०)—

सिद्ध जाटों की १ और बात

—(०)—

सिद्ध जाटों की वावत यह भी मशहूर है कि वे आग सुलगाकर उस के ऊपर कूदते हैं और दहकते हुए अंगारों को अपने पांवों से वुझादेते हैं आग से उन के पांव नहीं जलते

—(०)—

मुसलमान राजपूत

—(०)—

मारवाड़ में मुसलमान राजपूत जगह २ पाये जाते हैं ये सिपाही कहलाते हैं इन में हरेक कौम के राजपूत शामिल हैं जो मुसलमानी राज में मुसलमान वनाये गये थे राजपूतों को मुसलमान वनाने का लग्गा मुहम्मद कासिम की चंढाई से जो संवत ७७० के करीव अरव की तरफ से सिंध के ऊपर हुई थी शुरूहुआ था जिस का खातमा औरंगजेव के मरने पर संवत १७६२ में हुआ इस १००० बरस के अरसे में लाखों राजपूत मुसलमान कर दिये गये थे शुरू २ में तो जव कि अरबों और तुरकों के हमले होते थे यह कायदा था कि वेलोग फ़तह होने के पीछे आम हिन्दुओं और खास करके राजपूत और दूसरी लड़ने वाली कौमों के आदमियों को यातो मुसलमान करलेते थे या मारडालते थे कि जिससे वे मुकाबिला करने के लायक नरहें उसवक्त राजपूतों को जो लड़ाई में हारकर फिर मुक़ाबिला नहीं करसकते थे जानवचाने की दो ही सूरतें थीं यातो मुसलमान होजाते थे या रजपूती छोड़कर कमीन जातों में मिल जाते थे और उन्हीं का कसव भी करने लगते थे आज जो हरेक कौम में राजपूतों की खांपें पाई जाती हैं वे उन्हीं दिनों में मुसलमानों के दबाव से उन के शामील हुई थीं और जो मुसलमान होजाते थे उन को

सिपाहियों में नौकरी मिलजाती थी यही लोग थे जिन की औलाद अब कहीं तो देसवालीपठाण कहीं रंघड कहीं मुसलमानराजपूत और कहीं सिपाही और देसवाली कहलाती है

मारवाड़ में मुसलमान राजपूतों के कई थोक हैं मगर ये ४ बड़े हैं और सब अपनी असली खांप के नाम से सिपाहियों में पहिचाने जाते हैं

१ सिंधी जो पश्चिम मारवाड में रहते हैं

२ देसवाली जो पूर्व मारवाड में हरजगह पाये जाते हैं

३ क्यामख़ानी ये चौहान भी कहलाते हैं और नागोर डीडवाणे की तरफ बहुत हैं

४ नायक यह जोधपुर में जियादा है

जोकि ये लोग जबरदस्ती मुसलमान किये जाते थे या १ दम से जान बचाने के वास्ते मुसलमान होते थे इस सबब से इन में मुसलमानीतरीका पूरापूरा कायम नहीं हुआ अबतक भी सिवाय नाम, निकाह मुरदे को गाडने, और ऐसी ही दोएक और मुसलमानी बातों के बाकी सब रसम रिवाज उन के हिन्दुओं केसे हैं और इसी लिये यहां के हिन्दु भी उनसे वैसा परहेज और छूत विचार नहीं रखते जैसा कि परदेसी मुसलमानों से रखते हैं

सिंधी

सिंधी जियादातर शिव मालाणी और सांचोर परगनों के पच्छिमी हिस्सों में रहते हैं वे खेती तो कम करते हैं और मवेशी जियादा पालते हैं और जो यहां से उठ २ कर दूसरे परगनों में गये हैं वे नोकरी राज की या दूसरे लोगों की करते हैं या मजदूरी करके अपना पेट भरते हैं

जातें

इन में कई कौमों के राजपूत मिले हुए हैं जैसे भाटी, सोढा, तंवर, और, राठोड, वगैरा

मुसलमान होने का सबब और जमाना

मुसलमान होने के बारे में उन का यह कहना है कि १०००—१२०० बरस पहिले जो मुसलमानों की चढाइयां सिंध के ऊपर हुई थीं उसवक्त हमारे बडेरे मुसलमान बनाये गये थे जो यह बात सच है तो इसका संबंध अरब के उन मुसलमानों की चढाईयों से समझना चाहिये जो वलीद ख़लीफ़ाके ज़मानेसे लेकर मामूंरशीद खलीफा के वक्त तक संवत बिक्रम के ८ और ९ सकड के बीच में हुई थीं

खांपे

इन सिंधियों की कई खांपें हैं

१ समा जो सब में बडी समझी जाती है भाटियों से निकली है समा १ भाटी का नाम था जो मुसलमान हुआ और उसकी औलाद भी समा कहलाई फिर उसमें कसरत होने से कई साखें और भी अपने २ बुजरगोंके नाम पर फटी हैं जैसे

समा	सामेजा	रामदेवा	कलर	चेनया
ईसर	रहूमा	नोहरी	जिंज	मांगलया

२ सावद और गज्जू ये दोनों सोढा राजपूतों से मिलते हैं ॥

३ भईया और पुन्नू ये अपनेको तंवर राजपूतों से मिलाते हैं ॥

४ सीठार ये अपने को राठोड बताते हैं ॥

मोहर और सूमरा

इनके सिवाय मोहर और सूमरा २ खांपें और भी हैं जो अपनेको किसी राजपूत कौम से नहीं मिलातीं सूमरा तो कहते हैं कि हम सैयद हैं और मोहर कुछ नहीं बताते लेकिन असलमें ये दोनों भी राजपूतही हैं ॥

वतन

सिंधियों का वतन सिंध है और उनमें धाटी और खडाली २ भेदहैं ॥

धाटी तो अपने रहने की असली जगह थरपारकर से लेकर हैदराबाद सक्खर और रोडी तक बताते हैं इसी देश का नाम धाट है जो मारवाड से मिला हुआ है ॥

खडाली का वतन खडाल कहाजाताहै जो १ रेतीला हिस्सा सिंधका धाट के परे जेसलमेर से खेरपुर तक फैला हुआहै ॥

रीत भांत का फर्क

धाटी और खडाली सिंधियों की रीत रसम एक दूसरे से बहुतकम मिलती है और ऐसेही उनके चाल चलन में भी फर्कहै जैसे धाटी सिंधी तो अकसर गांवों और कसबों में घर बनाकर रहते हैं और खेती करते हैं खडाली सब खानाबदोश हैं यानी १ जगह नहीं रहते जंगलों में अपनी मवेशी को लिये २ फिरा करते हैं और उसीके दूध वगैरह से अपना गुजाराकरते हैं मारवाड में जियादा यही लोग हैं इसवास्ते इन्हीं का हाल लिखा जाता है

रहने का ढंग

ये लोग कभी गांव में नहीं रहते हमेशा वस्ती से एक दो मील या इससे भी दूर मवेशी के चारे और पानी का सुभीता देखकर रहते हैं और घरभी नहीं वनाते कोई पूछे तो कहते हैं कि थोडे दिनोंकी जिंदगीके वास्ते क्या घर वनावें और जीने का यह हाल है कि मारवाड की तमाम कौमों से जियादा यही उमर पाते हैं

वे जंगल में घास फूस और कांटों का झोंपा वनाकर उसके नीचे दूध दोहने और विलोने के वरतन कि यही उनकी गृहस्थी है रखते हैं और उसके पासही भेड़ वकरी के वच्चों के लिये वाड़े वनाते हैं ॥

ये किसी जगह दस पांच घर से जियादा नहीं रहते और रहनेका यह हाल है कि गर्मी और वरसात में ज़मीन पर और जाडों में धोरों के ऊपर झोंपे वनाकर रहते हैं क्योंकि उन तरफों मे ऊंची ज़मीन के ऊपर ठंड कम पडती है ॥

सोने का अजव ढंग है चारपाई उनके पास नहीं होती सरदी और गरमी में तो वे अपने कम्वल और राली यानी गूदड़े को ओढकर या विछाकर सोते हैं और वरसात में उसी कम्वल राली या घासफूस और सनये के ऊपर सोकर रात तेर करते हैं

मर्द औरत

सिंधी मर्द वहुत मोटे ताजे लंवे तडंगे और तन्दुरुस्त होते हैं लेकिन उन का रंग औरतों से जरा सांवला होता है औरतें भी वैसीही ऊंची पूरी गोरी और फूटरी होती हैं मगर भोळीभाळी भी वहुत, मर्दों को पैदल चलने का वहुत महावरा होता है वे हमेशा उस रेते में १०--५ कोस का चक्कर रोज़ काट आया करते हैं गरमी सरदी और वरसात की तकलीफ़ उठाने में वहुत मज़वूत होते हैं कि खुले मैदानों में नंगे वदन हरेक मौसम का मुकाविला करते हैं

पोसाक

मर्द वहुत कम कपडे पहिनते हैं सिर्फ कमर में कंम्वल की १ धोती वांधे रहते हैं जिसकी लांग कभी नहीं लगाते और १ कंवल कंधोंपर डाले रहते हैं ऊंन या कपडे का पोतिया सिर पर वांधते हैं ऊनी को ऊना और सूती को खूमा वोलते हैं

औरतें हमेशा इतना नीचा घाघरा पहिनती हैं जो जमीन पर घिसटता जाता है मगर उस में

नेफा और नाडा नहीं होता और न वह सियाजाता है धोती जैसा होता है जिस को चुनकर कमर पर १ मजबूत डोरी से कस लेती हैं कांचली औरभी अजीब होती है जिस में तमाम पेट आगेसे ढकजाता है ओढना वे अकसर काले और नीले रंग का ओढती हैं

मर्द औरतों का शौक और काम

मरदों को वाल वढाने का जियादा शोक़ है जिन में वे हमेशा तेल मला करते हैं पोतिये में काच कंगा और सुरमादानी रखना और उनको हरवक्त काम में लाना अमीर और शोकीन सिंधियों का वाना है

औरतें अपनी पोशाक में सूती और रेशमी कशीदा काढने और उस के अंदर जगह २ काच जडने की ज़ियादा शोक़ीन हैं

घरका काम सब औरतों के ज़िम्मे होता है मर्द सिर्फ अपनी मवेशी को चराते और उन की संभाल रखते हैं

मजहब

सिंधी सुन्नी मुसलमान हैं मगर वे नमाज नहीं पढते जो कोई २ उन में से नमाज़ या कुरान पढता है वे उस को फकीर कहते हैं चाहे वह गृहस्थी ही क्योंनहो वे वहुत सीधे सच्चे और ईमानदार होते हैं मिजमानों की खूब खातिर करते हैं उन के लडकों की मुसलमानी उन का मुल्लां करता है वे अपने गुरु का जो उत्तर सिंध की तरफ़ से आया करता है बड़ा भाव रखते हैं और उस की वंदगी वहुत सच्चे दिल से करते हैं

सगाई व्याह

धाटी सिंधी जियादातर सगपन अपनीही खांप में करते हैं नोहडी नोहडी में और सामेजा सामेजा में, मगर खडाली दूसरी खांपों में भी करलेते हैं

सूमरा और मोहर चाहे धाटी हों चाहे खडाली हरगिज़ अपनी बेटी ग़ैर क़ौम को नहीं देते और दूसरी क़ौमों की भी कमही लेते हैं सिर्फ़ सामेजा मांगलिया और राजड वग़ैरा दोचारही कौमों को यह कुरब हासिल है कि जो सूमरा या मोहर उन की बेटीयां लें

इस वडप्पन का सबब

सूमरा तो यह शेखी मारते हैं कि हम असली मुसलमान हैं और ये दूसरे हिन्दू से मुसलमान

हुऐ हैं और मोहर को इस वात का घमंड है कि मिस्ल राजपूतों के चारण भी हम को मांगते हैं और हमारे सिवाय और किसी सिंधी क़ौम के चारण नहीं हैं भाट और ढोली हैं और हमारे मांगनयार यानी मीरासी लंगा कौम में से हैं और वे शहनाई वजाते हैं दूसरे सिंधियों के मागणयार ढाढी या ढोली हैं जो शहनाई बजाने के अधिकारी नहीं वे सारंगी या रवाव वजाकर मांगते हैं और हमारे लंगा मीरासी उन को अपने वरावर नहीं वैठने देते

—(०)—

सगाई के दस्तूर

—(०)—

१ सगाई में जब कि एक ही घराने में हो वेटी के वाप को २०) देने का दस्तूर है जो नले तो उस की मरज़ी, और जो दूसरी खांप में होतो २००) से ४००) तक देने पड़ते हैं

२ सगाई के वक्त लड़की को लड़के वालों की तरफ से गले में हंसली पहिनाई जाती है

३ लड़की का वाप लड़के को १ कंगा देता है यह सगाई पक्की होजाने की निशानी है और एक छपाहुआ कपड़ा जिस को मलीर कहते हैं उढाता है

४ भाईवंदों को जो जमा होते हैं अमल दियाजाता है

५ जो लोग सगाई करने को आते हैं उन को लड़की का वाप जो अमीर होतो कंवल नहीं तो सूत की वरडियां देता है

६ वाद सगाई होजाने के लड़का और लड़की जो अकसर चचेरे भाई और वहन होते हैं शामिल रहकर अपना काम किया करते हैं उन में मर्द औरत का संवंध जव तक कि व्याहे नहीं जाते क़ायम नहीं होता

—(०)—

व्याह की रीतभांत

—(०)—

१ जव लड़का लडकी के मावाप शादी किया चाहते हैं तो अपने लागती वालों, ढोलियों, और लंगा वगेरा को वुलाते हैं

२ शादी के दिन जो दोनों १ ही ढाणी के होंतों लडके का वाप अपने और लडकी के वाप के ऊंटों को उमदा पलान और घूगरू वगैरा से सजाकर वरातियों को उन पर सवार करता है और ढानी से दोचार कोस दूरजाकर पीछा वींदनी के घर आता है जहां पहुंचने से पहिले उस ढानी के कुछ मर्द औरत सामने जाकर उन को लाते हैं

३ जब बींद निकाह के वास्ते बींदनी के घर जाता है तो बींदनी की मां हिन्दुओं के दस्तूर के माफ़िक़ उसके माथे पर दही लगाकर और नाक खेंचकर अंदर ले जाती है निकाह के वक्त बींद को कुछ रुपया दिया जाता है और काज़ी मुसलमानों के दस्तूर के माफ़िक निकाह पढ़ाता है फिर साला अपने बहनोई का कान पकड कर दोचार रुपय साल कटारी के हकमें लेता है इसके पीछे बींद बाहर आजाता है और बींदनी का बाप बरात को गुड और चांवल खिलाता है

४ दूसरे दिन सुबह से शाम तक बींदकी तरफ़ से छुहारे और दमीदे (बडेबतासे) बटाकरते हैं जिनका मोल बाजे वक्त १००) रुपये से भी बढ़जाता है फिर बींदनी की तरफ़ से बरातको मांस और रोटी खिलाई जाती है

५ चोथे दिन शीरा या लापसी की गोठ होती है ढोलियों और लंगाओं को रोकड रुपै और ऊंट घोडे भी जैसी कुछ बींद के घर की गुंजांयश हो कुरब यानी इनाम में दिये जाते हैं और इस के पीछे बींदनी का बाप अपनी हैसयत के माफ़िक दहेज देकर बरात को सीखदेता है

लाज शारम में फरक

एक घराने की औरत तो अपने खांवंद सास सुसरे और जेठ वगैरा को नाम लेकर पुकारती है और उन से मूंह नहीं छिपाती गैर खांनदान की औरत हिन्दू औरतों के माफ़िक शर्म करती है और मूंह घूंघट में छिपाहुआ रखतीहै

नाता या दूसरा निकाह

सिंधियों में नाता थोडे अरसे से होने लगा है बडे भाई की औरत से छोटा भाई नाता करसक्ता है मगर जो गैर खांनदान में कियाजावे तो नाता करने से पहिले औरत के सासरे वालों से राज़ीनामा लेना पडता है

मौत की रसमें

जब कोई सिंधी मरता है तो उसके भाई बंध और आस पास के लोग मिलकर उसको खूब निहलाते हैं फिर सरसों का तेल और पनडी उसके बदन से लगाकर ४० हाथ लंबे कफ़न से उस को ढककर बाप दादों के कबरस्तान में गाडते हैं और जो कहीं दूर मरगया होतो उस को कुछ मुद्दत

पीछे निकाल लेजाने का क़ोल कर के दूसरी जगह भी गाड़देते हैं क़ोल करते हैं जब यों कहते हैं अय! खुदा अय! लाश अय! ज़मीन तुम सुनो कि हम जो अपने लागती वाले को यहां सुलाते हैं वह इतनी मयाद तक ज़मीन में नमिले और अय! ज़मीन अगर यह मयाद गुजर जावे तो फिर तुम यह मुरदा हम को नदेना

ओसर

मरने के सोल्हवें या चालीसवें दिन के पीछे औसर करते हैं इन के ओसर में एक दूसरे को मदद देने का बहुत अच्छा कायदा है कि जिस से मोसर का बोझ एकही आदमी के ऊपर नहीं पड़ता जब किसी के औसर होता है तो उस के पडोसी अपने २ घर से उस को घी गुड और रुपया वगैरा की मदद जो जरूर हो वगैर पूछे देते हैं और शहर से जिनस अपने २ ऊंटों पर लाद कर लेआते हैं सिर्फ सुन्ने की देर होती है जब सुना कि फलाना आदमी ओसर करता है तो हरेक आदमी जो उस के घर और ढाणी के पास रहता है फौरन तनमन और धन से मदद देने के वास्ते हाजिर होजाता है इस हमदर्दी और कोमी मदद से ओसर करने वालों को बहुत कम खर्च अपने घरसे करना पड़ता है

ओसर में अकसर गुड़ और खांड का शीरा करते हैं और लापसी करने का भी रिवाज है खाने का यह दस्तूर है कि मुसलमान जो आते हैं वेतो अपने हाथसे लेलेकर खाने लगते हैं और हिन्दू जो बुलाय जावे या उस ढाली के पास होकर निकले उस को सेर २ मेदा घी और खांड देदेते हैं आसूदा सिंधी कई दिन तक मोसर के पीछे भी रस्ते चलने वाले मुसलमानों को १ रोट सेर भर गुड़ घी और आटे की बनाकर जिसको गिलोडी कहते हैं खाने के वास्ते देता है और हिन्दू को आटा गुड़ घी-- चाहे कितने आदमी आवें सब को मिलेगा

ओसर होचुकने के पीछे भाई गनायत और हिन्दू लोग जो आते हैं खांडयारस के नाम से कुछ २ रोकड़ रुपया ओसर करने वाले को देते हैं जिस से बहुत कुछ सहारा खरच का लगजाता है

औसर करके फिर कुछ आदमी ऊंटों पर चढकर जहां मुरदा गाडा होता है वहां जाते हैं और १ संदूक लेजाते हैं जिस में मुरदे को जमीन से निकाल कर रखते हैं और ऊंट के पिछले आसन पर रखकर रवाने होते हैं रवाने होने से पहिले १ या दो बकरे को मारकर गोशत खाते हैं फिर जंगल २ मुरदे को मोरूसी कबरस्थान में लेजाकर गाड़ते हैं उस वक्त भी उस को निह

लाते और खुशबू लगाते हैं कहते हैं कि जो मुरदा कौल करके ज़मीन को सोंपाहुआ होता है वह मयाद पर वैसाका वैसा निकलता है सडता गलता नहीं और रात के वक्त डरावनी शकल में लानेवालों के सामने आआ कर डराता है

गाडे पीछे फिर दोचार वकरे मारते हैं और उन को खाकर रोते हुए उठते हैं और कुछ देर तक रोकर ऊंट दोड़ा देते हैं

घर पर औरतें जेराणा गाया करती हैं यह एक ऐसा उदासी का गीत होता है जिस से सुनने वालों के दिल पर ग़म छाजाता है और अकसर आदमी रोने लगते हैं

—(o)—

देसवाली मुसलमान

—(o)—

ये भी राजपूतों से मुसलमान हुए हैं और मारवाड़ में हरजगह पाये जाते हैं इन का पेशा या तो सिपाहगरी है या खेती करते हैं

जालोरी और साचोरी के देसवाली मुसलमान विलकुल हिन्दुओं जैसे हैं और इसी सवव से वहां के राजपूत उन से वहुत कम परहेज़ खाने पीने में करते हैं यहांतक सुना है कि १ चूले पर दोनों रोटी करलेते हैं और जियादा मेल झोल होने पर एक दूसरे के घर की खाभी लेते हैं यही हाल ऊमरकोट और जेसलमेर में भी है

एक दफ़ रोहट के ठाकुर सुलतानसिंघजी गांव डांगड़ी इलाके जेसलमेर में शादी करने गये थे वहां देखा कि मुसलमान खाना परोसते हैं उस दिन तो ठाकुर ने कुछ नहीं खाया और उठखड़े हुए दूसरे दिन डांगडी वालों ने छाछ और राव खिलाई तो किसी ने ठाकुर से कहा कि कल तो जीमन आपने छोडा और आज छाछ रावडी खाई यह किस के घर की थी गरज़ उस तरफ बग़ेर मुसलमान के गुज़ारा नहीं होता क्योंकि मुसलमान राजपूत ही वहां ज़ियादा हैं

पूर्व मारवाड में देसवाली मुसलमानों से राजपूत अलवत्ता परहेज़ रखते हैं और वे दूसरे मुसलमानों से अपनी पोशाक और चाल चलगत से पहिचाने जाते हैं उन की पोशाक यह है कि मर्द तो कमरी पहिनते और धोती वांधते हैं पाजामा सिर्फ कोई २ जो नमाज़ी होता है पहनते हैं सिरपर पगडी रखते हैं औरतें देसी लालकपडे की कुरती और इज़ार पहिनती हैं कुरती घुटने तक लंबी होती है और उस के ऊपर पीले डोरों का कसीदा होता है और काच भी लगे होते हैं ओढनी भी अकसर उसी कपडे की होती है

ये लोग खेती ज़ियादा करते हैं औरतों का परदा नहीं होता दोनों मर्द औरत मज़बूत और मोटे ताज़े होते हैं बोली मारवाडी और उर्दू मिली हुई बोलते हैं परदेसी मुसलमानों से बहुत कम मेलझोल रखते हैं

ये व्याह शादी अपनीही कौम में नखटाल कर करते हैं निकाह के सिवाय बाकी रिवाज राज पूतों से मिलती हुई हैं

गाडीत

इन्हीं देसवाली मुसलमानों में से १ कौम गाडीतों की है यह परगने नागोर के ३ गावों वहलीमों की बासनी वगैरा में ज़यादा रहते हैं कुछ लोग परगने गोडवाड में चलेगये हैं जो वहां खेती करते हैं और चोधरी कहलाते हैं और कुछ मालवे और गुजरात में भी यहीं के गये हुये हैं

ये लोग पहिले तो सिपाही पेशा थे मगर फिर ५--६ पीढी से गाडी चलाने का पेशा करने लगे और अब मजदूरी वगैरा करते हैं क्योंकि रेलों के चल जाने से गाडियां वेकार होगई हैं नहीं तो पहिले इस पेशे में बडा फ़ायदा था जब रेलें नहीं थीं और जहाजों का माल भावनगर और घोघा वंदर से आकर पाली में खुलता था तो उसवक्त ये गाडीत ही वहां से अपनी गाडियों मे माल पाली को लाते थे और पाली से ऊंटों में हिन्दुस्तान को जाता था

पाली और भावनगर के बीच में इन गाडीतों की १००।१०० गाडियों के झुरमट आया जाया करते थे मारवाड में मेणे और गुजरात में कोली इन के रखवाले होते थे उस वक्त वहादराजून के मेणों का बोलावा चलता था वे गाडी पीछे १) गांव रूपावास में इन से लेलेते थे और १ आदमी भी अपना साथ कर के मारवाड की सरहद में खेर खेरां निकालदेते थे गुजरात में कोली पैसा गाडी वोलावे का और टका रात के चोकी पहरे का लिया करते थे और फिर भी जो कभी कहीं धाड़ा पड़जाता तो गाडीत मौकेवारदात के चोधरियों और जागीरदार से महज़रनामा लिखाकर व्योपारयों को लादेते थे फिर उस का मुकदमा राज में चलता था

इन की गाडियां चौवलदी होती थीं भाडे का हिसाब ऊंट के वोझ पर था १ गाडी ४ ऊंट के बराबर समझी जाती थी और १ ऊंट का वोझ ६ मन गिनाजाता था भाडे का भाव कभी १५) और कभी २०) ऊंट होता था इसी पडत से गाडियों का भाडा भी मिलता था बोलावे का ख़रच गाडीतों के जिम्मे होता था और राहदारी व्योपारी देता था

ये मारवाड़ से ऊन रूई और अफ़ीम लेजाते थे और उधर से किराना मेवा और कपड़ा लाते थे

गाडीतों की इतनी खांपें हैं १ वहलीम, २ लांबा ३ रावडा ४ चौहान ५ मंडल ६ भंगी ७ जंदराण ८ तंवर ९ राठोड़ १० गुलत्थे ११ पड़िहार

ये सगपण अपनीही क़ौम में करते हैं चाहे मारवाड़ में हो और चाहे माळवे और गुजरात में और इन के कुल घर इतने हैं

वहलीमों की वासनी में ३०० कुम्हारी परगने नागोर में २०० कादरपुरे परगने नागोर में २०-२५ वाली गोंडवाड में ५-७ इन के सिवाय कुछ उज्जेन, महदपुर, इलाक़े मालवे, और कुछ राधनपुर और पान्तीवाडे इलाके गुजरात में हैं

सगाई में १५) रीत के लगते हैं निकाह काज़ी पढाता है वरात को लापसी या मोठ बाजरी की खिचडी खिलाते हैं औलाद पैदा होनेपर जो घर में गुंजायश होतो हलीम पका कर भाई बंदों को जिमाते हैं मुरदे के दसवें वीसवें और चालीसवें में विरादरी को नहीं खिलाते फ़क़ीरों को खिलाते हैं

नाता होता है उसवक़ १५) रीत के औरत के सासरे वालों को लौटा दिये जाते हैं ब्याह और नाता अपनी खांप में नहीं करते मामूं की बेटी लेतो लेते हैं मगर अपनी बेटी उस के घर में नहीं देते भुआ की नतो लाते हैं न अपनी देते हैं सगाई नारयल देने से होजाती है

भाईबंटे में बहन बेटी को कुछ नहीं देते औलाद नहो तो भानजा दोहता और जमाई को घर का मालिक बनादेते हैं मगर आम रिवाज भाईबंदो में से खोले लेने का है खोलेलेते हैं जब विरादरी में गुड बांटते हैं

इन में कानी घोड़ी या काना घोड़े का वहाना सगाई छोडने के वास्ते है लेकिन वीरादरी के पंच पंचायत कर के नाहक और बे सबब सगाई नहीं छुडाने देते और जो पंचों का कहना नहीं माने वह जात बाहर करादिया जता है

मर्द टखनों से ऊंचा पाजामा और कमरी अंगरखी पहिनते हैं और सिरपर दुपट्टा बल देकर बांधते हैं औरतें इजार और लाल कुरता टखनों तक लंबा जिस को पहन कहते हैं पहिनती हैं उस के ऊपर कसीदा रेशमी या सूती होता है कांचली नहीं पहनतीं औढना सफ़ेद काला या और किसी पक्केरंग का औढती हैं

इस कौम में कपडा जहांतक होसका है मोटा देसी पहिना जाता है और कच्चारंग मर्द औरत

कोइ नहीं पहनते क्योंकि उससें मुसलमानी क़ायदे के माफ़िक नमाज़ नहीं पढी जासकती और इन लोगों में औरत मर्द सब नमाज़ी होते हैं १०० में ५ शायद नमाज़ नहीं पढने वाले होंतो हों

औरतें चूडियां पहिले तो कांच की पहिनती थीं अब लाख की पहिनने लगी हैं हाथीदांत की नहीं पहिनतीं सोने के गहने में सिर्फ़ १ तिमनिया पहना जाता है नाक में नथ या बुलाक पहिनने का रिवाज नहीं है चांदी की लोंग नथ की जगह होती है चांदी का हांस गले में और हाथों में बाज़ूबंद पहिन ने का ज़ियादा रिवाज है

औरतों का परदा इस कौम में नहीं है किसी २ घर में कोई औरत परदा करती है तो वह हिसाब में नहीं

ये पहिले तो बिल्कुल बेपढेही होते थे लेकिन अब कुछ २ पढने लगे हैं

गुजरात और मालवे में जो गाडीत रहते हैं वे वहां नागोरी कहलाते हैं

—(०)—

क्यामखानी

—(०)—

क्यामखानियों का मूरिस आला गांव ददरेरे के चौहान मोटीराव का बेटा करमसी था उस को संवत १४४० में दिल्ली के बादशाह फ़ीरोज़शाह तुग़लक़ के १ ओहदे दार सैयद नासिर नाम ने हिसार में मुसलमान किया और क्यामखां नाम रखकर बेटे के माफ़िक पाला फिर २ भाई और भी क्यामखां के मुसलमान हुए जिन के नाम ज़ेनुद्दीन और ज़बरुद्दीन रखेगये इन तीनों की औलाद का नाम क़्यामखानी जेनदान और ज़बरान हुआ मगर अब तीनोंही क़्यामखानी कहलाते हैं

सैयद नासिर के मरे पीछे क़्यामखां बादशाही ओहदेदार हुआ और हिसार उस को जागीर में मिला उस ने रफ़ते २ बादशाही दरबार में यहांतक जोर पकड़ा कि दिल्ली के बादशाह ख़िज़र खांने दिल में डरकर उस को दिल्ली के किले पर से जमना में गिरादिया और उस के बेटों ताजखां और मुहम्मदखां को हिसार से निकाल बाहर किया वे अरसे तक जेसलमेर और नागोर में रहे और फिर दोनों ने हिसार में जाकर २ अलग २ रयासतें फ़तहपुर और झुंझनू की कायम कीं जिन में संवत १७८८ के करीब तक उन की औलाद नवाब के ख़िताब से राज करती रही मगर फिर शेखावत कछवाहों ने ये दोनों राज नवाब कामयाबखां और रूहुल्लाखां से छीन लिये तब वे मारवाड़ में आये और अब कामयाबखां फतहपुर वाले की औलाद ठिकाने

कुचामन में मोजूद है क्यामखानियों की ज़ियादा तर वस्ती शेखावाटी में है और कुछ हांस हिसार और नारनोल में भी रहते हैं जहां क्यामखां का तीसरा वेटा अखतियारखां जा रहाथ और वहुत से दक्खन हैदराबाद में भी नोकरी के सवव से जावसे हैं

मारवाड में क्यामखानी शेखावाटी से आये हैं वे विशेस करके डीडवाणा मेड़ता और ना गोर वगैरा पूर्व मारवाड के परगनों में वसते हैं

क्यामखानी नाम के मुसलमान हैं और अवतक भी नमाज़ रोज़े और कुरान से पूरे २ वाकिफ नहीं इन में वहुत सी रसमें राजपूतों की वदस्तूर जारी हैं जैसे व्याह में तोरण वांधा जाता निकाह के पीछे फेरे भी होते हैं और त्याग भी मीरासियों वगैरा को वांटते है

अकसर क्यामखानी राजपूतों के माफ़िक गले में सोने के फूल और कानों में मुरकियां पहिन तेहैं और परदेसी मुसलमानों के साथ खाने पीने से परहेज़ करते हैं क्योंकि मारवाड और शेखा वाटी में वाज़ी जगह इन का और राजपूतों का एक ही हुक्का है सिर्फ़ इतना फर्क है कि राजपूत नय उतार कर हुक्का इन को देदेते हैं और १ चूले पर दोनों रोटी करलेते हैं सेखावत राजपूत भी उन के इसी मेलझोल से सूर नहीं खाते और वाज़े २ क्यामखानी मुसलमानी भी नहीं कराते क्यामखानी मर्द धोती ज़ियादा पहिनते हैं और वाजे २ तो परदा भी अंगरखी का दाहनै तरफ रखते हैं औरतें घाघरा और हाथीदांत का चूडा पहिनती हैं उन में परदा वहुत कम होत है सीलसातम और होली दिवाली का त्योहार भी इन में मानाजाता है इन की और पूर्व मारवाड के राजपूतों की पहिचान मुशकिल से होसकती है क्योंकि दोनों की सूरत शकल और पोशाक और वोली में वहुत कम फ़र्क होता है ये मामूं और चाचा की वैटियों से व्याह नहीं करते मगर अपनी दूसरी खांपों में करलेते हैं और खांपें इनकी अलफ़खानी और ताहरखानी वगेरा अपने वुज़ुर्गों के नाम पर हैं वाज़े क्यामनी अव पठाणों और सैयदों को भी वेटियां देने लगे हैं लेकिन वे लोग इन को अपनी वैटियां नहीं देते क्यमखांनियों की जियादा रिशतेदारी करोली के पठाणों से हैं

क्यामखानी खेती सिपागरी व्योपार और मजदूरी के पेशे अपनी २ हैसियत के माफक करते हैं और वाज़े २ शेखावाटी में जागीरदार जमादार और मारवाड और हैदरावाद में जमादार और रिसालदार भी हैं

कुछ बरसों पहिले ये चोरी धाडा करनेमें भी शेखावत और लाडखानी राजपूतों से कमनहीं थे और अब भी ठगीडकेती के सीगे में इन की निगरानी की जाती है

क्यामखानी अकसर डील डोल के प्रचंड मजबूत महनती और बहादुर होते है मगर बेपढे और अरक्खड़ जियादा

—(०)—

नायक

—(०)—

यह भी १ फ़िरका देसी सिपाहियों का है गढ जोधपुर की पोलों की कूंचियां बहुत बरसों तक इन के पास रहीं और यही पोलों को मामूली वक्तों पर खोला मूंदा करते थे इस सबब से इन का ख़िताब नायक था इस नाम से इन्हों ने अपनी बिरादरी मुकर्रर करली और फिरभी जो सिपाही नोकरी रिश्तेदारी या मातहती वग़ैरा से इन के शामिल होते गये वेभी नायक कहलाये इसतरह यह १ क़ौम नायकों की जोधपुर में क़ायम होगई

ये कहते हैं कि पहिले हम लायक़ कहलाते थे पीछे से लायक़ के नायक होगये मगर यह इनकी ग़लती है क्योंकि नायक भी बुरा लफ़ज़ नहीं है इस के मायने सरदार के हैं और पिछले ज़माने में सिपाहियों के छोटे २ अफ़सरों को नायक कहते थे जैसा कि अब जमादार कहते हैं

जोधपुर के सिवाय ये लोग सोजत जेतारण पाली और सिवाने में भी मिलते हैं और वे सब यहीं से गये हुऐ हैं

येलो मारवाड़ में क़न्नोज से राठोड़ों के साथ अपना आना बताते हैं लेकिन इन की खांपों के नामसे जो नीचे लिखी जाती हैं पायाजाता है कि इन में ज़ियादातर मारवाड़ी मुसलमान राजपूत हैं

चोहान, राठोड़, सीसोदिया, जोया, बहलीम, ख़िलजी, ग़ोरी, और काज़ी,

चोहान नायक फूलानी कहलाते हैं इनका मोरिस आला फूलखां बड़ा आदमी था ये कहते हैं कि जोधपुर में फूलेलाव तलाव उसी का खुदाया हुआ है और उस से आगे गांगेलाव तलावपर १ पोल नायकों के नाम से मशहूर है पहिले ये लोग इन दोनों तलावों के बीच में बसते थे और उस से पहिले क़िलेपर चोकेलाव में रहते थे अब तो गोल में रहते हैं लेकिन अपना ताबूत अबतक उसी पुराने मुहल्ले से निकालते हैं और यह अजीब बात है कि इनका ताबूत सब ताबूतों के पीछे चोबदारों के ताबूत के साथ निकलता है और ये दोनों अपने ताबूतों को एक हदतक बराबर

रखते हैं और जो एक दूसरे से ज़रा भी आगे पीछे करले तो उसीवक्त इनके आपस में दंग होजावे इसवास्ते कोटवाल को इसका बड़ा बंदुबस्त रखना पडता है

नायकों में मुसलमानियत ज़ियादा पाई जाती है वे कलमा कुरान और नमाज़ रोज़े क दूसरे मुसलमान राजपूतों से ज़ियादा जानते हैं और बाज़े २ अपनी सूरत और शकल भी परदर्स मुसलमानों की सी रखते हैं कहते हैं कि ये बातें थोड़ेही वरसों से इन में जारी हुई हैं तोभी अवतत बहुतसी रसमें हिन्दुओं कीसी बाक़ी है जैसे

१ सगपन सिवाय अपनी क़ौम नायक के और किसी देसी या परदेसी मुसलमान से नहीं करते

२ हथलेवा भी नकाह के पीछे होता है

३ औरत को तलाक़ नहीं होती

४ बेवा औरत का नाता नहीं होता

५ बहन बेटी को कुछ बंट नहीं मिलता

६ भानजा और दोहता खोले नहीं आता

सगाई में ४ गहने और जो इतना मक़दूर नहो तो सिर्फ़ १ हंसली चांदी की बींदनी के वास्ते दीजाती है बींदनी का बाप बींद को अंगूठी देता है और गुड़ खोपरा देने कीभी रसम है

व्याह में २५) व्योहार के मुकर्रर हैं जो कोई लडकी वाला न ले तो उस की मरज़ी मिहर फ़क़त ३॥) का बांधाजाता है

नायक सुन्नी मुसलमान हैं इल्म इन में अबतक भी कम है और जो काज़ी कहलाते हैं वेभी नाम केही काज़ी हैं मसला मसायल कुछ नहीं जानते लडका लडकियों को बचपन में थोडे अरसे तक कुरान पढाते हैं अफ़ीम तमाखू के खाने पीने का चाला इस क़ौम में बहुत कम है औरतें भी सब परदा करती हैं और अपनी बिरादरी के सिवाय और कहीं नहीं जातीं

ये सिपाहगरी को ज़ियादा पसंद करते हैं और यही नौकरी राज में या दूसरी जगह करते हैं फूलखां के खानदान में जागीर भी रही है उस से कई पीढी पीछे ख्वाजबख़्श नायक हुआ उसने एक अजीब तरकीब से माहाराज श्रीअभयसिंघजी का कबज़ा अहमदाबाद में कराय यानी महाराज फ़तह तो नवाब के ऊपर होगई थी लेकिन शहर में कोटवाल कपुर भंडसाली कबजा किये हुए था

ख्वाजबखश कासिद का भेस बनाकर दरवाजे पर गया और कहा में दिल्ली से कपूर भंडसाली के नाम हुक्म लायाहूं दरवानों ने उसको अंदर लेलिया उसने कोटवाली में जाकर कागज़ देने के बहाने से कपूर को छुरयों से मारडाला फिर भागकर कोट के ऊपर से घास की १ वागर में कूदा जिस से उस के हाथ पेरों में बड़ी चोट आई

कोटवाल के मारेजाने से महाराजा का शहर में अमल होगया और महाराज ने ख्वाजबखश की बंदगी से खुश होकर उस को कुछ जागीर तो थिराद इलाके गुजरात में दी और कुछ मारवाड में, ख्वाजबखश ने मारवाड की जागीर तो खुद रखी और थिराद में अपने भाई को भेजदिया सो अबतक उस की औलाद वहां है

खेती करनेवाली कौमें

मारवाड़ में यों तो खेती बहुत कौमें करती हैं लेकिन खास करसणीक यानी काशतकार कौमें जाट माली पिटल विशनोई सीरवी और कलबी हैं जो खेती के सिवाय बहुत कम दूसरा धंधा करते हैं और इन की गिन्ती नीचे लिखे माफ़िक़ है

जाट ३१५४४३ माली ६०२१९ सीरवी ५५७५७ विसनोई ४००२३

पिटल ३५१५६ कलबी २८२६५

जाटों का हाल तो लिखा जा चुका है बाक़ी का यहां लिखाजाता है

माली

माली मारवाड़ की मरदुमशुमारी में ६०२१९ इस तफसील से गिने गये थे मर्द ३२२०४ औरत २८०१५

ये लोग काशतकारी यानी करसण में जियादा हुशयार हैं क्योंकि हरतरह का नाज साग पात फूल फल और पेड जो मारवाड़ में होते हैं उनका लगाना और तैयार करना जानते हैं और इसी सबब से इनका दूसरा नाम बागबान है और बागबानी का काम मालियों या मुसलमान बागबानों के सिवाय और कोई नहीं जानता और माली बरखिलाफ दूसरे करसों के अपनी जमीनें हर मोसम में हरीभरी रखते हैं इन के खेतों में हमेशा पानी की नहरें फिरा करती हैं और इसी लिये ये लोग सजल गांवों में जियादा मिलते हैं थली में कम

ये अपनी पेदायश महादेवजी के मेलसे बताते हैं कि जब महादेवजी ने अपने रहने के ए

कैलास बन बनाया तो उस की हिफ़ाज़त के लिये अपने मैल से १ पुतला बनाकर उस में जान डाली और उस का नाम बनमाली रक्खा फिर उस के २ थोक वनमाली और फूलमाली होगए यानी जिन्हों ने बन अर्थात कुदरती जंगलों की हिफ़ाज़त की और उन को तरक्क दी वे वनमाली कहलाये और जिन्होंने अपनी अकल और कारीगरी से पड़ी हुई जमीनों में वाग और वगीचे लगाये और उमदा २ फूल फल पैदा किये उन की संज्ञा फूलमाली हुई पीछे से इन में कुछ छत्री भी परसरामजी के वक्त में जब कि वे अपने बाप के वेर में पृथ्वी को निछत्री करते थे मिल गये मुसलमानों के वक्त में और इस क़ोम की तरक्की हुई जब कि उन के डर से बहुत से राजपूत माली बनकर छूटे उसवक्त कदीम मालियों के वासते महुर माली का नाम निकला याने पहिले के जो माली थे वे महुर कहलाने लगे महुर के मायने पहिले के हैं

महुर माली जोधपुर में बहुत ही कम बल्कि गिन्ती के हैं जो कभी किसी वक्त में पूरब की तरफ़ से आये थे बाकी सब उन लोगों की औलाद हैं जो राजपूतों से माली हुऐ थे और इन की १२ जातें कछवाहा, पडिहार, सोलंखी, पँवार, गहलोत, सांखला, तंवर, चोहान, भाटी, राठोड़ देवड़ा, दहिय्या, हैं

माली इस से ज़ियादा हाल अपना नहीं जानते ज़ियादा के लिये अपने भाटों को बताते हैं जोधपुर में बृह्मभट्ट नानूराम इस क़ोम का हुशयार भाट है और उस के पास बहुत सा पुराना हाल मालियों का लिखा हुआ है मगर माली बेइल्मी से अपने लायक और नालायक भाटों की कुछ परख नहीं जानते

यह भट्ट उन को देवतों से मिलाता है और कहता है कि जब देवतों और दैत्यों के समंदर मथने से ज़हर पैदा हुआ था और उस के तेज से लोगों का दम घुटने लगा तो महादेवजी उस को पीगये लेकिन गले से नीचे नहीं उतारा इस सबब से उन का गला बहुत जलता था जिस की ठंडक के लिये उन्हों ने दोब भी बांधी और सांपको भी गले से लपेटा लेकिन किसी से कुछ आराम न हुआ तब कुवेरजी के बेटे स्वर्ण ने अपने बाप के कहने से कंवल के फूलों की माला बनाकर महादेवजी को पहिनाई उस से वह जलन जाती रही महादेवजी ने खुश होकर स्वर्ण से कहा

श्लोक

यन्मे कण्ठे त्वया वीर वनमाला निवेशिता

वदिष्यन्ति जनास्त्वां वै वनमाली ततः परम् १॥

प्राप्तं वरं चेदिह मत्सकाशात्सुरासुरास्तत्र महावरेति

विचुक्रुशुर्हर्षपरिप्लुतात्मनः प्रशस्य सर्वे प्रददुर्वरान् शुभान् २॥

अनेन छिन्नास्तरवः परां वृद्धिमवाप्स्यथ

स्वे स्वे काले प्रपुष्यन्तु समानानि फलानिच ३॥

अर्थ

हे वीर तूने मेरे कंठ में वनमाला पहिनाई है इस से लोक अब तुझ को वनमाली कहेंगे १ महादेवजी से स्वर्ण को वरदान मिला तब सब देवता और दैत्य बहुत प्रसन्न हुए और महावर (बड़ा वर) हुआ ऐसा पुकारने लगे और उन्होंने भी प्रशंसा कर के अच्छे वरदान दिये २ जो वृक्ष इस के हाथ से कटेंगे वे बहुत बढ़ेंगे अपने २ समय पर सब फूलेंगे और फलेंगे ३

माहुर

स्वर्ण की औलाद जिसका खिताब महावर हुआ था कुछ अरसे पीछे माहुर कहलाई मालियों की यह सब से पुरानी और असली कौम है

माहुर माली राजपूताने की पूरबी रयास्तों और उन से मिले हुए मुलकों में जियादा हैं और मारवाड़ में कम, शहर और कस्बे जोधपुर में जहां सब जगह से जियादा यानी ४००० घर मालियों के हैं सिर्फ १ घर माहुर माली का है जिसके मोरिसआला खीमा के बेटे खेता को संवत १२५५ के करीब मारवाड़ के माली राजपूत मथुरा से लाये थे कुछ माली खेता की औलाद से नागोर और सोजत मेंभी हैं

माहुर की खापें मुडेरवाल चूरीवाल दांतलया जमालपुरया दधेड़वा वगैरा जयपुर अलवर हांसी हिसार दिल्ली आगरा मथुरा और बृंदावन की तरफ़ है

मुरार माली

माहुर के खानदान में कईपीडी पीछे मुरार हुआ इसकी औलाद में कहार यानी भोई सगरवंसी माली पीतलया माली हैं जो सिर्फ पीतल काही गहणा पहिनते हैं

राजपूत माली

ये मारवाड़ में बहुत जियादा हैं इनके वडेरे शहाबुद्दीन कुतुबुद्दीन शमशुद्दीन गयासुद्दीन और अलावुद्दीन वगैरा दिल्ली के बादशाहों से लड़ाई हारकर जान बचाने के वास्ते रजपूत से माली हुए थे माली होना पृथ्वीराज चोहान का राज नष्ट होने के पीछे शुरु हुआ था यानी जब कि संवत १२४९ में पृथ्वीराज चोहान और उन की फोज के जंगी राजपूत शहाबुद्दीन गोरी से लड़-कर काम आगये और दिल्ली अजमेर का राज छूटगया तो उनके बेटे पोते जो तुर्कों के लशकर में पकड़े गये वे अपना धरम छोडने के सिवाय और किसीतरह अपना बचाव नदेखकर मुसल-मान होगये जो गोरीपठाण कहलाते हैं उसवक्त कुछ राजपूतों को वादशाह के १ माली ने माली वताकर अपनी सिफारिश से छुडादिया वाकी पकडे और भृष्ठ किये जाने के भय से हथ्यार वां-धना छोडकर इधर उधर भागते और दूसरी कौमों में छुपते रहे उस हालत में जिस को जिस २ कौम में पनाह मिली वह उसी कौम में रहकर उस का पेशा करने लगे ऐसे होते २ वहुत से राजपूत माली होगये नानूराम कहता है कि उन को कुतुबुद्दीन बादशाह ने जब कि वह अजमेर की तरफ आया था संवत १२५६ के करीव अजमेर और नागोर के जिलों में बसने और खेती करने का हुक्म दिया ये माली गोरी भी कहलाते हैं

इसतरह जब ये लोग परेशानी और जान जोखम से छूटकर शहरों और कसबों में आबाद होगये और उन को इसनई कौम की हालत और हैसयत में ३--४ बरस रहने के पीछे जो तज-रुवा हुआ उस से उन्होंने अपनी अगली पिछली हालत पर गोर कर के आयंदे के वास्ते १ मर-जाद वांधन की जरुरत देखी क्योंकि अब जिस कौम में उन को और उन की औलाद को उमर तेर करनी पडी थी उस के रीतारिवाज में कई ऐसी खराब बातें भी थीं कि जिन को उन की तबीअत जिस में रजपूती का खून मिलाहुआ था वरदाशत नहीं करसकती थी इस लिये पुशक-रजी में ये लोग जमाहुए और अजमेरा चोहान कुसमा के बेटे महादेव को सभापति बनाकर माहसुदि७ संवत १२५७ को अपनी विरादरी के वास्ते कुछ मरजादें वांधीं और उन के माफ़िक चलने के वास्ते लिखत लिखकर १ ब्रह्मभट्ट को सोंपादिया जिसे नानूराम अपना मोरिसआला वताता है

इस के ऊपर पंचों के नाम और यह इवारत है कि यह लिखत तमाम पंचों ने इकट्ठे होकर

श्रीपुष्करजी में करादिया है सो नीचे लिखी कल्मों के मूजिब इन लोगों को चलना होगा नीचे कल्मों की तफसीलदी है उनमें से खास २ ये हैं

१ पहिली मरजाद अजमेरा चोहानों की है कि पहिले छाक उन के आगे रखी जावे पहिले तिलक चांवल उन के लगे और गद्दी पर भी वही बैठें

२ खालक पट्टी (परगने नागोर) के सिवाय दूसरी पट्टी में सगपन नहीं करें

३ सगाई के ऊपर सगाई बिना कसूर नहोवे और जोकोई नामर्द निकल आवे कोढीदिकार होजावे साख (गोत) अडे या नालभृष्ठ होजावे तो सगाइ छोड दीजावे

४ सगाई की पहरावनी ४ उन में बडी पहरावनी में बोर कडयां हांसली घागरा ओढणा अंगरखी अपनी श्रद्धा मूजिब चढावें बाकी ३ पहरावणी में एक एक घागरा ओढनी और अंगरखी

५ ब्याह की रीत के ३२) दिये जावें सगाई में १०) और २२) ब्याह में, जो इतने देने की श्रद्धा नहोवे तो ८) पहिरावणी में देदेवें बेटी का बाप पहिले मांगे तो नहींदें

६ जान बींदनी का बाप कहे उतनी लेजावें और बींदनी का बाप जान को ३ दिन से जियादा नरखे

७ कोई नाता करे तो १६) बेवा के बाप को देवे भाभी से नाता नकरें

८ बेवा लंबी कांचली और कपडे पक्के रंग के पहिने फेटया और हाथपांव में कड़े और कडयां नहीं पहिने

९ बेवा नाते जावे जिस की फारखती के रुपे सासरे वाले नहीं लेवें

१० मालन कलियों का घाघरा नहीं पहिने गाघरे में फेरवाज (संजाब) नहीं लगावे नथ और बजने वाले बिछये नहीं पहिने

११ जिस के औलाद नहो वह नजदीकी लागती वालों में से किसी को अपने खोले लेले और आल यानी दोईते कोभी

१२ खोला लेनेवाला नारयल और गुड़ बांटे और भाइपे को जिमावे

१३ हलदी लहसण और तमाखू नहीं बोवें

१४ भेंसे को नहीं लादें और बेल को बादी नहीं करें

१५ मांस दारू खावें पीवें नहीं जीव हिंसा करें नहीं

१६ भोइ का काम नहीं करें डोली न उठावें और मच्छी न पकड़े

१७ झूठा बरतन किसी का नहीं मांझें न किसी की धोती धोवें और न कोई नीचा काम करें

१८ मालण पीढी के ऊपर बैठकर (सौदा) न वेचे और ५ जात यानी नाई धोबी थांभी भंगी और ढाढी का कीणा नहीं लेवें

१९ लुगाई के ऊपर विना कसूर लुगाई न लावें और जो औलाद नहो तो अगली लुगाई की मरजी से लावें

२० विनाकसूर लुगाई को नहीं छोडें

२१ मुरदे के १२ दिन पीछे लापसी का जीमण करें मणभर बाट में मणभर गुड़ और १० सेर घी डालें शीरा पंचों की रजामंदी से करें

२२ कोई मालन नातभृष्ट होजावे सो उस को न्यात वाहर करदें फिर उसे कोई न्यात में नलेवे

आगे भाटों को सगाई ब्याह और मोसर में देने की कलमें हैं अखीर पर यह लिखा है कि "सारा जणा सोगनखाय, रजपूतकुलछोड मालीकुल होयने कही कि बादशाह शहाबुद्दीन गोरी म्हाने माली कीना सो हमे इण लिखतरे ऊपर लिखीहुई मरजादांरे म्हारो कुलचालसी ने जो कोई म्हारे जाया जामता इन मरजादने अलोपसी तो चोमोतर (७४) गायांमारयाँरो पाप लागसी न श्रीठाकुरजीसूं गंगाजीसूं वेमुखहोसी इणलिखतमूजबचालसी संवत् १२५७माहसुद ७ „ ●

कवत

राजापृथ्वीराज गोरी शाह वादशाह । समसत मलयात मिल बांधी मरजाद ॥ कुसमारो महादेव अजमेरो चहूआन मुकदम । इतरी रकम वरताई आद १ पृथम बील व्यास व्राम्हण रा वेटा । राजो रतनो थरप्या राव ॥ कनकजनेऊ दीनी परी । पोथीदे पूजिया पाव २ ख्वाल कपटी आदिकर सगपन । और पटीसूं कीनोऐव ॥ भाभीपलेलगावे नहीं भोले।इतरोपंचां कियो कतेव ३ मद्य मांसरी फिरीमनाई फूलमाली कियो फेर। सांची कहूं कानदे सुणजो । इतरो लिखत

● (नोट) ऐसाही फिर १ लिखत जोधपुर के मालियों ने संवत् १९४७ में कियाहै

हुओ अजमेर ४ भाट धनी दोनों मिल भेला हाथजोड थरप्या जगदीस । साढी चवदेहजार गोत मलयातने मटराजेरतने दी अमर असीस ५

इस पंचातय में गांव १ के माली बुलाये गये थे महादेव के पास वाप दादों की दौलत वहुत थी जिससे उसनेसवकी मानमनवारकी और उनमें जो जो राजकुलीनिकले उनको अपनेशामिल लिखत लिखने में लेलिया ३ राजकुली माली परमारया पडियारया और सोलंखी जातिके लिखत लिखे पीछे जालोरसे आकर शामिलहुयेथे सो इसपहिचानके वास्ते उनकीऔरतोंका नाकछिदाना बदस्तूर वहाल रक्खा फिर यह राजपूत माली दूसरे मालियों को रुखसत करके नागोर में आकर वसे सिर्फ महादेव अजमेर में रहा उसकी औलाद वहां चौधरीहै

खेता माहुर जिसको इन्हों ने मथुरासे बुलाकर मुरव्बी वनाया था और जिसके दस्तखत लिखत में महादेव के पीछे हैं इनमें मिलगया और महादेव ने वादशाहसे अर्ज करके पुष्करजी के पास उसको जमीन दिलवादी फिर वहां से उसकी औलाद मारवाड में आई

राजकुलीमाली खेताकी औलाद के माहुरमालियों को वडा समझते हैं और उसके सिवाय और किसी माहुरमाली में सगपन नहीं करते

खांपें

माहुरमाली की

माहुर मालियों की २४ खांपें हैं जिनमें से इतनी के नाम मालूम हुए

१ मथुरया जो मारवाडमें हैं ये अपनेको सुदामा वंशी वताते हैं और कहते हैं कि सुदामा कंसका माळी था जव श्रीकृष्णभगवान मथुरा में कंसको मारने के वास्ते पधारे थे तो सुदामा ने आपको फूलों के हार पहिनायेथे और उसकी वहन कुवजा ने चंदन घिसकर लगाया था वह कुवडी थी भगवान ने लात मारकर उसकी कूवे निकालदी फिर जव कंसको मारकर आये तो कुब्जाकेघर ठहरे थे खेताखीमाका वेटा इसी खानदानसे था उसको रजपूतमालियों ने मथुरा से पुष्करजी में बुलाकर अपने शामिल रक्खाथा

२ अरडिया } जयपुर में
३ छरडिता }

४ मोराणा

५ अमेरया

६ विसनोलिया—नारनोल में

७ अदोपिया—मालवे में

८ धनोरीया } अजमे में
९ तुरंगणया

मुरारमाली की

इसथोक में विशेष करके वे माली हैं कि जिनके बाप दादे परसरामजी के डरसे माली हुए थे इनकी इतनी खांपों के नाम सुनने में आये

१ फूलेरया २ काछी ३ सगरवंशी ४ गुजराती ५ वहरा (महरा) ६ ढीमरया ७ रेवा या कीर जो नादियों के किनारों पर खेती वाडी करते हैं

राजकुली या गोरी माली

नम्बर	खांप	नख	नाम मोरिसआला जो राजपूत से माली हुआ	नाम उसके बाप का
१	चोहान	अजमेरा	कुसमा	रावत भालणसी
२	"	निरवाण	हरपाल	अणग्या रावल
३	"	सींघोदिया	बीलो	दूदा
४	"	जंबूदिया	हालू	हरपाल
५	"	सोनिगरा	कोड़ो	हरदेव राव
६	"	वागड़िया	देहड़	लाखण
७	"	इंदोरा	सेढु	राजुक राव
८	"	गढवाल	वुड़लो	उरण
९	"	पीलकानिया	देवसी	करमसी
१०	"	खंडोलिया	गुलियो	रावत वेहड
११	"	भवीवाला	मोल्हो	कनहड़दे

नम्बर	खांप	नख	नाम मोरिसआला जो राजपूत से माली हुआ	नाम उसके बाप का
१२	चोहान	मकड़ाणां	कवल	ब्रह्मादी राजा
१३	"	कसूंभीवाला	हरु	रावत वाला
१४	"	बूभणा	नरु	वाला रावत
१५	"	सतगावल	जालप	जालाराव
१६	"	सैंवरिया	कोडू	धाराराव
१७	"	जमालपुरिया	छीतर	ऊदाराव
१८	"	भराड़िया	सिधण	नरपतराव
१९	"	सांचोरा	भिया	करमसी
२०	"	वांवलेचा	मोहन	कालूराव
२१	"	जेवरिया	पालो	नानगराव
२२	"	जोजावरिया	पुहराज	लाडम रावत
२३	"	खोखरिया	पांचो	करमा
२४	"	वीरपूरा	ऊदो	कालु
२५	"	पाथरिया	स्याराज	मालसी
२६	"	मंडोवरा	गोदो	रेडा
२७	"	अलूंध्या	उदेसी	आलणसीराव
२८	"	सुपरचा	बुरसी	रावतकौशल
२९	"	किरोडवाल	तोड़ो	मेहा
३०	"	किरभी	कुसलो	तोडा
३१	"	वडखेड़ा	नैणो	सीया
३२	"	मनवास्या	नरसिंघ	उरजन
३३	"	देवड़ा	देवसी	रावतगुणपाळ
३४	टाक	जुजाला दगधी	पूनो +	रावतमाणक
३५	"	मारोठिया	जैसिंघ +	रावतखोखा
३६	"	वणोठिया	भीखन +	रावतसहदेव

नम्बर	खांप	नख	नाम मोरिसआला जो राजपूत से माली हुआ	नाम उसके बाप का
३७	टाक	पालडिया	पूना	धारसी
३८	"	नरवरा	वीछो	रावत गुणपाल
३९	"	बोडाणां	हरदास	रावलाला
४०	"	कालु	नरु	रावतवाला
४१	राठोड़	कनवजिया	वालो ×	पाऊा
४२	गहलोत	कुचेरा	ईसर ×	आल्हाराव
४३	"	पीपाड़ा	जालणसी	रावत जैसिंघदे
४४	कछवाहा	कछवाहा	धांधू	रेवा रावत
४५	भाटी	सीधड़ासिंधमुल्तानके	वरहु	वरहपाल
४६	"	जेसलमेरा	कंवरसी	रावत पदमसी
४७	"	अराईया	कंवलसी	रावत वच्छ
४८	"	सवालख्या	नगराज	राणा वड़सी
४९	"	जादम	बाहड़ा ×	राजादेदड़
५०	सोलंखी	लुदरेचा	सधरी ×	सोभन
५१	"	लासेचां	तिहुणो	रावत सिथल
५२	पड़ियार	जेसलमेरा	वांडो	सोभन
५३	"	मंडोवरा	खींवसी ×	भादर रावत
५४	तुंवर	हाडी	कंवलसी	खेमसी
५५	"	खंडेलवाल	चाचो	राजा अंवरीख
५६	"	तूंवराल	सोढो +	रावत धीरा
५७	"	कनवसिया	कान्हो	सोहड
५८	पँवार	धोकरिया	उल्हो	राणामलिया
५९	"	रुणेचा	कमलसी ×	रावत काजला
६०	दईया	दईया	कुसलो	भगवान

⊛ जिसके नाम के ऊपर × ऐसा चिन्ह है उसके या उसके वेटे पोते के दस्तषत सं- १२५७ के लिखत पर हैं

जोधपुर में गहलोत माली ज़ियादा हैं ये अपनी पीढ़ियां कूचेरे के गहलोत राव ईसरदास से मिलाते हैं जो तुर्कों के डरसे मुसलमान होगया था उसकी औलाद में से हेमा माली जो वालेसर के ईंदों का परधान था राव चूंडाजीको मंडोर का राज दिलाने की कोशिश में शामिल था उसको रावजी ने मंडोर में अमल होजाने पर अपने इक़रार के माफ़िक़ जो पोस वदि १० संवत् १४४९ को थाने सालोडीमें किया गयाथा मंडोरके पास वहुतसी जमीन माफी दी थी जिसके ऊपर राव रिडमलजी के पीछे जब कि राणा कूंभाजी का मंडोर में कवजा होगयाथा उनके हाकिम अहडा हिंगोला ने कई लागें लगादीं

हेमाकी औलाद में चुतरा माली महाराज श्रीजसवंतसिंघजी के साथ कावुल गयाथा १ दिन महाराजने कावुल के अनारों के वहुत वखान किये चुतरा हाजिर था उसने अरजकी कि ऐसे जोधपुर में भी पैदा होसक्ते हैं महाराज ने उसे मंजूरी देकर १००० ऊंट कावुलकी मिट्टीसे भरे हुए जोधपुर भेजे चुतरा ने उस मिट्टीसे कागे में वाग लगाकर कावुली अनार नीवू और वेरपैदा किये और महाराजके हजूर में लेगया महाराज ने अनार पसंद करके वादशाह के नजर किये वादशा के चखने वालों ने चखकर कहा कि मज़ा तो कावुली अनार कासा है लेकिन मुर्दे की वास आती है महाराज ने यह वात कवूलकरली क्योंकि कागे में मुरदे जलाये जाते हैं

चुतरा संवत् १७३० में महाराज के पास जमरोद में मरा महाराज ने उसकी यादगारीमें जमरोदसे लेकर मंडोर तक जहां उसका घरथा वारह वारह कोस पर पक्के चवूतरे वनवाये और फरमाया कि आयंदा जो वाग़ वने उसमें चुतराके नाम का भी १ चवूतरा वनावें यह वात अवतक जारी सुनी है

महाराज अभयसिंघजी के जमाने में अक्खा माली ने गुजरातसे केतकी चम्पा और रायण या- नी खिरनी के दरखत लाकर मंडोर में लगाये और वह वहां से १ लंगूर भी लेआया था मंडोर के लंगूर उसकी नसल से समझे जाते हैं

अक्खा से महाराज श्री अभयसिंघजी वरखिलाफ़ अपने वुजुर्गों के कि जो निहायतही कम छोटे अदामियोंसे बोला करतेथे वहुतसी वातें किया करतेथे क्योंकि उनको वाग़ातका वहुत शौक था इस सववसे अक्खा को वहुत घमंड होगयाथा और वह मुशकिल से दूसरे आदमियों के साथ वात चीत किया करता था अखीर में औरत मरजाने से उसको जनून होगया और उस

हालत में वह वार वार यही कहता था"हूं ने महाराज ने अभो पंचोली,,यानी मैं और महार और अभा पंचोली, अभापंचोली महाराज का मरज़ीदान था और अकसर हजूर में हाज़िर र करता था इसलिये अवखा अपने खयाल में महाराज और अभा पंचोली के सिवाय अं किसीको इसलायक नहीं समझता था कि उससे वात करे

कुछ गहलोत माली मंडोर में तनापीर की कवर के मुजावर हैं वे मुसलमान हैं मुरदे वारहवां भी करते हैं और चालीसवां भी, वारहवें में तो मालियों को जिमाते हैं और च लीसवें में फकीर वगैरह मुसलमानों को, कहते हैं कि इनका मोरिसआला पीर की क पर फूल चढ़ाया करता था और चढ़ावा भी लेता था महाराजा उदयसिंघजी और सूरसिंघजी ज़माने में जबकि अकवर वादशाह के अजमेर में आने जाने से पीरोंकी मानता जियादा और चढ़ावाभी वहुतसा आने लगा तो कुछ मुजावर अजमेरसे आकर तनापीरकी कवर का दा करनेलगे वहमाली मुसलमानहोगयापर उनकोदखल न दिया मुसलमानहोजानेसे उसके भाईवं ने उसके हिस्से की जमीन जवत करनी चाही मगर उसने उनको भी यह इक़रार करके रा करलिया कि मैं न्यात वहन स्वासनी और भाटों को वदस्तूर मानता और औसर मोसर जिमाता रहूंगा

१ गहलोत माली वीकाजी के साथ मंडोर से काले गोरे भैरवजी की मूरत लेकर गया उसकी औलाद वीकानेर में है उनमें से १ शख्सको जो महाराजा डूंगरसिंघजी का धाभ था सोना भी मिला है

वाक़ी खांपों के मालियों का हाल ख़ास तौरपर लिखने के लायक़ नहीं मालूम हुआ हां वात अलवत्ता मंडोर के मालियों की मारवाड की खियात में काविलतारीफ़ है कि जव शेरश वादशाहने जोधपुर फतह करलिया था और राव मालदेवजी छप्पन के पहाड़ों में चलेगये थे २ वरस पीछे मंडोर के मालियों ने वादशाह के मरने की ख़वर सुनकर पठानों का थाना उ दिया और रावजी को खवर दी सो उन्हों ने फौरन पहुंच कर जोधपुर में अमल कर लिया

—(o)—

रीत रसम

—(o)—

सगपन अपनी खांप टालकर करते हैं सगाई की रीत के ७) कहीं ९) कहीं १२) कहीं १ कहीं ३०) और कहीं ४०) लगते हैं और सगाई गुड खोपरे से होती है और अफीम भी वा

जाती है व्याह में वींद का बाप ३२) वींदनी के बाप को डाईजे के और २०) के करीब फुटकर खरच के देता है बरात २ दिन रहती है उस को वींदनी का बाप ४ टंक लापसी खांड रोटी और खीच वगैरा जिमाता है और उसका आधा खरच वींद के बाप से लेता है

औलाद होने पर ५ सेर या इस से कम ज़ियादा गुड बांटते हैं बेटा होतो आम रिवाज मुल्क के माफिक थाली और बेटी होतो छाजला बजाते हैं नहावन १० दिन का होता है और जो मूल जेष्ठा अश्लेषा और मघा नक्षत्र में बच्चा पैदा होतो उस का नहावन ब्राह्मण से महूर्त दिखा कर करते हैं

मुरदे को पौने नवहाथ या १२ हाथ कपडे में लपेट कर मसानों में लेजाते हैं और आम दस्तूर के माफिक सिर उत्तर की तरफ़ कर के जलाते हैं बारहवें दिन घडोटिया करते हैं यानी १२ घडे पानी से भरकर बहन सासनी को देते है और मक़दूर होतो बिरादरी को भी जिमाते हैं जियदा आसूदा माली हजार दोहजार रुपया लगाकर भी औसर करते हैं

बेवा का नाता होता है लेकिन खाविंद के ख़ानदान में नहीं नाता करने वाला चूड़ा लाता है वह सनीचर की रात उस बेवा के पीहर में बेवा को पहिना कर उस के साथ करदेते हैं फिर वे दोनों मर्द औरत दीवार या बाड कूदकर या मकान के पीछे बारी खोद कर उसमें से जाते हैं दरवाजे में होकर नहीं जाने पाते उसवक्त सब घर के लोग अलग होजाते हैं और फिर उन के पीछे रस्ते में ठीकरा भरकर राख डाल देते हैं

नाते की रीत के मुक़र्रर तो १६) हैं मगर बाज़ी खांपों में ५२) और ५५) भी लगते हैं जिसमें से १०) सासरे वाले २) न्यात के पंच और बाक़ी पीहर वाले लेते हैं और जो कोई राज या जागीरदार का परवाना करावे तो १।) या २॥) उसके दस्तूर के अलग देने पड़ते हैं

व्याह के माफ़िक नाते में भी नाना और दादा का गोत टालते हैं और फिर ३ पीढी तक उस खांप में व्याह या नाता नहीं होता

खोले सगा या चाचेरा भाई आता है जो ये दोनों नहों या नहीं आसकतेहों तो दूरका भाई भी आजाता हैं मगर उस के लिखत में साख घलाई के रुपै उन लोगों को देने पडते हैं खोला पगडी बंधा देने और बिरादरी में गुड बांटने से पक्का होजाता है

पेशा मालियों का कदीम तो बागवानी और खेती खरनेका है मगर अब खान खोदने पत्थर

घड़ने चेजा चुने रंग करने तसवीर बनाने का काम भी करते हैं और नौकरी मजदूरी भी, मंडोर में अगले राजों के देवलों और थडों के पुजारी भी यही लोग हैं

माली जियादातर महादेवजी को पूजते हैं दारू मांस खाने पीनेका तो रिवाज नहीं है मगर बाजे आदमी खाते पीते हैं तो ऊन को न्यात बाहर भी नहीं करते

माली हथयार नहीं बांधते औरत मरद गाढा कपड़ा ज़ियादा पहनते हैं सिवाय जालोरी मालियों के और खांपों में औरतों की नाक बहुत कम छिदती है हाडियों की औरतें हाथी दान्त का चूडा नहीं पहिन्तीं

आमराय में जैसे गूजर और जाट बेवफ़ा समझे जाते हैं वैसे माली भोणमती कहलाते हैं कि जैसे भोण कि जिस के ऊपर चड़स की लाव चलती है सीधा भी फिर जाता है और उलटा भी, इसी तरह माली की भी मत है एक ओखाणा यह भी है कि माली और भूत की मत उलटी होती है कि समझाने से और जियादा ज़िद पकड़ते हैं

मालनें यातो फूलफल या साग बेचती हैं या महनत मजदूरी करती हैं ये दूसरी काशतकार कौम की औरतों से हुशयार होती हैं और शायद इसी सबब से संस्कृत ओखनों में इन को धूर्त बताया है

नराणां नापितो धूर्तें स्त्रियांणांम वनमालिका

यानी मर्दों में नाई धूर्त होता है औरतों मे मालन

माली भी बाजी दूसरी खेती करने वाली कौमों के माफिक जब गांव के हवालदार या ठाकुर से नाराज होते हैं तो गाधोतरा (पत्थर पर १ गधे की सूरत) रोपकर उस गांव को छोड जाते हैं और फिर वहां की सरहद में भी खड़े होकर पानी नहीं पीते और न उस गाधेतरे को उखाडते हैं जबतक कि जागीरदार या हाकिम उन को न मनालेवे

बिसनोई

यह कौम जाटों में से निकली है और जांभजी को मानती है जिसने सम्वत् १५४२ के काल में बहुत से जाटों को अपने पास से खाना देकर बीस नव यानी २९ बातें अपने धरम पंथ की सिखाई जिससे उनका नाम बिसनोई होगया

जांभाजी पवांररजपूत थे इनका जनम भादों बदि ८ सोमवार संवत् १५०८ को गांव पीपासर में हुआ था इनके बाप का नाम लोट था बिसनोई कहते हैं कि जांभाजी लोट को घरके बाहर पडे मिलेथे उसने उनको पाला वे गूंगे थे जब बडे हुऐ तो लोट की मवेशी चराया करते थे एक दिन